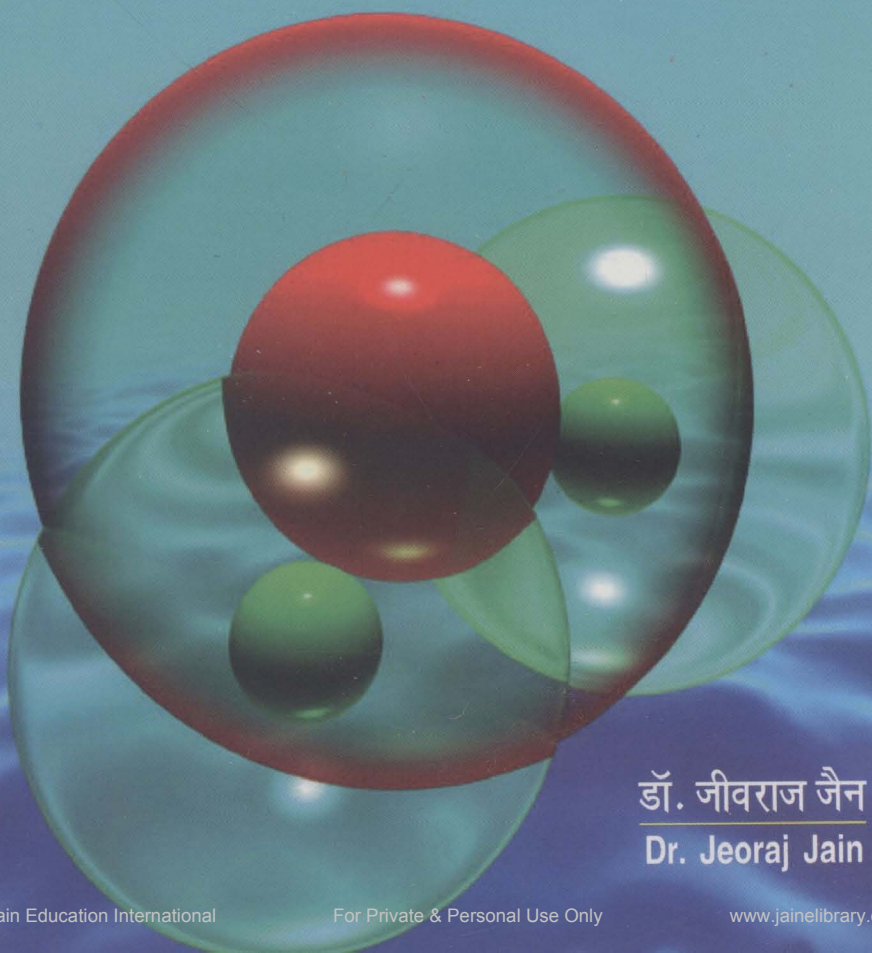


धोवन पानी का विज्ञान

SCIENCE OF DHOVANA WATER



डॉ. जीवराज जैन
Dr. Jeoraj Jain

About the Book

The investigations done on WATER by the author have revealed that:-

1. Water exhibits special molecular structure and symmetry. It is affected by free oxygen radicals, temperature and ambient humidity. It can exist as living-being. A novel Theory of single-sensed Life, having net-like nano cell-structure, has been propounded
2. Living-water can carry and transfer its acquired properties and memory. The indirect proof of life has been derived from homoeopathy and is confirmed and revalidated through direct Aura photography. Interesting results were obtained on Dhovana water and its shelf-life.
3. Further work on this new life science would provide important tools in the hands of mankind to manipulate and control effects of free radicals, non-livingness etc on environment, metabolism, tissues, mind and emotions or leshyas.

धोवन पानी का विज्ञान

SCIENCE OF DHOVANA WATER

डॉ. जीवराज जैन

Dr. Jeoraj Jain



प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

Published by :

Samyaggyan Pracharak Mandal

पुस्तक : धोवन पानी का विज्ञान
Science of Dhovana Water

अन्य प्राप्ति स्थल :

लेखक : डॉ. जीवराज जैन
Writer : Dr. Jeoraj Jain

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)
☎ (0291) 2624891

प्रकाशक : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182 के ऊपर,
बापू बाजार, जयपुर - 302003 (राज.)
फ़ोन : 0141-2575997, 2571163
फ़ैक्स : 0141-2570753

Shri Navratnaji Bhansali
C/o. Mahesh Electricals
14/5, B.V.K. Ayangar Road
BENGALURU-560053
Ph. : (080) 22265957
Mobile : 09844158943

संस्करण : प्रथम 2012

प्रतियाँ : 1100

Shri B. Budhmalji Bohra
C/o. Bohra Syndicate
53, Erullappan Street
Sowcarpet, CHENNAI-79
(Tamilnadu)
☎ (044) 26425093, (M) 09444235065

मूल्य : 50/-

आवरण : अनिल कुमार जैन

श्रीमती विजयाजी मल्हारा

रतन सागर बिल्डिंग
क्लेक्टर बंगला रोड
चर्च के सामने, जलगाँव - 425001
(महाराष्ट्र) ☎ (0257) 2223223

मुद्रक :

इण्डियन मैप सर्विस
जोधपुर

श्री दिनेश जी जैन
1296, कटरा धुलिया, चाँदनी चौक
दिल्ली-110006
☎ (011) 23919370 (M) 09953723403

प्रकाशकीय

धरती का दो तिहाई हिस्सा जल से आप्लावित होने के बावजूद संसार जल—संकट के भयावह दौर से गुजर रहा है। वस्तुतः अभाव जल का नहीं, पेय जल अथवा शुद्ध जल का है। लगभग दो हजार छह सौ वर्ष पूर्व तीर्थंकर महावीर ने जल—संयम की देशना प्रदान की थी। जैन आगम ग्रंथों में पानी का **सञ्चित** होना बताया गया है और एक सद्गृहस्थ को पानी के विवेक सम्मत उपयोग का सुझाव दिया गया है। पानी नैसर्गिक रूप से प्राप्त होने वाला एक सस्ता किन्तु अत्यन्त मूल्यवान् संसाधन है। अब यह निरन्तर दुर्लभ होता जा रहा है। कहते हैं इस देश में कभी घी—दूध की नदियाँ बहती थीं अर्थात् यहाँ विपुल परिमाण में दूध, दही, छाछ, घी आदि की उपलब्धता रहती थी। छाछ तो बिल्कुल मुफ्त में सहज ही मिल जाती थी। परन्तु अब हालात यह है कि पानी की नदियाँ भी सूखी पड़ी हैं और दूध के भाव पानी बिक रहा है। सिर्फ पानी का करोड़ों का व्यापार खड़ा हो गया है। प्रकृति के अंधाधुंध दोहन और अपव्ययकारी जीवन शैली के दुष्परिणाम स्वरूप साधारण आदमी को शुद्ध पानी भी नसीब नहीं हो पा रहा है।

ऐसे विकट समय में त्याग-तप और संयम से अनुप्राणित जैन जीवन शैली एक समाधान देती है। एक जैन श्रमण का जीवन तो त्याग और संयम की पराकाष्ठा होता ही है तथा जैन गृहस्थ का जीवन भी आज के युग में संयममय जीवन जीने की कला सिखाता है। इस संयमित जीवन शैली में जल-संयम भी एक मुख्य आयाम है। स्नान-त्याग और धोवन/अचित्त व छने जल के उपयोग के पीछे जहाँ एक ओर अहिंसा और अध्यात्म की साधना है, वहीं इसमें

जल-रक्षण का मंगल सन्देश भी समाया हुआ है। जल-रक्षण के विषय में आचार्य श्री हस्ती ने कहा था—“सोना-चाँदी और वस्त्राभूषण के बिना आदमी रह सकता है। पर जल के बिना एक दिन भी नहीं रह सकता। अतः सदगृहस्थ को यह ध्यान रखना चाहिये कि पानी की एक बून्द भी व्यर्थ नहीं जाए।” आप्तवचनों एवं गुरुजनों की ऐसी हितकारी शिक्षाओं को एक जैन गृहस्थ अपने जीवन में अपनी भावना और सामर्थ्य के अनुसार पालन करता है। गृहस्थ जीवन में शील-व्रत के पालन में भी जल-रक्षण का परोक्ष सन्देश छिपा हुआ है। इसी प्रकार अन्य व्रतों के पालन में भी संसाधनों के न्यूनतम और विवेकसम्मत उपयोग की प्रेरणाएँ विद्यमान हैं।

आज भी भोग/उपभोगवादी जीवन शैली में पानी की फिजूलखर्ची अत्यधिक बढ़ गई है। यह तथ्य बहुत कम लोग जानते हैं कि मांसाहार जल-दुष्काल का एक बड़ा कारण है। डॉ. दिलीप धींग ने अपने शोध प्रबंध 'जैन आगमों का अर्थशास्त्रीय मूल्यांकन' में लिखा है— "एक पौण्ड (0.453592 किलोग्राम) मांस के उत्पादन में औसतम 2500 गैलन (एक गैलन = 3.788 लीटर) पानी लगता है। इतने जल से एक पूरे परिवार का महिने भर का काम चल जाता है। जबकि एक पौण्ड गेहूँ के उत्पादन में सिर्फ 25 गैलन पानी लगता है। अमेरिका में एक मांसाहारी के दिनभर आहार-उत्पादन में 4000 गैलन से अधिक जल लगता है। जबकि एक शुद्ध शाकाहारी के आहार पर सिर्फ 300 गैलन जल खर्च होता है। यह हैरानी की बात है कि जितने जल से एक शाकाहारी पूरे वर्ष काम चला लेता है, मांसाहारी उस जल का उपयोग केवल एक महिने में ही कर लेता है।

डॉ. धींग आगे लिखते हैं— “कृषि और मांस—उत्पादन में लगने वाले जल की तुलना भी चौंकाने वाली है। एक पौण्ड गेहूँ के उत्पादन में जितना जल लगता है, उससे 100 गुना अधिक जल एक पौण्ड मांस के उत्पादन में लगता है। मांस के उत्पादन में जितना पानी लगता है, धान्य (चावल) के उत्पादन में उसका 10वाँ भाग ही लगता है। पानी हर प्रकार से शाकाहार में मांसाहार की तुलना में कई गुना कम लगता है। कत्लखाने में भी

अनाप-शनाप जल-बर्बादी के अड़्डे हैं। देश में अधिकतम कत्लखानों की संख्या लगभग 4000 हैं और अनधिकृत करीब दो लाख। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित वार्षिक सन्दर्भ पुस्तक 'भारत-1995' में 'कार्टमेन के अध्यक्ष प्रो. एन.एस. रामास्वामी के अनुसार मुम्बई स्थित देवनार कत्लखाना प्रतिवर्ष 44,58,000 करोड़ लीटर पेयजल का उपयोग करता है। इससे कत्लखानों में होने वाली जल-खपत का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। कत्लखानों को बन्द, कम या नियन्त्रित करके धरती पर अपरिमित पेयजल की बचत की जा सकती है।"

आज जब झील-जलाशय, नदी-नाले, ताल-तलैया सूख रहे हैं और प्रदूषित हो रहे हैं, भूमिगत जलस्तर भी नीचे से नीचे खिसकता जा रहा है, वर्षा अनिश्चित और अपर्याप्त हो रही है, जल के बचे-खुचे प्राकृतिक स्रोतों पर भी व्यापारियों की नजर लग गई है, ऐसे में जल की महिमा को जानने-समझने वाली संयमित व शाकाहारी भारतीय जीवन शैली को किसी भी रूप में बढ़ावा देना समय की मांग है और आवश्यकता भी।

वैज्ञानिक अभियन्ता और प्रबुद्ध श्रावक डॉ. जीवराज जैन ने इस आवश्यकता की दिशा में अनोखे ढंग से पुरुषार्थ किया है। यह पुस्तक उनकी वैज्ञानिक और आगमिक जानकारी के अनूठे संगम का सुफल है। आगम साहित्य और आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने पानी जैसी सामान्य-सी प्रतीत होने वाली अनमोल चीज पर अनेक दृष्टियों से अन्वितान किया है।

जैन श्रमण जीवन में नियमतः अचित्त जल का ही प्रयोग किया जाता है और गृहस्थ जीवन में भी विशिष्ट साधना करने वाले श्रावक—श्राविकाएँ अचित्त जल का प्रयोग करते हैं। धोवन पानी अचित्त जल का ही एक प्रकार है। जैन समाज में बोलचाल में इस शब्द का व्यापक प्रयोग किया जाता है लेकिन धोवन पानी पर संभवतः पहली बार ऐसी तथ्यपरक पुस्तक सामने आई है। इस पुस्तक में धोवन पानी के साथ—साथ पानी का जो वैज्ञानिक, जीव—वैज्ञानिक, रासायनिक और भौतिक विश्लेषण और विवेचन किया गया है, वह अपने आप में अद्वितीय है। जैन दर्शन में वर्णित पाँच स्थावर काय में से अभी तक

विज्ञान—जगत ने केवल वनस्पति को ही सजीव माना गया है। इस पुस्तक में लेखक ने ऐसे अनेक तथ्य व संकेत दिये हैं, जिनके आधार पर पानी की सजीवता पर वैज्ञानिक चर्चा को आगे बढ़ाया जा सके।

यह पुस्तक, द्विभाषिक है। कुछ सामग्री सिर्फ हिन्दी अथवा अंग्रेजी में ही है। लेकिन अधिकांश सामग्री दोनों भाषाओं में है, जिससे वर्तमान के दोनों भाषाओं के पाठक लाभान्वित हो सके। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल आरम्भ से ही सन्तों, विद्वानों, मनीषियों, कवियों और साहित्यकारों के मौलिक विचारों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करके अल्पमूल्य में जन-जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। लेखकों को पाठकों से जोड़ने के हमारे सतत व समर्पित प्रयासों की सर्वत्र प्रशंसा हुई है। हमारा विश्वास है कि पानी पर प्रकाशित डॉ. जीवराज जैन की यह पुस्तक जल के अपव्यय को रोकने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हम डॉ. जैन के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

पी. शिखरमल सुराणा
अध्यक्ष

सम्यतराज चौधरी
कार्याध्यक्ष

विस्दराज सुराणा
मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल



अनुक्रमणिका

क्रमांक शीर्षक

पृष्ठांक

1	Introduction	x
2.	जल पर शोध का प्रयोजन और स्थिति.....	xi
3.	The Purpose of Research on Water	xvi
4.	Research Project & Resume.....	xviii

हिन्दी खण्ड : (H)

(H-1)	पानी बचाओ, भाग्य जगाओ	xvii
(H-2)	अभियान “जल है तो कल है”	xix
(H-3)	अचित्त जल का स्थानक	xx
(H-4)	धोवन पानी : कुछ नारे	xxi
(H-5)	जैन जीव विज्ञान में जलकायिक जीव	1
(H-6)	धोवन (अचित्त पानी) बनाने की मान्य विधि	11
(H-7)	धोवन के लिए अनुपयुक्त पदार्थों का विस्तार से विश्लेषण	13
(H-8)	धोवन और अकर्मक अवस्था	17
(H-9)	“सचित्त - अचित्त पानी के विभिन्न वैज्ञानिक पहलू” (प्रश्नोत्तर).....	20
(H-10)	जैन दर्शन व आधुनिक विज्ञान की दृष्टि में जल	46
(H-11)	“जल भी जीव होता है”- वैज्ञानिक अवधारणा में क्रांति	63
(H-12)	जल की गुणवत्ता और उसकी आवश्यकता का प्रबंधन	68
(H-13)	“जल के सदुपयोग का व्यावहारिक दर्शन”	75

अंग्रेजी खण्ड : (E)

(E-1)	Living Water Cells and Working Principle of Homeopathy	80
(E-2)	Definitions	92
(E-3)	Non-living Water and its Comparison with Living Water.....	94
(E-4)	'Differentiating Living and Non-living Water.....	108
(E-5)	Independent Validation of Theory of Living-Water	124
(E-6)	Standard Practice of Making non-living Water	127
(E-7)	Discussion on the Unsuitable materials for Making Dhovana	130
(E-8)	Science of Dhovana Water	135
(E-9)	Dynamisation of Water	162
(E-10)	Dymanised Water	175
(E-11)	Water in Jaina Philosophy and Modern Science	185
(E-12)	Water is Life, Use it Judicially	198
(E-13)	Statistical Data about Water	215
(E-14)	Properties of Water (Physical, Chemical & Subtle)	226

INTRODUCTION

This book contains some of the articles written by the author from time to time on various sub-titles relating to non-living and living-water. Some of them appeared serially on a particular theme. These articles are not like chapters of a book, but are largely independent of each other. The sequence or order has been selected to establish only a virtual connection with each other, e.g. the theme of Research can be arranged at some other place, without seriously affecting the continuity of the other sub-themes. However, it was thought prudent to place the articles pertaining to livingness of water, as understood by Jains and modern science, in the first place. Subsequent Research articles have been grouped together and placed at one place.

The research work has been presented in English language, in order to get International Community interested in the subject for taking up advance research projects. Other articles, pertaining to traditional Jain-Science of water, have been presented both in Hindi as well as in English Language. The idea is to enhance the understanding of normal laity, who is not well versed in technical/scientific words. It is expected that both the communities, residing in South as well as in North India, would not find the language as barrier to understand various aspects of Water. It should also help them clear their doubts, if any, on **practical** aspects of **non-living** water (**boiled or dhovana**) and its usage in the routine life. This should enable them to reinforce their trust in Jain-Science.

The objective of the book would be fulfilled,

- i) if it arouses the interest of the **Readers** to know further or to promote further research on science of water,
- ii) if the **Science community** gives a serious thought on the new set of ideas and the **revolutionary** Hypothesis of Living-Water, it would enable them to undertake further advanced research on different phenomenon at micro level of living water,
- iii) if it helps to inculcate the right spirit and habit in the **Layman** to avoid wasteful practices and save water for sustainable growth and
- iv) if it helps **Homeopaths** to understand and develop the “THEORY OF HOMEOPATHY” on sound footings, in the light of the Hypothesis of Living-Water, as propounded in the chapter on Characterization.

Dr. Jeoraj Jain

जल पर शोध का प्रयोजन और स्थिति

अ) जैन धर्म की वैज्ञानिकता :-

हम सभी गर्व से यह कहते नहीं थकते कि हमारा धर्म बहुत वैज्ञानिक है। लेकिन **बच्चों** को लगता है कि हम **झूठा घमण्ड** कर रहे हैं। क्यों कि स्कूल का एक जैन छात्र यह तो जानता है कि जैनी लोग **पानी और अग्नि** को जीव मानते हैं, लेकिन **विज्ञान** में पानी और अग्नि को जीव मानने की कोई भी **अवधारणा** नहीं है।

कई साधुओं से या कुछ श्रावकों से यह कई बार सुनने को मिलता रहता है कि **जैन विज्ञान के अनुसार पानी की एक बूंद में असंख्य अणुओं के जीव होते हैं** तथा अब तो विज्ञान भी मानता है कि **“पानी की एक बूंद में 36,450 जीव होते हैं।”** लेकिन यह एक बहुत ही **भ्रामक और गलत उदाहरण** है। इससे हमें आगम की **आशातना** ही लगती है।

वास्तव में एक खोजी ब्रिटानी युवक कप्तान **स्कोर्सबी** ने गंगा जल के एक नमूने का खुर्दबीन से निरीक्षण किया था। उस पानी के नमूने के एक जल **बूंद** में त्रसकाय व वनस्पति काय के कूल 36,450 जीव देखे गये थे।

यहाँ यह बात ध्यान में रखें कि

- i) यह संख्या अलग-अलग प्रकार के **पानी** के नमूनों में अलग-अलग होगी। यहाँ तक कि **"जीरो-बी"** (फिल्टर पानी) में यह 'शून्य' भी हो सकती है। यह तथ्य विज्ञान और आगम दोनों को मान्य है।
- ii) लेकिन जैन विज्ञान तो **अप्काय** के जीवों की संख्या की बात करता है। न कि उसमें घूम रहे **त्रसकाय** के जीवों की बात करता है। यानि ऐसा जीव, जिस की **पानी ही काया** है। और ऐसे जीव की विज्ञान में अभी तक कोई भी **अवधारणा नहीं** है।
- iii) यदि आज के **शक्तिशाली** खुर्दबीन से निरीक्षण करेंगे तो पानी के किसी नमूने में लाखों/**करोड़ों** जीव पाये जा सकते हैं।
- iv) **विज्ञान** पानी को केवल एक साधारण **रसायन H_2O ही** मानता है। जीवन के लिए आवश्यक और मूलभूत कोई भी रसायन (DNA और RNA) उसमें नहीं होता है।

36,450 त्रसकाय के जीवों के आधार पर, लोगों को यह कहना कि आज-कल विज्ञान भी पानी में असंख्य जीव मानने लगा है और इसीलिए आगम के अप्काय की मान्यता सही है, एक भ्रामक और अश्रद्धा पैदा करने वाला तर्क है। हाँ, इतने त्रसकाय के जीवों के आधार पर यह राय दे सकते हैं कि पानी को छान कर पीयें।

v) यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि बुजुर्ग लोग धर्म को 'वैज्ञानिक' मानते हैं, तो फिर विज्ञान से ऐसा मनवाने का, क्यों नहीं कोई प्रयास किया गया? क्यों कोई व्यक्ति, समाज के इस प्रमाद को तोड़ने में सफल नहीं हुआ? अतः जैनी लोग इतना ही कह सकते हैं कि आगमानुसार पानी भी एक स्थावर काय का जीव होता है।

ब) वैज्ञानिक शोध के प्रयास

सन् 2003 में यह समझने का वैज्ञानिक प्रयास शुरू हुआ कि पानी का ऐसा जीव किस प्रकार का हो सकता है, जिसकी पानी ही काया हो। प्रश्न था कि गर्म करने से या धोवन बनाने से वह कैसे और क्यों निर्जीव हो जाता है? कुछ समय बाद यह फिर से जिंदा या सचित्त कैसे हो जाता है?

सतत् प्रयास व प्रयोगों द्वारा इन सबकी वैज्ञानिकता ढूँढते-ढूँढते, 7 साल बाद यह स्थिति तो आ गई है कि अब जैन समाज, विज्ञान को उसकी भाषा में ही यह बता सकता है कि अप्काय का जीव किस प्रकार का होता है? यानि उसकी संरचना किस प्रकार की है, कैसे जीवित रहता है आदि। अब तो यंत्रों के माध्यम से यह बताना भी संभव हो गया है कि कोई पानी का नमूना अचित्त है या सचित्त है।

पानी के जीव का जो प्रतिरूप तैयार किया गया तथा जो परिकल्पना (hypothesis) रखी गई थी, उसका स्वतंत्र रूप से प्रमाणीकरण कराने का भी प्रयास किया गया। इसके लिए एक अन्य वैज्ञानिक की सहायता लेकर, प्रयोगों का पुनरावर्तन कराया गया। इस साल (सन् 2010), उनके द्वारा भेजे फोटोग्राफ्स भी, उपरोक्त सिद्धांत को अभिपुष्ट (validate) करते हैं।

अतः आगम सम्मत जीवन की एक नूतन अवधारणा से विज्ञान को अवगत कराया जा सकता है। हो सकता है कि जैन सिद्धांत की यह प्ररूपणा, विज्ञान को, एक बड़ी क्रांतिकारी देन सिद्ध हो।

द) संदर्भ

इस वैज्ञानिक अनुसंधान के मिशन में—

श्रुतधर पंडित रत्न श्री प्रकाश मुनिजी द्वारा यथोचित जानकारी व संबंधित तथ्यों की प्रभावी व्याख्या और सरल शंका—समाधान मिलता रहा। जिससे विषय पर तुलनात्मक समझ विकसित होती गई।

कई अन्य 'विद्वान् आचार्यों व साधुओं से विचार—विमर्श द्वारा मार्गदर्शन मिलता रहा। जिनमें मुख्यतः आचार्य श्री हीरा चन्द्रजी म.सा. के शिष्य तत्त्वज्ञ श्री प्रमोद मुनिजी म.सा., श्रुतधर श्री प्रकाश मुनिजी के शिष्य आगमज्ञ श्री लक्ष्मीचन्द म. सा., आचार्य श्री महाप्रज्ञजी व वैज्ञानिक संत श्री महेन्द्रमुनिजी म. सा., आचार्य श्री कनकनंदीजी म. सा., आचार्य श्री नंदीघोष विजय जी म. सा., अध्यात्मयोगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि का पूर्ण सहयोग, आशीर्वाद व उत्साहवर्धन रहा। इसके अलावा डॉ. श्री कुलवंत सिंह, डॉ. श्री हरेश्याम द्वारा कई उपयोगी जानकारीयाँ प्राप्त हुई।



The Purpose of Research on Water

- (A) Water exists as Living-being and it can be **made non-living** by conducting certain operations on it. It can **carry and transfer** its acquired **properties and memory** to other similar well defined clusters of water-cells. Modern imaging techniques may reveal various aspects of this interesting phenomenon. 'Aura' photography is the simplest of various methods, which can be utilized to unearth some basic traits of it.

- (B) An important **Question** is generally asked as to what benefits would accrue to mankind by establishing scientifically water to be a living-being.

Before answering this particular question, let us understand as to what benefits the mankind has derived in almost last 100 years after discovering that plants have life :-

1. A full-fledged, cell-based **botany** science has developed.
2. It has helped improve the **productivity** and application of agricultural and horticultural sciences.
3. A revolutionary **future** is in sight of the mankind through genetically modified Plants and Vegetables.

- (C) Similarly, if the scientists understand fully the properties and cell-structure of living-water, i.e.,

- (i) How the cell structure is formed or broken.

- (ii) What forces are responsible for its changes at micro-level,

They will be able to understand and investigate,

- (i) The effects of consuming non-living water on our metabolism and body-structure,

- (ii) The effects of free oxygen radicals, dissolved in water, on our cell tissues,

- (iii) The effects of using non-living water on our mind and body?

- (D)** It would then be easier for the scientists to manipulate those effects for the benefits of society by suitable modifications in the cell-structures or additives scientifically.

- (i) An entirely new scientific **theory of life** is being propounded that water can exist without the traditional organic DNA and RNA etc.

- (ii) This will change the whole **concept of life** and our **attitude** towards this important natural resource. It will usher in a new era.
- (iii) By incorporating the above important changes in the scientific concepts, we may discover special tools for the protection of our environment.
- (iv) Once the mankind comes to realize that water is a living-being, our attitude towards its consumption and treatment may change, at least, of those having the human quality of compassion and (Parasparopgraho Jivānām) love towards living-beings. This will help prevent pollution & conserve water for our future generation.
- (v) Mankind will become more serious about application of 3R-Reduce, Recycle and Reuse, in the use of water.
- (vi) By knowing livingness of water, science of Homoeopathy would find a strong foundation and convincing theory of its action and effects.

RESEARCH PROJECT (WATER)

Water exhibits **special** molecular structure. It's symmetry is influenced by oxygen radicals dissolved in it. The solubility is affected by its temperature and ambient humidity. The **Surface configuration** or contour of molecular structure of water may exhibit/represent its total energy or rather **enthalpy**!

Certain physical operations, like boiling etc. on water have been found to enhance its "energy-density". Even its "energy-aura" has been seen and measured. Its energy-field shows relationship with these operations. Storage of energy in certain form and its corresponding structure may lend itself to "**characterization**" of its structures.

Application of advanced **imaging** techniques like Atomic Force Microscopes, MRI, Kirlian photography etc. may **reveal** certain hitherto-unknown properties of water. It may facilitate preparation of a **mathematical model** of its structure. It may also give deeper understanding of **behavior** of its structure and how it is **influenced by emotions**.

RESUME'

(Dr. -Ing. JEORAJ JAIN)

1. Graduated in Mech. Engineering with honors from Rajasthan University.
2. Post-Graduation and Doctor of Engineering from German University in 1968.
3. Worked with Tata Motors in various Capacities for 21 years.
4. Worked there after as Technical Consultant and Technical Advisor for Tata Steel, SAIL Plants and Welding Companies from Jamshedpur office.
5. Presented several Technical papers in National Seminars and Meets.
6. Received National Award for better Fabrication Methods.
7. Engaged in Scientific studies and Research on Jaina Agamic Tattva Gyan.
8. Special Thrust Areas (for the last more than 7 years)
 - (i) One Sensed living-beings Tejask y, Apk y.
 - (ii) Jain Central Library of Catalogues & Key-Wordng.

1. पानी प्राकृतिक मुद्रा है। इसका संतुलित उपयोग लाभप्रद है तो गंदा या बर्बाद करना अपनी ही बर्बादी का संकेत है। इसलिए न केवल पानी को बचाना लाभदायक है बल्कि पानी की पवित्रता बरकरार रखी जाए तो इससे कई फायदे भी होते हैं। लोग जब भी तीर्थयात्रा पर जाते हैं तो गंगाजल अवश्य साथ लेकर आते हैं। इस गंगाजल को अपने शहर के कुओं-तालाबों में भी इसीलिए डाला जाता है ताकि कोई इन्हें गंदा न करें। जो लोग जलस्त्रोतों में गंदगी डालते हैं या टूटे-फूटे नलों से पानी बर्बाद करते हैं, उन्हें कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, जबकि पानी की पवित्रता, उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान करती है।

2. 'हम झूठी मान प्रतिष्ठा के नाम पर पानी का अन्धाधुंध अपव्यय कर कितनी जीव विराधना कर बैठते हैं। जितना पानी पीने व दैनिक चर्या में काम में आता है (साधु के लिए 4-5 लीटर), उससे कई गुना अधिक कूलर, स्नान व धोने/सफाई के नाम पर अविवेक के कारण दुरुपयोग कर खर्च करते हैं।

कहते हैं कि यदि पानी का एक सूक्ष्म जीव सरसों के आकार जितना अपना शरीर, बना ले, तो एक बूंद के जीव पूरे जम्बूद्वीप की सतह पर नहीं समा सकते हैं। अतः सजगता व विवेक से पानी का उपयोग करें।

3. આંકડે:-

पृथ्वी पर करीब 2% पानी ही मीठा पानी है। हर साल दुनिया में 12 से 14 अरब क्यूबिक मीटर पानी, इंसान के इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होता है। सन् 1984 में प्रति व्यक्ति 9000 क्यूबिक मीटर था। यह उपलब्धता सन् 2025 में घटकर 5100 क्यूबिक मीटर ही रह जायेगी।

अतः पानी की मितव्ययता को लेकर हर इंसान को सावधान व सतर्क हो जाना है ।

4. **राशि और जल बर्बादी का संबंध** (साभार संकलन — दैनिक भास्कर, जोधपुर संस्करण, पृष्ठ सं. 16 दिनांक 22.5.2005)

मेष — पानी को बर्बाद करने पर इस राशि के लोगों की **सुख—सुविधाओं** में कमी आती है ।

वृष — जल की बर्बादी इस राशि के लोगों की **पदोन्नति** में बाधा उत्पन्न करती है ।

मिथुन — पानी की खराबी इस राशि के लोगों के **संचित धन** के नष्ट होने की निशानी है ।

कर्क — पानी की गंदगी इस राशि के व्यक्तियों के **सम्पूर्ण विकास** को बाधित कर देती है ।

सिंह — जल की बर्बादी इस राशि के लोगों के **धन की बर्बादी** का संदेश लाती है ।

कन्या — पानी को गंदा करने या बर्बाद करने पर इस राशि के लोगों की **आय** प्रभावित होती है ।

तुला — पानी का दुरुपयोग इस राशि के लोगों के लिए **कर्मक्षेत्र** की बाधाएं खड़ी करती हैं ।

वृश्चिक — जल को नष्ट करना इस राशि के लोगों के लिए **भाग्य** को नष्ट करना है ।

धनु — पानी की बर्बादी इस राशि के लोगों की **आयु** की बर्बादी है ।

मकर — पानी का दुरुपयोग इस राशि के लोगों के लिए **पारिवारिक परेशानी** का कारण बनता है ।

कुंभ — जल की बर्बादी इस राशि के लोगों के लिए **रोग और ऋण** का संदेश लाती है ।

मीन — पानी की गंदगी इस राशि के व्यक्तियों के **संतान—सुख** में कमी लाती है ।



अभियान “जल है तो कल है”

क्र. स.	आपको क्या करना है?	इसमें कितने व्यक्तियों को एक दिन का पेय जल मिल सकता है।
1.	2 मग पानी यदि सब बचायें।	4 करोड़ लोगों को
2.	टपकते नल को तुरंत ठीक करायें।	रोजाना 3 करोड़ लीटर पानी बचेगा।
3.	4 बार की बारीश का पानी इकट्ठा करें।	3 महीने के लिए
4.	5 बार दूध ब्रशिंग करते समय वाश बेसिन में नल के बजाय मग का प्रयोग करें।	4 व्यक्तियों को
5.	6 मिनट शौवर नहीं चलायें।	20 व्यक्तियों को
6.	7 बार घर का फर्श आदि पानी से धोने के बजाय पोंछा 35 व्यक्तियों को	

जरा सोचें :-

1. क्या कर रहे हैं हम?
2. बूंद-बूंद से पूर्णता आती है। पूर्णता कोई छोटी बात नहीं है।
3. अपना **सामाजिक दायित्व** पहचानें और इस **अभियान** में शामिल होकर जल बचायें।
4. आगे बढ़कर आप सेवा कर सकते हैं, यदि आप कम से कम **एक परिवार** को इस अभियान में जोड़ सकें।
5. आपको यह **संतोष** होगा कि **विश्व कल्याण** के लिए आप **योगदान** कर रहे हैं।
6. जल है तो कल है, इसके साक्षी बनने का **गर्व** अनुभव करें।



- डॉ. दिलीप धींग

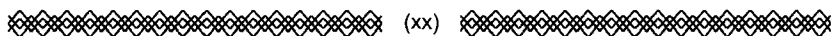
शाजापुर में जैन समाज के साथ अनेक प्रेरक चीजें जुड़ी हुई हैं, उनमें एक चीज वहाँ मुझे उल्लेखनीय लगी, वह है — 'धोवन पानी वाला स्थानक'। कसेरा बाजार स्थित वह जैन स्थानक लगभग पौने दो सौ वर्ष पुराना है। स्थानीय श्रावक—श्राविकाओं ने बताया कि नींव से लेकर पूरा स्थानक बनने तक अचित्त (धोवन) पानी का ही उपयोग किया गया था।

संयोग यह बना था कि स्थानक भूमि के पास ही एक रंगरेज रहता था। कपड़े रंगने का उसका बड़ा कारोबार था। अपने व्यवसाय के निमित्त से उसे बहुत परिमाण में पानी विसर्जित करना होता था। जब स्थानक निर्माण का कार्य शुरू हुआ तो विवेकशील श्रावकों ने उस रंगरेज से कहा कि वह उपयोग किया हुआ पानी फेंकने की बजाय उन्हें दे दें। रंगरेज इस सुझाव पर प्रसन्नता से सहमत हो गया। रंगरेज द्वारा उपयोग कर लिये गये पानी को संग्रह करने के लिए कोठियाँ आदि की व्यवस्था कर ली गई। प्रतिदिन रंगरेज द्वारा फेंकने योग्य पानी को स्थानक निर्माणकर्ताओं द्वारा ले लिया जाता।

इस प्रकार आरंभ से लेकर अंत तक पूरे स्थानक के निर्माण में रंगरेज द्वारा उसके व्यवसाय के निमित्त से तैयार अचित्त पानी का ही उपयोग किया गया। बोलचाल में उस स्थानक को आज भी 'धोवन पानी वाला स्थानक' अथवा 'धोवन पानी का स्थानक' कहा जाता है।

उस स्थानक में समय-समय पर अनेक साधु-साधवियों के वर्षावास, प्रवास और स्थिरवास हो चुके हैं। स्थानकवासी जैन परम्परा के प्रसिद्ध सन्त कवि तिलोकऋषि का भी वहाँ प्रवास हुआ था। आचार्य आनन्दऋषि का, आचार्य बनने के बाद पहला चातुर्मास उसी स्थानक में हुआ था। वह स्थानक साताकारी और ऊर्जा से भरा है। वहाँ प्रतिदिन धर्माराधना होती है। वह जैन स्थानक आज भी जल और अन्य संसाधनों के विवेकसम्मत उपयोग का सन्देश दे रहा है। वर्तमान में इस उपयोगी सन्देश की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक हो गई है।

(साभार : जिनवाणी, नवम्बर 2009)



जैन जीव-विज्ञान में जलकायिक जीव

जैन दर्शन में 'जीव' द्रव्य को, इन्द्रियों के आधार पर 5 प्रकार का बताया गया है। पाँच इन्द्रियाँ इस प्रकार हैं – स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र। इस आधार पर जीव के विकास क्रम में, सबसे निचले सोपान पर, एक इन्द्रिय वाले जीव हैं। इनके मात्र एक स्पर्शनेन्द्रिय ही होती है। इनको एकेन्द्रिय जीव भी कहते हैं। उनसे ज्यादा विकसित, क्रमशः दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव हैं। मनुष्य, पाँच इन्द्रियों वाला जीव, इस विकास क्रम के सोपान पर सबसे ऊपर है।

एकेन्द्रिय जीवों को फिर पाँच भागों में बाँटा गया है, यथा — पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय और वनस्पतिकाय। काय का अर्थ है शरीर अथवा समूह। इन सभी जीवों में चेतना होती है। जहाँ चेतना है, वहाँ वेदना भी है और वेदना की अनुभूति भी है। प्रथम 4 प्रकार के जीवों की काया (शरीर), **पदार्थ की आधुनिक 4 विभिन्न अवस्थाएँ हैं** — यानि ठोस पदार्थ के जो जीव हैं वे पृथ्वीकाय, तरल द्रव्य के जो जीव हैं वे अप्काय, वायु (गैस) द्रव्य के जो जीव हैं वे वायुकाय के जीव और अग्नि या प्लाज्मा की पदार्थ अवस्था के जो जीव हैं उनको तेजस्काय (अग्निकाय और विद्युत्काय) के जीव कहते हैं। इन सबकी मिश्रित अवस्था से बने एकेन्द्रिय जीवों की श्रेणी है — वनस्पतिकाय।

ये सभी **स्थावर जीव** हैं यानि ये सुख-दुःख की प्रवृत्ति और निवृत्ति के लिए चल फिर नहीं सकते हैं। ये अपनी अनुभूति को व्यक्त नहीं कर सकते हैं अर्थात् इनकी चेतना अव्यक्त होती है। इनमें केवल वनस्पतिकाय ही जैव कोषाणु आधारित जीव हैं, जिसको आज का विज्ञान भी सजीव होना मानता है। लेकिन उपर्युक्त 4 प्रकार के अन्य जीवों को तो **विज्ञान केवल रासायनिक पदार्थ** के रूप में ही मानता है। ये स्वयं जीव तत्त्व हैं, ऐसी विज्ञान सम्मत कोई धारणा अभी तक विकसित नहीं हुई है। ये रासायनिक या भौतिक क्रियाओं द्वारा पैदा किये जा सकने वाले जड़ पदार्थ मात्र ही माने जाते हैं।

त्रसकाय यानि चलने-फिरने वाले जीव द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के होते हैं। इनमें सुख-दुःख की प्रवृत्ति और निवृत्ति के लिए चलने-फिरने की क्षमता / शक्ति होती है।

अब हम अप्काय/जलकाय के एकेन्द्रिय जीवों के बारे में अपना चिन्तन आगे बढ़ाते हैं।

विज्ञान के अनुसार पानी एक तरल द्रव्य है। इसमें कुछ विशेष परिस्थितियों में बी.ओ.डी. (Biological Oxygen Demand) देखी जाती है। इससे यह संभावना हो सकती है कि ऐसे जैविक सक्रिय (Biological active) पानी को सचित्त—पानी की श्रेणी में रख सकें। लेकिन यह शायद पानी में अवस्थित माइक्रो—प्लाज्मा या बैक्टेरिया जीवाणु से संबंधित मुख्य क्रिया है। उस स्थिति में तो यह जल—जीव से परे, बाह्य जीव है।

हर विज्ञान के छात्र के मन में सीधा यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जैन विज्ञान में वर्णित वह 'जीव' कैसा हो सकता है जिसकी पानी ही काया है। साधारणतया यह अब तक के 'जीव' की कल्पना से परे की वस्तु लगती है। जैन विज्ञान के अनुसार जलकाय यानी अप्काय के जीव 7 लाख प्रकार के होते हैं। यानि इनकी 7 लाख प्रकार की योनियाँ होती हैं। इनका संस्थान / शरीर पानी के बुदबुदे के समान खोखला और गोलाकार होता है। इसका वर्ण लाल होता है।

हमने आधुनिक विज्ञान में अभी तक ऑर्गेनिक कोषाणु आधारित जीव पदार्थ को ही जाना है, समझा है। हम नये क्षेत्र में — अकार्बनिक कोषाणु पर आधारित जीव पदार्थ की संभावना को तलाशने का प्रयास करेंगे। यह गवेषणा/खोज करने का प्रयास करेंगे कि जैन आगम वर्णित वनस्पतिकायिक जीवों के अलावा एकेन्द्रिय जीव, खास कर अप्काय के जीव किस तरह 'जीव/प्राणधारण' करते हैं, किस तरह सचित्त बनते हैं? क्या इनके 'जीवित' होने का प्रमाण मिल सकता है?

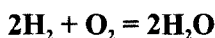
जीवित पानी की वैज्ञानिक अवधारणा

हालांकि विज्ञान ने अभी तक जैव-कोषाणु आधारित जीव को ही मान्यता दी है, फिर भी 'जीवन' की दूसरी संभावना या परिकल्पना, अन्य प्रकार के कोषाणु के रूप में हो सकती है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बोस ने तो वनस्पति के साथ-साथ 'पत्थर' आदि को भी 'जीव' के रूप में कल्पित किया था। उन्होंने वनस्पति में जीव के लक्षण होना तो साबित कर ही दिया था, लेकिन पत्थर आदि पर प्रयोग करने के पहले ही उनका देहान्त हो गया था। यह पता नहीं है कि उन्होंने किस प्रकार के कोषाणुओं की कल्पना अपने मन में संजोयी थी। हो सकता है कि ये किसी भौतिक रवों का विकसित कोषाणु रूप रहा हो।

पानी की संरचना

विज्ञान केवल इतना जानता है कि पानी को रासायनिक क्रियाओं द्वारा

पैदा किया जा सकता है। हाइड्रोजन व ऑक्सीजन गैस के संयोग से निम्न प्रकार यह द्रव्य बनाया जा सकता है –



पानी का अणु द्विध्रुवात्मक अणु होता है। (चित्र 1,2) यह परिकल्पना, जो 2-3 वर्ष पूर्व की गई थी, कि ये अणु हाइड्रोजन-बोन्ड की ऊर्जा से एक विशिष्ट 'षड्भुजी' या 'पंचभुजी' आकार की बनावट बनाते हैं (चित्र 3) इसको $H_{12}O_6$ के फार्मूले से दर्शाया जा सकता है। यह संरचना, मार्च 2004 के 'नया-ज्ञानोदय' में प्रकाशित पानी के एक षट्कोणीय आकार के रवे के फोटो से सिद्ध भी होती है। (चित्र 4b)

साधारणतया हाइड्रोजन-बोन्ड कमजोर होता है। लेकिन पानी में घुली हुई हवा के आयन/मूलक की मौजूदगी के कारण, जब पानी के षड्भुजी या पंचभुजी कण जुड़कर **त्रिआयामी ढाँचा** बनाते हैं, तो ये कमरे के तापक्रम पर भी स्थायी रहते हैं। यह इकाई रूप आकार अपनी केन्द्रित ऊर्जा से, सहजातिक अणुओं को आकर्षित करके 18 इकाइयों का एक जालीनुमा, बंद ट्यूब जैसा कोषाणु बना सकता है। (चित्र 4) ऐसी नेनोट्यूब के अणुओं का जो रासायनिक एवं em बोन्ड होता है, वह बहुत शक्तिशाली होता है। '**पाइपनुमा**' आकार इस ढाँचे को बहुत सख्त बना देता है। अंदर से खोखला होने के कारण, पानी में घुली हुई स्वतंत्र ऑक्सीजन के अणु या मूलक, इस पाइपनुमा मधुमक्खी के छत्ते के आकार के ढाँचे में प्रवेश करते हैं तथा बाहर निकलते हैं। इस जालीरूप ट्यूब की लंबाई 0.1 ग्यू के आसपास होती है तथा आकृति एक सीधी ट्यूब या मुड़ी हुई ट्यूब या फिर शंकु, मंडलाकार या गोलाकार ट्यूब के रूप में हो सकती है। (चित्र 5) इसकी सतही ऊर्जा अल्पतम होती है। पानी को उबालने पर यह ढाँचा टूट जाता है।

जैन विज्ञान के अनुसार जीवित यानि सचित्त पानी में 8 प्रकार के स्पर्श पाये जाते हैं – गर्म-ठंडा, खुरदरा-कोमल, गुरु-लघु और स्निग्ध-रुक्ष। पहले दो स्पर्श पानी के उपर्युक्त ढाँचे (पाइपनुमा मधुमक्खी का छत्ता) के प्रकम्पनों के गुण से संबंधित है। जबकि स्निग्ध एवं रुक्ष स्पर्श इस ढाँचे के विद्युतीय गुण से संबंधित है। आपस में जुड़े षड्भुजी व पंचभुजी रवों के ऋण और धन आवेश इस ढाँचे को विशेष प्रकार का स्पर्शन प्रदान करते हैं। यह कोषाणु या ढाँचा अपनी विद्युत-ऊर्जा से लगातार समाविष्ट करते हैं। फिर सोखी हुई हवा के अणु या मूलक (रेडिकल्स), जो इस ट्यूब में प्रवेश कर दूसरी तरफ से बाहर निकलते हैं – अपनी गति से एक अलग विद्युत-ऊर्जा पैदा करते रहते हैं। कोषाणु की ऊर्जा इन मूलकों को एक सक्रिय-संतुलन में रखती है। अपने में संचित ऊर्जा को, मांग होने पर, यह कोषाणु उपलब्ध कराने में समर्थ होता है। (चित्र 6)

इस यांत्रिक विलोडन की क्रिया में, उपर्युक्त वर्णित पानी के कोषाणु (ISO-MOLECULAR CELL) पर, अर्क के पद चिन्ह लगाये जाते हैं। यानि अर्क के आयन, कोषाणु की पाइपनुमा काया पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ देते हैं। यह नम-बालू के ढेर पर चलते ट्रक के टायर की सतही बनावट की छवि अंकित करने के सदृश ही एक क्रिया है। इस क्रिया द्वारा वह कोषाणु 'संस्कारित' हो जाता है। बार-बार टायर के आगे-पीछे होने से जैसे वह 'छाप' और गहरी तथा स्थायी होती जाती है, उसी प्रकार जितनी ज्यादा अंतःशक्ति बढ़ाते हैं, यह संस्कार, कोषाणु की सतही दीवार व आकृति पर, उतना ही गहरा होता चला जाता है। घुले हुए 'अर्क' के प्रकम्पनों से हाइड्रोजन बॉन्ड के नेटवर्क में विशेष बदलाव आता है।

जब यह सस्कारित कोषाणु व्यक्ति के खून में प्रवेश करता है तो वह खून के कोषाणु में झिटा-क्षमता (Zeta-Potential) को बढ़ा देता है। उसके साथ दौरा करते हुए, वह शरीर के कोषाणुओं द्वारा आसानी से सोख लिया जाता है। वहाँ वह इन कोषाणुओं की बनावट और क्षमता को प्रभावित करना शुरू कर देता है, बजाय उसकी वृद्धि में मदद करने के। जब यह होम्यो दवा का कोषाणु हमारे शरीर के कोषाणु की झिल्ली के सूक्ष्म छिद्रों के अन्दर और बाहर आता है, तो विद्युत आवेश (पल्स) पैदा करता है, जो न्यूरोन व दूसरे कोषाणुओं द्वारा संचार-प्रसारण के उपयोग में आता है। ये छिद्र या चैनल भी बड़ी विशिष्ट योग्यता वाले होते हैं तथा यह नियंत्रण रखते हैं कि कोषाणु के अन्दर क्या जा सकता है और क्या नहीं। यह कोषाणु के जीन्स (Genes) और डी.एन.ए. (DNA) को याद दिलाने या नई स्मृति बनाने के लिए 'उत्प्रेरक' की तरह काम करता है। इसकी मौजूदगी में जीन्स की संकेत नियमावली और निर्देश (Genetic Code Modification GCM) में बदलाव

होना मुमकिन हो सकता है। इसके द्वारा

- (1) या तो उसी प्रकार के नये कोषाणुओं के निर्माण के लिए उत्तेजित किया जाता है।
- (2) या रोग-प्रतिकारक (Antibody) कोषाणु के संश्लेषण के लिए निर्माण की गति तीव्र की जाती है।

ये दोनों प्रकार के निर्देश उस संस्कारित कोषाणु के गुण-क्षेत्र यानि विभिन्न 'प्रकम्पन व उसकी आकृति और ऊर्जा' पर निर्भर करते हैं तथा जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, यह संस्कार उस दवा में डाले गये सूक्ष्म-मात्रिक तत्त्व द्वारा उस कोषाणु पर किये गये लेप व अंकन की गहराई पर भी निर्भर करता है। इस प्रकार पानी के इस भौतिक कोषाणु में 'स्मृति' और 'सूचना-प्रसारण' जैसी क्रिया होती नजर आती है, जो किसी संरचना के 'जीवित' होने का प्रमुख लक्षण है।

संक्षिप्तः

होम्योपैथी पद्धति में 'स्मृति' व 'सूचना प्रसारण' के लिए जलकाय की 'सजीवता' (सचिच्छता) और उसकी भूमिका को संक्षेप में इस प्रकार रखा जा सकता है—

1. होम्योपैथी में पोटेन्सी या पतलापन बढ़ाने से जीवित जलकाय के कोषाणु की उत्प्रेरण या कार्यक्षमता बढ़ जाती है जो जीन की स्मृति और नियमावली को सक्रिय करती है। इससे मूल जीवन में (अ) रोग-प्रतिकारक कोषाणु पैदा करने की तथा (ब) सजातीय जैविक उत्पाद को संश्लेषित करने की क्षमता बढ़ जाती है।
2. मुक्त रूप से घूमते मूलक या निऑक्सीकारक (deoxidants) या विशिष्ट कोषाणु (characterised cells) की तरह ही 'जीवित-पानी' के कोषाणु भी एक विशिष्ट प्रकार के पद-अंकन धारण कर, उस कोषाणु में उत्प्रेरण का काम करते हैं, जिसकी नाभि में जाकर वे वहाँ के 'जीन्स' से संबंध स्थापित करते हैं।
3. इस प्रकार 'जीवन' की दोनों शर्तों को पूरी करता हुआ पानी भी वैज्ञानिक दृष्टि से 'अपकाय' का सचित्त पदार्थ हो सकता है, जैसा कि हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों, आचार्यों ने बताया था।

यह होम्योपैथी की तरह एक प्रभाव—आधारित परिकल्पना है। इससे पाठकों व श्रोताओं की कल्पनाशक्ति और उद्बलित होगी तथा इसको प्रयोगों द्वारा जीवित

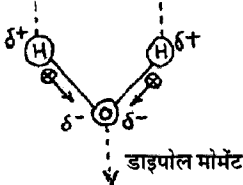
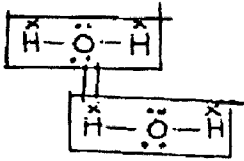

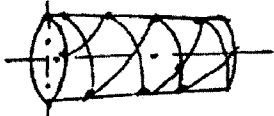

कोषाणु (पानी के) को समझने व उसमें झाँकने की 'मूल-शोध' व जाँच-पड़ताल करने की चुनौती को स्वीकार करके वे आगे आयेगे। मानव-जाति के लिए इसमें छिपी प्रबल संभावनाओं के मद्देनजर, इस आलेख द्वारा वैज्ञानिकों के सघन प्रयासों का आह्वान किया जाता है।

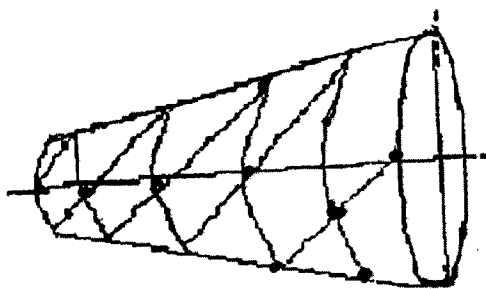
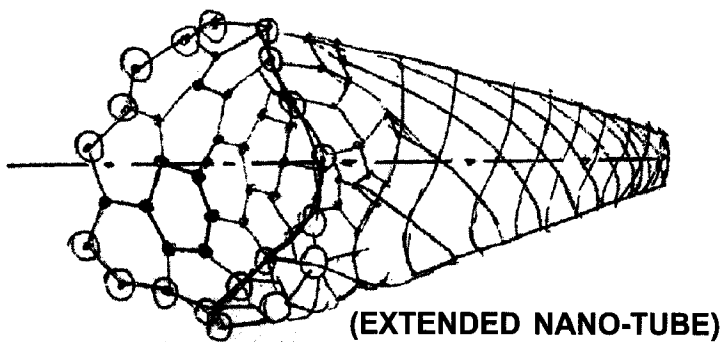
संचित अप्काय सामूहिक याददाशती का वाहक बनता है तथा उस सामूहिक स्मृति का प्रभाव भी होम्योपैथी पद्धति में प्रयोगों से सिद्ध होता आ रहा है। लेकिन यह स्मृति वास्तविक रूप से कैसे संचित होती है तथा 'सूक्ष्म' का 'स्थूल' पर किस पद्धति से नियंत्रण होता है, अभी भी गहन चिन्तन व प्रायोगिक अनुसंधान का विषय है।

1. बहुश्रुत पं. पूज्य प्रकाशमुनि जी व पूज्य लक्ष्मीमुनि जी द्वारा जोधपुर व दुर्ग में 2002 और 2003 में आगम सम्मत समाधान ।
2. डॉ. कुलवन्तसिंह व डॉ. हरेश्याम वर्मा (जमशेदपुर) के साथ विचार-विमर्श ।
3. CBSE की रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें ।
4. पिछले 3 वर्ष के साप्ताहिक में प्रकाशित लेख ।
5. श्री प्रभुनारायण मिश्र द्वारा 'नया ज्ञानोदय' भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली मार्च 2004 में प्रकाशित लेख ।
6. Dr. Jeoraj Jain, "Principle of working of Homeopathy", Homeopathy Heritaze, New Delhi, Feb. 2004

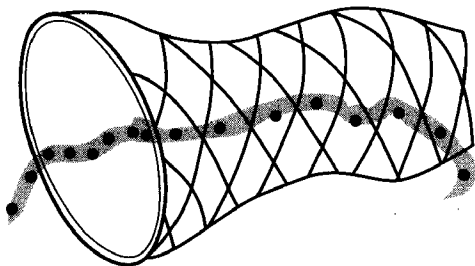
सचित्त अपकाय का भौतिक कोषाणु (चित्र)

—डॉ. जीवराज जैन

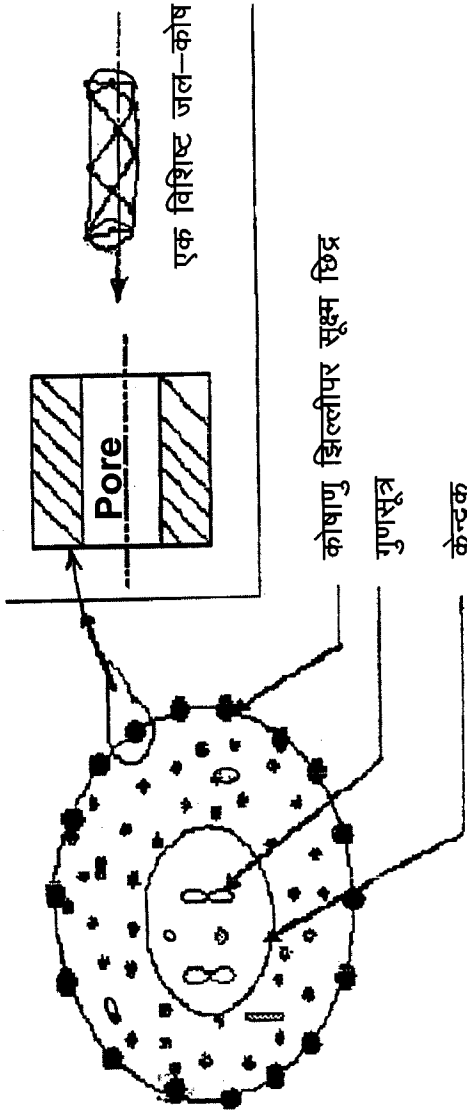
 <p>हाइड्रोजन बॉन्डिंग</p> <p>1. ऑक्सीजन की ज्यादा ऋणात्मकता के कारण H_2O का द्विध्रुवात्मक अणु</p>	 <p>2. H_2O के बनने के कुछ समय बाद योनि बनने की प्रक्रिया</p>
 <p>3. पानी का एक रवा (षष्ठीनुमा) ($H_{12}O_6$ अणु इकाई)</p>	 <p>जाली नुमा ट्यूब (Iso-mol of cell), लम्बाई = 0.1μ</p> <p>4a. अपकाय का भौतिक कोषाणु</p>
 <p>4b). न्यूयार्क के नल का जल (रवा-विन्यास)</p> <p>जल का यह षष्ठीनुमा आकार आश्चर्यजनक रूप से लेख में प्रस्तुत परिकल्पना से मूलतः एक सदृश है। (संदर्भ 5)</p>	



चित्र 4C : मधुमक्खी के छते तरह नलीनुमा योनि रचना
(जीवित-कोषाणु)



चित्र 5 : ऑक्सीजन के आवेशों का जीवित पानी के कोषाणु में से प्रवाह



चित्र 6 : शरीर कोषाणु में जल-जीव की इकाई का प्रवेश

धोवन (अचित्त पानी) बनाने की मान्य विधि

नैसर्गिक क्रिया:

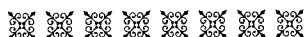
1. भारत में हर सुबह रसोई व पिरंडे के बर्तनों को धोने की प्रथा है। स्टील के बर्तनों को राख से मांज कर धोया जाता है। जितने बर्तन मांजकर धोना है, उतना पानी एक बाल्टी में लेकर, उस राख से मंजे बर्तनों (गिले) को धोया जाता है। एक अनुपात में रखा यह पानी धोवन के रूप में इकट्ठा हो जाता है। इसको 24-25 मिनट बाद निथार लिया जाता है। या मिट्टी के बर्तनों को पानी से रगड़ कर धोया जाता है। यह धोया हुआ पानी धोवन कहलाता है। बर्तनों का धोया हुआ पानी अंतर्मुहूर्त बाद अचित्त हो जाता है।
 2. रसोई में खाना बनाने वाली आटे की परात, चकला, बेलन आदि भी काम में लेने के बाद, पानी से धोये जाते हैं। इनका धुला हुआ पानी भी 'धोवन' कहलाता है।
 3. इसी प्रकार अनाज (ऊपर की पॉलिस उतार कर) अच्छे से दोबारा रगड़ कर धोया जाता है। यह बाद का धुला हुआ पानी या भिगोया हुआ पानी भी धोवन की श्रेणी में आता है। उपरोक्त पानी अनाज को रगड़ कर धोने के कारण, अचित्त बन जाता है।
 4. अनाज, दालें आदि सब्जी को जब उबाला जाता है —या तो साधारण खुले बर्तन में अथवा प्रेसर कुकर में — उबलने के बाद उनमें जो अतिरिक्त पानी रह जाता है, उसको निकाल कर फेंक दिया जाता है। यह मांड या उबालने के काम में आया पानी, "गर्म" पानी माना जाता है। इसको अचित्त पानी की श्रेणी में गिना जाता है। उबालने की क्रिया द्वारा बनाया हुआ अचित्त गर्म पानी या अचित्त धोवन पानी को काम में लेने का प्रावधान बताया गया है।
- ऐसे धोवन पानी को पहले छान कर निथार लिया जाता है। निथारने के बाद साधक इसको अपने उपयोग में लेते हैं। यह निरापद अचित्त पानी की श्रेणी में आता है, क्योंकि रसोई की आवश्यक क्रियाओं से यह गौण (अनुषंगी) उत्पाद के रूप में बनता है।

परकायिक क्रिया :

पानी में परकाय यानि दूसरे पदार्थ मिलाकर भी धोवन बनाया जा सकता है। पानी में राख, लौंग, त्रिफला आदि मिलाने से सचित्त पानी अचित्त बन सकता है। इसके लिए राख को सबसे ज्यादा कारगर और उपयुक्त माना गया है। चूने से भी पानी शीघ्र और कारगर तरीके से अचित्त बन सकता है। लेकिन इनकी कितनी मात्रा मिलाने से कितना पानी अचित्त बनता है, इसका एक सरल और व्यावहारिक उपाय होना जरूरी है। एक दो चिमटी राख घड़े भर पानी में घोलकर धोवन बनाना सही नहीं है। वह केवल सचित्त घोलन की श्रेणी में ही रह जाता है। ज्यादा तर राख हल्की क्षारीय या उदासीन होती है। इसमें कीटाणुओं की उत्पत्ति नहीं होती है। कुछ राख की मात्रा पानी के नीचे जम जाय तो समझ लिया जाता है कि राख की उपयोग में लाई मात्रा काफी थी। चूने के ऊपर के पानी को निथार कर, उससे कई लोग अचित्त धोवन बनाते हैं। त्रिफला की मात्रा का भी सही अंदाज नहीं लगता है, क्योंकि उसकी बहुत ही कम मात्रा से भी पानी का रंग बदल जाता है। जब कि राख और चूना कम खर्चीले और आसानी से उपलब्ध होने वाले पदार्थ हैं। पानी का पूर्ण प्रकार से वर्ण, गंध, रस, स्पर्श बदले बिना धोवन नहीं होता है।

उबालना :

पानी को 90°C से ऊपर उबालकर भी अचित्त बनाया जाता है। साथ में यह हिदायत दी जाती है कि 3 उकाला आ जाय। इससे, पूरा गर्म हुआ या नहीं, इसका संशय निकल जाता है। हालांकि यह नैसर्गिक क्रिया से अचित्त बना हुआ तो नहीं माना जा सकता है।



चीनी, नमक, त्रिफला आदि कुछ कषैले पदार्थ व चूना, दूध आदि की थोड़ी सी मात्रा के प्रयोग से पानी का स्वाद, रंग आदि बदल जाता है। फिर भी साधक लोग इनके प्रयोग से बदले हुए पानी को प्रासुक धोवन मानने में हिचकिचाते हैं। इनका संतृप्ति बिन्दु बहुत ऊँचा होता है। अवक्षेपण होने के लिए बहुत अधिक मात्रा की जरूरत होती है। अवक्षिप्त नहीं होने से स्थिति संशयात्मक रहने के कारण इनको अनुपयुक्त पदार्थ मानते हैं।

ज्यादा शक्कर घुल जाने से पानी अचित्त तो हो जाता है, लेकिन अचित्त बनाने के लिए जरूरी मात्रा का निर्णय कर पाना व्यावहारिक व सरल नहीं है। अतः व्यवहार में संशय बना रहता है। सर्वसम्मति यह है कि गाढ़ा शर्बत जरूर अचित्त होता है। शेष प्रकार के घोल का निर्णय करना मुश्किल है। वैसे इन्द्रिय प्रिय मधुर घोल होने के कारण व्यवहार दृष्टि से भी इसको धोवन की श्रेणी में नहीं रखा गया है। क्योंकि इन्द्रिय निग्रह के स्थान पर इन्द्रिय आसक्ति का यह कारण बन सकता है। अतः साधक लोग व्यवहार दृष्टि से उसका उपयोग नहीं करते हैं।

कुछ आचार्यों ने नमक में पाँचों ही स्वाद का मिश्रण माना है।

स्वाद के भेद:

स्वाद	उदाहरण
1. तीखा	— मिर्च (चरका), साँठ, पीपर
2. कड़वा	— नीम, करेला, चिरायता
3. कषैला	— आंवला, हरड़, कत्था, कबीर
4. खट्टा	— अम्लीय पदार्थ
5. मीठा	— चीनी आदि

साधारणतया यह मिट्टी और पानी से ही निकलता है। प्राचीन काल से ही इसे “शस्त्र” के रूप में नहीं माना गया है। चूँकि पानी इसके जन्म स्थान के रूप में है, इसलिये भी इसे शस्त्र की श्रेणी में नहीं रखा गया है। साधक लोग व्यवहार दृष्टि से इसका उपयोग नहीं करते हैं। हालांकि हो सकता है कि यह पानी को अचित्त बना सकता है। नमक पानी में जाकर जलयोजन आवरण बनाता है, न कि सीधा पानी के शरीर के छिद्रों में जाकर जमता है। ज्यादा मात्रा में घोलने पर ही उपरोक्त क्रिया होती होगी, जिससे पानी अचित्त बन जाता है।

3. कषैले स्वाद वाले पदार्थ (त्रिफला, हरड़, आंवला, कत्था आदि)

ये सभी मंद शस्त्र माने गये हैं। इनको खाने के बाद पानी स्वादिष्ट या मीठा लगता है। हालांकि स्वयं प्रतिकूल स्वाद वाले होते हैं। तथा थोड़ी सी मात्रा के उपयोग से पानी का रंग शीघ्र ही बदल जाता है। अतः काम में ली हुई इनकी मात्रा का सही अंदाज नहीं लगता है। निर्णय संशयात्मक रहता है। बहुत ज्यादा मात्रा को महीन पीस कर 'घोलने' से पानी के शरीर के सारे छिद्र बंद हो सकते हैं। लेकिन पाउडर को कितना महीन बनाया गया, कितनी मात्रा का उपयोग हुआ, और यदि अवक्षेपण हुआ भी तो संतृप्ति बिन्दु तक पहुँचने पर हुआ या स्थूल कणों के कारण हुआ, आदि संशयात्मक स्थिति पैदा करते हैं। अतः व्यवहार दृष्टि से इनके उपयोग की अनुशंसा नहीं की जाती है, हालांकि 500 mesh जैसे सूक्ष्म कणों के प्रयोग से अच्छा कोलोइड (colloid) बन सकता है। तथा पानी का क्वाथ के रूप में अचित्त धोवन बन सकता है। लेकिन अवक्षेपण नहीं होने के कारण सही मात्रा के उपयोग का अन्दाज नहीं लगता है। अतः साधक इनको व्यवहार दृष्टि से अपने लिए अनुपयुक्त मानते हैं तथा संदेह से परे रहना पसंद करते हैं।

आधुनिक प्रयोगों द्वारा अचित धोवन बनाने के लिए इनके आकार और सही मात्रा को निश्चित करना सम्भव हो सकता है। वैसे मधुर पश्च स्वाद के कारण भी इसका उपयोग नहीं करते हैं।

4. मिट्टी :

मिट्टी को भी शस्त्र रूप नहीं माना गया है, क्योंकि उसे भी पानी का जन्म — स्थान माना गया है। मिट्टी तो पानी में अत्यधिक मात्रा में भी घुल सकती है। साधक लोग व्यवहार दृष्टि से, मिट्टी घुले हुए पानी को, अचित्त धोवन नहीं मानते हैं। कई जगह के बोरिंग के पानी में काफी मात्रा में चिकनी मिट्टी घुली रहती है, जैसे हावड़ा आदि जगह पर। हो सकता है उतनी मिट्टी के घोलने से पानी अचित्त बन सकता हो। हालांकि बोरिंग का पानी तो भीतर में बहुत अर्से तक मिट्टी को घोल कर रहता है, जो बाहर आने पर कुछ समय पश्चात काफी मात्रा में अवक्षेपित हो जाती है। फिर भी मिट्टी से उसको व्यवहार सचित्त मानना ही उचित लगता है। आधुनिक यंत्रों द्वारा जरूर पता लगाया जा सकता है कि अमुक पानी अचित्त धोवन बना या नहीं। SiO_2 / बालू को शस्त्र नहीं माना गया है।

5. चूना $[\text{Ca}(\text{OH})_2]$

यह राख से भी तेज शस्त्र माना गया है। थोड़ी सी मात्रा से धोवन बन सकता है। लेकिन मात्रा का माप संशयात्मक रहता है। इसके तेज को कम करके यानि निधार कर, क्षीण चूने का उपयोग किया जाता है। तेज रहने से जिह्वा या पेट पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है। व्यवहार में “सही मात्रा” का उपयोग तथा उसकी क्षीणता की डिग्री आदि का वास्तविक मापतोल संभव नहीं रहता है। यह कोलोइड भी शीघ्र बना लेता है तथा इसकी घुलनशीलता भी अत्यधिक होती है। अधिक घुलनशील पदार्थों की सही मात्रा सुनिश्चित करने का भी कोई मानक नहीं रहता है। जैसा कि राख में अवक्षेपण होने पर पानी का अचित्त होना मान लिया जाता है। राख की महीनता भी प्रायः एक सी रहती है। अतः राख जैसी चूने की प्रामाणिक मात्रा को बता पाना व्यवहार सम्मत संभव नहीं है। हाँ, आधुनिक यंत्रों का प्रयोग करके चूने की सही मात्रा को, उसकी क्षीणता के अनुसार मापी जा सकती है। लेकिन यह तरीका अभी प्रयोगात्मक स्टेज पर ही है।

6. दूध (Milk):

यह कोलोइड है तथा एक अनुकूल रस की श्रेणी में आता है। पानी में उसकी असीमित घुलनशीलता है। यह स्वयं शरीर के रूप में रहता है, न कि आणविक रूप में। तथा पानी के शरीरों के बीच में समशील या समरूप मिश्रण बनाता है। इसके बर्तन के साथ पानी को रगड़ कर धोने से पानी का शरीर टूट जाता है तथा अचित्त धोवन बन सकता है। यह पानी के रंग को जल्दी बदल सकता है (कम मात्रा से भी) तथा "अवक्षेपण" का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। अतः व्यवहार दृष्टि से दूध को धोवन बनाने के लिए अनुपयुक्त माना गया है।

7. सारांश :

- (i) इस प्रकार अत्यधिक घुलनशीलता वाले या कम मात्रा से ही रंग बदलने की क्षमता रखने वाले पदार्थ, धोवन बनाने के लिए अनुपयुक्त माने गये हैं। इसका एक कारण है कि इन पदार्थों का पानी में संतृप्ति बिन्दु अधिक होने के कारण, “अवक्षेपण” के रूप में मापदण्ड तय नहीं किया जा सकता, जो कि व्यवहार दृष्टि से संशय से परे रहने का साधकों के लिए आसान तरीका होता है।
- (ii) जो पदार्थ (कबैले पदार्थ) मुश्किल से घुलते हैं, लेकिन जो पानी के रंग को अपनी थोड़ी सी मात्रा से ही बदलने की क्षमता रखते हैं, उनकी सही मात्रा को भी निश्चित रूप से बता पाना मुश्किल रहता है। अतः ऐसे पदार्थों को अचित्त पानी बनाने के लिए अनुपयुक्त माना गया है।
- (iii) व्यवहार में कुछ आचार्यों ने श्रावकों के लिए बताया है कि 10 लीटर पानी में कितना लौंग, त्रिफला पाउडर आदि पोटली में डाल कर 1 मिनट तक खूब हिलायें। या इतना चिमटी चूना डाल कर हिलाएं। फिर इतने मिनट (आधा घंटा आदि) बाद ही उसे अचित्त धोवन माना जाये। कुछ आचार्य चूने का घोल पानी बनाकर उसे निथार लेते हैं। ऊपर का निथारा हुआ क्षीण चूने का पानी धोवन बनाने में उपयोग में लिया जाता है। उस पानी को घड़े के पानी में मिलाकर हिलाया जाता है। फिर 25 या 30 मिनट के समय के बाद उस घड़े के पानी को अचित्त माना जाता है।

इन सबका वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा प्रामाणिक आधार प्राप्त करके, संशयात्मक स्थिति से निपट लेना अति आवश्यक लगता है। पिछले कुछ वर्षों में हुई शोध से यह संभव हो सकता है। जरूरत है विश्वास के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने की और वैज्ञानिकों को सामूहिक रूप से समुचित प्रोत्साहन देने की।



प्रश्न:- हम लोग अभी तक यह मानते रहे हैं कि गर्म करके पानी पीना आगम सम्मत है। अब आधुनिक कहे जाने वाले लोगों ने तर्क रखा है कि उबालने में कोई बुद्धिमानी नहीं है। धोवन बनाने व उबालने से जीव तो मरते ही हैं, फिर अचित्त बनाकर पीने से क्या फायदा है? इनको हम अहिंसक कैसे मान सकते हैं? वो अपने आपको यह बताने में कि आगमानुसार **“पण्णा सम्मिक्खए”** यानि अपनी ‘प्रज्ञा से आगम की समीक्षा कीजिए, का सहारा लेकर अपने आपको ज्यादा तार्किक और आधुनिक बता रहे हैं। गर्म करके महा हिंसा मत कीजिए। गर्म करना महा हिंसा का कारण है, अतः जब धोवन का विकल्प मौजूद है, तब तो उसे छोड़ देना ही चाहिए।

उत्तर :- a) हम क्या करते हैं? हम छानकर घड़े में पानी भरते हैं – तो पानी का सीमाकरण हो जाता है। (7वाँ व्रत)। लेकिन चूँकि नल पास में मौजूद है, अतः व्रत खुला रह जाता है। धोवन व उबालने की प्रक्रिया लम्बी है, उसके लिए मात्रा सोच समझकर तय की जाती है। कच्चा पानी उपयोग में लेने से:-

1. साधारणतया मात्रा निश्चित नहीं होती है।
2. पानी के जीव डरते रहते हैं। उनमें आपसे भय रहता है।
3. असंख्य जीव पैदा होते/मरते हैं। व्यवहार नय से हमें दोष लगता है।
(निमित्त)
4. हर समय पानी में गिलास डालने से बार—बार उन्हें कष्ट होता है।
5. उबालने से बार—बार के प्राणातिपात से बच जाते हैं।

b) तर्क और आधुनिकता:-

1. हिंसा का निमित्त:- कच्चा पानी जब घर में एक घड़े में भर कर रखा जाता

है, तब उस पानी में असंख्यात जीवों की उत्पत्ति और मृत्यु हर क्षण होती रहती है। व्यवहार नय से उन सबका निमित्त लगता है।

2. वेदना:— उस पानी में से जब भी हम लोटा भर पानी निकालते हैं, तब लोटा डालने व निकालने से अप्काय के जीवों को भयंकर वेदना होती है, उसका निमित्त मुझे लगता है। जितनी बार पानी निकालेंगे, उतनी बार वेदन होता है। यदि पानी को अचित्त बना कर (धोवन या गर्म करके), रखा जाये, तो दिन भर में बार-बार हो रही इस वेदना की हिंसा से हम बच सकते हैं।
3. मात्रा की मर्यादा:— यदि अचित्त पानी का नियम ले रखा है तो आपने पानी का सीमाकरण कर लिया। तब जितना अचित्त पानी आपने बनाया है, उतना ही आपके उपयोग में आयेगा।
 - i) यहाँ तक कि यदि आप बाहर गये हैं, वहाँ का पानी, हो सकता है, कच्चा होने से आप नहीं पीयेंगे। इस तरह दिन में हो रही आवागमन में, हर जगह थोड़ा-थोड़ा कच्चा पानी पी लेने की मजबूरी बच जायेगी। आपकी मर्यादानुसार, आप घर आकर अपना पानी पीयेंगे। इसमें परीषद तप का लाभ मिलेगा। यानि अचित्त पानी के प्रत्याख्यान का इतना लाभ और मिल जायेगा।
 - ii) इसमें दिन भर के लिए एक निश्चित मात्रा भी तय हो जाती है। (मात्रा का लाभ)।
 - iii) गरने से छान कर, जिस पानी से रसोई में बर्तन व अनाज आदि धोकर जो धोवन बनता है, वह सहज और निरापद धोवन कहलाता है। उसको सहेज कर रखने व उपयोग में लेने से न केवल असंख्य जीवों की रक्षा करते हैं, बल्कि कर्म निर्जरा भी होती है।

c) बंध का निमित्त:-

उपरोक्त **b1**. बिन्दु पर आगे गौर करते हैं।

- 1) विचार करिये कि मैं एक मकान में रह रहा हूँ। उसके बाहर एक पत्थर पड़ा है। उस पत्थर पर मेरी दृष्टि नहीं पड़ती। तब पत्थर से मेरा किसी तरह का बंधन नहीं है।

यदि कभी मैंने उस पत्थर पर गौर करके, किसी कार्य के लिए उपयोगी मान कर अपने मकान में रख लिया, तब उस पत्थर से मेरा भाव – बंधन हो गया। यदि फिर कभी उस पत्थर को अनुपयोगी जानकर वापिस बाहर फेंक

दिया तो मेरा बंधन टूट गया। इसी प्रकार जब एक घड़ा भर कर कच्चा पानी मैंने अपने घर में रख लिया — अपने उपयोग के लिए—तो उस घड़े भर पानी से मेरा भाव—बंधन हो गया। यदि 1 किलो आलू खरीद कर मैं घर पर लेकर आया तो उन आलुओं से मेरा भाव—बंधन तो हो गया।

- 2) अब प्रश्न उठता है कि उस घड़े भर पानी या आलू में जो जन्म—मरण हो रहा है, उसका निमित्त मुझे लगता है या नहीं ? यानि घर में लाकर रखने के समय से लेकर जब तक मैं उसे उपयोग में लेना शुरू करता हूँ, तब तक उसमें जो असंख्यात जीवों की उत्पत्ति व मरण होता है, क्या उसका मैं निमित्त बनता हूँ ? यदि हाँ तो क्या निमित्त का दोष लगता है ? उपरोक्त दोनों प्रश्नों के जवाब ढूंढने हैं। “पण्णा सम्मिक्खए” यानि अपनी प्रज्ञा से समीक्षा करनी है। चूँकि अप्काय के जीवों की या वनस्पति के जन्म—मरण की क्रिया स्वाभाविक रूप से चल रही है, अतः मुझे उनकी हिंसा का निमित्त नहीं लगता है। केवल “परिग्रह” का दोष लगता है। यदि उस पर मेरा ममत्व जुड़ा हुआ है तो व्यवहार दृष्टि से निमित्त दोष भी लगता है।
- 3) यदि हम घड़े के पानी या आलू जैसे पर—पदार्थ की हानि वृद्धि को निज की हानि—वृद्धि नहीं मानें तो हममें राग—द्वेष के भाव ही पैदा नहीं होंगे। ऐसी अवस्था में भाव—कर्म बंधन नहीं होगा। लेकिन हमारा यह भाव तो कच्चे पानी से भी होता है और घर में रखे अचित्त—पानी से भी होता है।

d) अकर्मक अवस्था :

पर—पदार्थ पर राग नहीं होगा, यदि मैं सोचूँ कि मैं तो उपयोग स्वरूप, चेतन हूँ। ज्ञान और दर्शन मय हूँ। चेतन अरस, अरूपी, अगंध और अस्पर्शी है। अतः पानी या आलू के पुद्गल मेरी वस्तु नहीं है। इस तरह चिन्तन करके दृढ़ भावों से भाव—बंधन को रोक सकता हूँ। तथा बंधे हुए कर्म को अपने से पृथक् कर सकता हूँ। (अज्ञान अवस्था में मनुष्य पर—पदार्थ की हानि—वृद्धि में निज की हानि—वृद्धि मानता है, और भाव—बंध करता है।) “अपने शुद्ध स्वरूप का चिन्तन करने से कर्म स्वतः दूर हो जायेंगे।” (श्रीमद् राज चन्द्रजी)।



जबकि धोवन पानी में विजातीय क्षार के उपयोग के कारण पुनः धोवन विधि के उपयोग में लाने से भी, पूर्व के मृत शरीर सड़ते नहीं हैं। उनको विषैले बनाने की उबलने की क्रिया भी इसमें नहीं होती है। अतः धोवन पानी भक्ष्य ही रहता है। फिर भी यह धोवन बनाने के पूर्व के सचित पानी की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। उसका विवेक रखना चाहिये। कुछ प्रकार के सूक्ष्म बैक्टेरिया धोवन बनाने के बाद बदबू देने लगते हैं। उस तरह के पानी का उपयोग पीने के बजाय धोने आदि दूसरे काम में लेना चाहिये। क्योंकि वह अभक्ष्य बन सकता है।

उत्तर : नई खोज के अनुसार, जैविक फोटोन (बायो फोटोन) को एक सशक्त प्रकाश के रूप में माना जाता है, जो कि सचित्त पदार्थ में उत्सर्जित हो सकता है। कुछ परिस्थितियों में यह पानी के एक विशेष प्रकार में दृष्टिगोचर हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये फोटॉस पानी की योनि में सोमेटिड्स (Somatids) के रूप में उसके एक छोर पर जुड़ जाते हैं या वहाँ पर उत्सर्जित होते हैं।

प्रश्न 6 : क्या गंदा पानी फिर से सचि्त्त बन सकता है ?

उत्तर : मोटे तौर पर गंदा पानी दो तरह का होता है। एक परकायिक जीवों की उपस्थिति के कारण। इनकी मात्रा बढ़ने से तथा विशेष प्रकार के जीव पैदा होने से यह अचिंत पानी भी अभक्ष्य बन जाता है। दूसरा गंदा पानी होता है विजातीय तत्वों की उपस्थिति के कारण। यह पानी

भी हमारे लिये अभक्ष्य हो सकता है। समुद्र का पानी सचित्त होता है।

कुछ प्रयोगों में यह पाया गया है कि नल के पीने के पानी को, जो साधारण गंदा था, जब बर्तन में स्थिरकर, संगीत व प्रार्थना से प्रभावित किया गया, तो षष्टिनुमा रवा बना कर सचित्त हो गया। **(फोटो 3)**। नल व नदी का पानी अधिकतर मिश्र अवस्था में होता है।

प्रश्न 7: क्या धोवन पानी भी गंदा पानी माना जाये ?

धोवन जैसे भी अचित्त पानी है। उसमें त्रसकाय के जीव भी अचित्त हो जाते हैं। पानी (सचित्त) में उपस्थित हवा के मूलक नष्ट हो जाने से, उसके उपयोग से, व्यक्ति के आवेश मंद रहते हैं।

ऑक्सीजन मूलक (Radicals) के बारे में निम्नलिखित तथ्य ध्यान देने योग्य हैं :-

- i) साँस में ली गई हवा में जितनी ऑक्सीजन होती है, उसका करीब 5% भाग ऑक्सीजन मूलक के रूप में बदल जाता है।
- ii) साँस की तरह, पीने के पानी में जितनी हवा घुली रहती है, उसमें प्राप्त प्राणवायु भी मूलकों में परिवर्तित हो जाती है।
- iii) मूलक बहुत अभिक्रियाशील होते हैं। ये **न्यूक्लायाइक** अम्ल, लिपिड्स आदि का प्रतिघात कर सकते हैं। इससे निरोधात्मक शक्ति क्षीण हो कर या प्रतिरक्षक तंत्र कमजोर हो कर, अपकर्षक बीमारियाँ हो जाती है।
- iv) उबालने या धोवन पानी बनाने से इस मूलकों से छुटकारा मिल जाता है। इन प्रक्रियाओं में इस स्वतंत्र मूलकों का सफाया हो जाता है तथा नया मूलक नहीं बन पाता है।
अतः **वैसा पानी** पीने से टिस्सूओं के ऑक्सीडेटिव (Oxidative) क्षरण या नुकसान से छुटकारा मिल जाता है।
- v) राख के पाउडर (क्षारीय) से जब धोवन पानी बनाया जाता है, तब भी स्वच्छंद मूलक नष्ट हो कर, एकल ऑक्सीजन बन सकती है। ऐसे पानी के प्रयोग से बीमारी-मुक्त जीवन पद्धति जीने में सहायता मिलती है। आवेशों पर कंट्रोल रहता है। यह जीन संबंधित बदलाव से तथा उससे जुड़ी बीमारियों से छुटकारा दिलाता है।
धोवन में जैविक कोषाणुओं की गंदगी तो बिल्कुल नहीं रहती। अतः वह सुभक्ष्य हो जाता है।

प्रश्न 8 : परकाय पदार्थ मिलाकर धोवन पानी बनाने का क्या विज्ञान है?

उत्तर : दो प्रकार के ठोस पदार्थ होते हैं। उनके प्रभाव का निम्न प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है।

1. ध्रुवीय पदार्थ:— इनके अणु विद्युत आवेश लिए हुए होते हैं।

जब ये पदार्थ पानी में मिलाये जाते हैं, तो ये आयन बनाते हैं। उदाहरण स्वरूप साधारण नमक (NaCl)। पानी के अणु या योनि के ढाँचे इन आयनों के चारों तरफ एक घेराव बनाते हैं। पानी की योनि इन विजातीय पदार्थों से न तो टूटती है और न श्वासावरोधी बनती है, यदि इनकी मात्रा बहुत कम हो तो। जैसा कि होम्योपैथी में होता है। लेकिन यदि ज्यादा मात्रा में इन पदार्थों का उपयोग किया जाये तो वे पानी की प्राण-ऊर्जा को कम कर देते हैं तथा उसको निर्जीव तक बना सकते हैं। होम्योपैथी में तो इसके विपरीत, ये उसकी प्राण ऊर्जा में अभिवृद्धि कर देते हैं।

2. अध्रुवीय पदार्थ:- उदाहरण चीनी का।

- 1) यह पानी में बिना हाइड्रोजन घेराव के घुल जाती है। इसके अणु पानी के अणुओं के बीच में या अंतर्कोषणुओं की खाली जगह में बैठ जाते हैं। पानी में, इसको अनुकूल पदार्थ के रूप में माना जाता है। इसलिए व्रती श्रावकों के लिए चीनी को धोवन बनाने के लिए अनुपयुक्त पदार्थ माना गया है।
- 2) साधारणतया अध्रुवीय बेंजीन अध्रुवीय ठोस मोम को घोल लेता है। लेकिन पानी ऐसा नहीं कर सकता है। लौंग व राख पानी में कलिल (colloidal) बनाते हैं। ये योनि के छिद्रों को अवरुद्ध करके अचित्त धोवन बना देते हैं।

3. एक अन्य प्रकार के वे ठोस पदार्थ होते हैं (ध्रुवीय या अध्रुवीय), जो अभक्ष्य होते हैं। आर्सेनिक, फ्लोराइड आदि इसी प्रकार के (पानी में धुलनशील) पदार्थ हैं। इनको पानी से हटाने के बाद ही वह पानी भक्ष्य श्रेणी में आयेगा।

4. धोवन बनाने के लिए निम्नलिखित अनिवार्य शर्तें हैं –

- i) ये ठोस पदार्थ, घरों में साधारणतया, उपलब्ध होने चाहिए, जैसे राख, लौंग, त्रिफला आदि।

पानी को ठंडा करने का गुणधर्म खो बैठता है।

- ii) यदि घड़ा अच्छे से रगड़ा नहीं जाता है, तो घड़े के छिद्र तो जल्दी बंद नहीं होते हैं, लेकिन उन छिद्रों में अदृश्य कार्बो पैदा होना शुरू हो जाती है। घड़े की अंदर की सतह जब कार्बो से काली होना शुरू होती है, तब तक काफी समय से छिद्रों में जमा हो चुकी होती है।

- 1.b) दूसरा तरीका है घड़े को धूप में एक दिन रखकर सूखाना तथा दो घड़े रख कर एकान्तर दिन में उनका उपयोग करना। एकान्तर दिन से सूखाने से घड़े को खाली कर, रात्रि भर सूखने के लिए उल्टा रख दिया जाए।
- 1.c) सुबह में घड़े में अचित्त पानी भरते वक्त उसमें थोड़ा सा पोटेशियम परमैंगनेट जैसा रोगाणुनाशी पदार्थ (दो बूंद) मिला देना चाहिए। यह ऑक्सीकारक पदार्थ है जो रोगाणुओं को नष्ट करता है तथा धोवन आदि पानी को पीने योग्य अचित्तावस्था में बनाये रखता है। विशेषकर बारिश के दिनों में इसके प्रयोग की अनुशंसा की जाती है।
- 1.d) एक अन्य परिस्थिति पैदा होती है जब या तो हम उपरोक्त सावधानियों से परिचित नहीं हों या घड़ों को रगड़ कर धोने और सूखाने में लापरवाही बरतते हों, तथा घड़े के छिद्रों में और उनकी भीतरी सतह पर काई जमा होने देते हैं। घड़े की सतह काली या हरी दिखाई देने लगती हैं। हमारी असावधानी से यह काई अचित्त पानी के साथ, हमारे पीने में, अंश रूप में जा सकती है। यह साधकों के लिए ऐषणीय नहीं है।
2. काई केवल संसर्ग मात्र से अचित्त पानी को भले सचित्त नहीं बनाती हो, लेकिन इससे घड़ा फिर कई प्रकार की काई या लीलन-फूलन पैदा होने का मजबूत गढ़ बन जाता है। शुरु में काई अदृश्य रह सकती है। यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती है।

इन सब संभावनाओं के मद्दे नजर, एक साधारण श्रावक को जहाँ तक बने, मिट्टी के घड़ों में धोवन या उबाला पानी नहीं रखना ही उचित है। साधारण श्रावक का मतलब उनसे है जो घड़ों को काई—मुक्त रखने की उचित सावधानियाँ नहीं बरत सकते हैं।

चूँकि उबला पानी शुरु में ऑक्सीजन मुक्त होता है, अतः घड़े की भीतरी

- i) इस पानी में ऐसे रोगाणुनाशक पदार्थ या खनिज घुले रहते हैं, जो रोगाणुओं जैसे त्रस जीवों की उत्पत्ति नहीं होने देते हैं। इसके प्रमाण के लिए, इस पानी का प्रयोगशाला में परीक्षण होना चाहिए।
- ii) या इसमें घुली हुई ऑक्सीजन हवा उस रूप में रहती है, जो त्रस जीवों को आश्रय नहीं दे सकती।

प्रश्न 15 : अधिकांश जैनी यही समझते हैं कि पानी को उबालकर पीना आगम (शास्त्र) सम्मत है। लेकिन आज के कुछ पढ़े लिखे युवकों ने यह तर्क देना शुरू किया है कि जलकायिक जीवों को, पानी को, उबालकर, पहले ही मार देने में, कोई बुद्धिमानी नहीं है। उनका कहना है कि यह तर्क आगम सम्मत भी है तथा साथ-साथ में ज्यादा व्यावहारिक, आसान, और सुगम है। यह तर्क तीव्र गति से फैल रहा है। इन दोनों विचारधाराओं में क्या वैज्ञानिकता है ? या अचित्त बना पानी का उपयोग करना मात्र एक रूढ़ि भर रह गया है ? या यह युवाओं की उस महत्वाकांक्षा का हिस्सा है, जिसके कारण वे अपनी हर क्रिया व सोच में आधुनिक दिखना चाहते हैं ? पुरानी व्यवस्था से विद्रोह करना चाहते हैं ?

यह सही है कि उबालने से जल कायिक जीव मर जाते हैं। इससे

किसी जीव की रक्षा नहीं हो रही है। लेकिन इसके पीछे रहे विवेक को समझने की कोशिश करते हैं।

जब हम कच्चे पानी का घड़ों में भण्डारण करते हैं, तो उसमें रहे जलकायिक जीव हमसे भयभीत रहते हैं। यह हर असहाय जीव की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। हमारा उद्देश्य भी उस पानी को खपाने का रहा हुआ है। यानि हम उन जीवों को मारेंगे ही।

1 इस कच्चे पानी में जीवन-मरण की शृंखला उसके स्वभाव से बराबर चलती रहती है। जब तक हम उसको काम में नहीं ले लेते हैं। अतः उस जन्म-मरण का निमित्त दोष, व्यवहार दृष्टि से हमें लगेगा ही।

2 जब इस पानी को उबाल कर अचित्त बनाया जाता है, तो उसके अन्दर रहे सभी जलकायिक जीव एक बार मारे ही जायेंगे। उसके बाद उसमें उस पानी की काल मर्यादा तक कोई भी नया जीव पैदा नहीं होगा। इस प्रकार कुल जीव हिंसा की संख्या उस पानी में काफी मात्रा में अल्प हो जायेगी, जिसको हमारे उपयोग के लिये भण्डारण करके रखा गया है।

3 इस प्रकार अचित्त और सचित्त पानी के भण्डारण में हो रही हिंसा में बहुत ज्यादा फर्क रहता है। पहले वाले प्रसंग में केवल एक बार (10 – 12 घंटे तक) असंख्य जीवों की हिंसा होती है, जबकि दूसरे प्रसंग में 10 – 12 घंटे तक हर क्षण में असंख्य जीवों की हिंसा होती रहेगी। इन दोनों प्रसंगों में त्रसकाय के जीवों की संख्या में ज्यादा फर्क नहीं रहता है।

प्रश्न 16 : यह तो आपका तर्क है। आपको उन जीवों के मरने व अन्य कष्टों का अनुभव नहीं हो सकता। यदि हम एक गिलास में कच्चा पानी भर कर उसी से पूछें कि वो हमसे क्या चाहता है ? क्या वो वैसी ही अवस्था में पी लेना या उबालकर पी लेना हमसे पसंद करेगा ?

उत्तर : यदि हमारे भीतर में सही करुणा भाव है, तो हमारे विचार से वो पानी हमसे हाथ जोड़कर विनती करेगा कि हम उसे वैसे ही छोड़ दें। किसी भी रूप में उसका उपभोग करके हिंसा न करें। क्योंकि दोनों ही विकल्पों में उसकी मृत्यु होने वाली है। आगम में कहा भी है कि कोई भी जीव मरना नहीं चाहता, सभी जीना चाहते हैं।

B) भाव हिंसा

भावना के अनुरूप हिंसा 6 प्रकार की बताई गई है। इसको लेश्या भी कहते हैं। क्रूरता के पैमाने पर इनको परिभाषित किया गया है। इसका एक उदाहरण 6 भूखे व्यक्तियों द्वारा जामुन के पेड़ को देखकर, उनमें उठी 6 तरह की भावनाओं से संबंधित है।

भावनाओं की मजबूती या क्रूरता से यह पता लगेगा कि शुभाशुभ कर्मों का बंध कितना मजबूत होगा। सबसे अतिक्रूर भावना से की हुई हिंसा से इतने कठोर कर्म का बंध होता है, कि वे निकाचित कर्म, तप द्वारा भी नहीं हटाये जा सकते हैं। उन्हें तो भोगना ही पड़ता है।

C) उद्देश्य और कर्तव्य की भावना:

- हमें यतना और विवेक रखकर उन्हीं अनिवार्य क्रियाओं को करना चाहिये जो हमारे परिवार व समाज के लिये आवश्यक हों। हमें लोभ व राग के वश होकर क्रियाएँ नहीं करनी चाहिए।
- मन में हिंसा के प्रति प्रायश्चित्त की भावना रखते हुए करुणा के भाव रहने चाहिये।
- हिंसा का सीमाकरण तथा त्याग—प्रत्याख्यान करने की भावना रखनी चाहिये।
- व्यर्थ हिंसा की पहचान करना तथा उसे हटाने के लिये प्रयासरत रहना चाहिये।

D) हिंसा के इस विश्लेषण के पश्चात् अब हम उपरोक्त प्रश्न का समाधान सही परिप्रेक्ष्य में ढूँढने का प्रयास करते हैं।

1. यह सर्वविदित है कि उबालने में, धोवन बनाने से ज्यादा हिंसा होती है। अग्निकाय में 6 ही प्रकार के जीवों की हिंसा बताई गई है। (आचारांग सूत्र, पहला श्रुतस्कंध, पहला अध्याय) धोवन तो रसोई की आवश्यक क्रिया से बन सकता है। इस सहज क्रिया में वह उपफल के रूप में निकलता है। इस प्रकार का अचित्त पानी श्रावक व साधक की अहिंसक भावना व क्रिया को प्रदर्शित करता है।
2. यदि धोवन को किसी दूसरी विधि से भी बनाना पड़े तो भी अक्रूरता व हिंसा के अल्पीकरण को प्रदर्शित करता है। यह कम हिंसक आरम्भजा हिंसा का ही एक भाग है। इस विधि में अग्निकाय की हिंसा की बचत होती है।

3. ये सभी आवश्यक क्रियाएँ आरम्भजा हिंसा के दायरे में आती हैं, क्योंकि ये जीवन को बनाये रखने के लिये जरूरी है। इससे कर्म बंध ज्यादा मजबूत नहीं होगा। सब्जी काटना आदि क्रियाएँ जानकर जरूर की जाती हैं, लेकिन इसमें हमारी विवशता व करुणा की भावना रहती है न कि खुशी की।
 4. उत्तराध्ययन सूत्र (२/३१) में स्पष्टीकरण दिया गया है कि भोजन अपने आप को जिंदा रखने के लिये किया जाता है। हम अपने व्रतों पर मजबूत रहें, इस लिये किया जाता है।
 5. चूंकि अग्निकाय से होने वाली हिंसा, शायद दिन भर में होने वाली अप्काय की हिंसा से बहुत कम होती है। अतः उबले हुए पानी को भी काम में लेने का सुझाव दिया जाता है।
 6. उबालने के लिये अग्निकाय की जगह यदि सौर ऊर्जा का प्रयोग किया जाय जो उस हिंसा को एकदम से हटाया जा सकता है। सौर हीटर को उपयोग में लेने से यह उजागर होगा कि हम हिंसा के अल्पीकरण में कितनी सजगता रखते हैं। हम आरम्भजा हिंसा को ठीक से समझ पाये हैं। अन्यथा यदि समझते हुए भी कि सौर हीटर अहिंसक है, हम उसके उपयोग में उदासीनता बरतते हैं तो जैन श्रावक होने की भावना का निरादर करते हैं। सौर हीटर के उपयोग से न केवल अग्निकाय की बल्कि वायुकाय के जीवों की विराधना से बचते हैं। खासकर वे साधक सतर्क हो जायें जो अपने लिए पानी को गर्म करने की प्रेरणा देते हैं। यदि सौर चूल्हे के उपयोग की प्रेरणा नहीं देते हैं, पानी को गर्म करने के लिये तो निश्चय ही महान हिंसा के भागी बनते हैं। ऐसा समझ में आता है।
- E)** उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर श्रुतधर साधुओं से भी पूछा गया, उनके स्पष्टीकरण इस प्रकार मिले हैं (साथ ही में देखिये “धोवन के लिये अनुपयुक्त पदार्थों के विश्लेषण” शीर्षक में ‘धोवन और अकर्मक अवस्था’ में दिये गये प्रश्न का उत्तर भी)
1. हिंसा का कारण/निमित्त: जब कच्चा पानी का घर में भण्डारण किया जाता है, तो उसमें असंख्य जन्म-मरण की श्रृंखला प्रतिक्षण लगातार चलती रहती है। एक प्रकार से जन्म-मरण का व्यवहार दृष्टि से मैं निमित्त बनता हूँ।
 2. अतिरिक्त हिंसा / विराधना: जब भी पानी के घड़े से हम गिलास द्वारा

3. हिंसा की मात्रा का सीमाकरण: जब धोवन या अचित्त पानी पीने का व्रत लिया जाता है तो पूरे दिन के लिये एक निश्चित मात्रा को ही अचित्त बनाया जाता है। यह एक अतिरिक्त लाभ है अचित्त पानी पीने का, व्रत लेने वालों को।
4. बाहर जाना: जब व्रती बाहर जाता है तो वह साधारणतया मिलने वाला कच्चा पानी तो पी नहीं सकेगा। अतः जगह-जगह पानी पीने से बच जायेगा। हो सकता है, उसे थोड़ा परिषह सहन करने का लाभ भी मिल जाये। वो वापस घर लौटकर ही अपनी प्यास बुझा पायेगा। व्रत और सीमाकरण का पूरा लाभ मिलने की सम्भावना रहती है।

उत्तर : पहले भाग का उत्तर ऊपर दिया जा चुका है। अचित्त पानी के उपयोग से निम्नलिखित फायदे हैं –

1. एक श्रावक जानता है कि अचित्त पानी सब जगह नहीं मिलता है। अतः इसका व्रत लेने से श्रावक सोच समझकर एक सहन करने की क्षमता उत्पन्न करता है, जिससे सम्भावित कठिनाइयों को समभाव से सहन कर सके। अतः यह व्रत तप की श्रेणी में आता है।
2. इस व्रत से व्यक्ति की इच्छाओं का निरोध होता है। इन्द्रिय निग्रह होने से व्रत की सार्थकता बढ़ जाती है।
3. व्रती कितने घड़ों / पिरंडों का पानी पीयेगा, इस पर नियंत्रण हो जाता है इसका भी एक अतिरिक्त प्रत्याख्यान किया जा सकता है इस प्रकार श्रावक को सीमाकरण का फायदा मिल जाता है।
4. इससे स्वाद पर भी विजय प्राप्त होती है। क्योंकि उबालने या धोवन बनाने से पानी का स्वाद बदल जाता है।

इस प्रकार इससे राग पर विजय प्राप्त करने में मदद मिलती है।

प्रश्न 18: आप धोवन को कम हिंसक समझते हैं, लेकिन कभी—कभी धोवन में से बुलबुले निकलते देखे गये हैं। यानि खमीर बनने के कारण यह तो ज्यादा हिंसक बन जाता है। खमीर बनने से धोवन स्वास्थ्य के लिये भी हानिकारक हो जाता है। अतः इसमें बुद्धिमानी नहीं है कि धोवन बनाने की रूढ़ी से चिपके रहें।

उत्तर : हवा के बुलबुले दो कारणों से निकल सकते हैं। यदि धोवन बनाते वक्त हवा की पानी में घुलनशीलता कम हो जाती है, तो अतिरिक्त हवा उस पानी में से बुलबुलों के रूप में निकलेगी। दूसरा कारण हो सकता है कि खमीर पड़ने के कारण उसमें से कार्बन-डाइ-ऑक्साइड बुलबुलों के रूप में निकले।

यदि असावधानी के कारण धोवन में खमीर उठने की स्थिति बनती है (यानि उसमें आटा या अन्य कार्बनिक पदार्थ की मात्रा ज्यादा होने से), तो यह जरूरी नहीं है कि वह धोवन जहर बन गया हो या स्वास्थ्य के लिये हानिकारक बन गया हो। जलेबी, डबल रोटी आदि खमीर डालकर ही बनाये जाते हैं। इनको पूरी दुनिया खाती है। यदि अज्ञानवश हम ऐसे धोवन को जहर या स्वास्थ्य के लिये अभक्ष्य कहने का ढिंढोरा पीटते हैं, तो क्या हम धोवन के प्रति घृणा फैलाने का पाप तो नहीं कर रहे हैं?

1. फिर भी, आधुनिक जमाने में धोवन बनाने की प्रक्रिया को ज्यादा स्पष्ट मात्रा में नियंत्रित कर सकते हैं।
2. यदि राख या वैसे अन्य विजातीय पदार्थ काम में लेते हैं, तो खमीर की सम्भावनाएँ खत्म हो जाती हैं।

प्रश्न 19 : घड़े में भण्डारण किये हुए कच्चे जल में हो रही असंख्य जन्म – मरण की श्रृंखला के लिये मैं क्यों जिम्मेदार हूँ? यह तो पानी का अपना स्वभाव व भाग्य है। जिस तरह हमारे शरीर में बैक्टीरिया आदि जीवाणु का पूरा जंगल (Flora-Fauna) भरा पड़ा है, (खासकर पेट में), तो क्या चयापचय या अन्य आदतन होने वाली क्रियाओं में, प्रतिक्षण हो रही अनन्त जीवों की हिंसा का मैं जिम्मेदार हूँ? क्या आगमों में पेट में या घड़े में हो रही हिंसा की जिम्मेदारी मेरी बताई गई है?

उत्तर : इसके 3 पक्ष समझ में आते हैं।

1. हमारे शरीर में वनस्पति आदि प्राणी समूह हमारे शरीर की स्वतः होने वाली क्रियाओं पर निर्भर करते हैं। हमारा उन क्रियाओं पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। जीवन चलाने वाली इन चयापचय, श्वास लेने

आदि क्रियाओं से होने वाली हिंसा को आगम में अशक्य परिहार कहा गया है। इसमें कर्मबंध सबसे कमजोर होता है। (प्रथम श्रेणी का)।

2. लेकिन पानी को सचित या अचित अवस्था में संग्रहीत करना तो हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। ये क्रियाएँ घर — गृहस्थी चलाने की जरूरत से संबंधित हैं, तथा हमारे विवेक से प्रभावित होती हैं। ये आरम्भजा हिंसा की श्रेणी में आती हैं। इनसे जो कर्म बंध होता है, उसकी मजबूती दूसरी श्रेणी की होती है।
3. हमारा विवेक बताता है कि हम लगातार प्रयासरत रह कर, व्यर्थ में हो रही हिंसा को कम करें या हटा दें। यही भावना हमें धोवन आदि अचित पानी के उपयोग के लिये प्रेरित करती है। उन मर रहे जीवों के प्रति उमड़ रही करुणा या विवशता, हमारी आंतरिक शक्ति को बढ़ाती है, तथा चित्त शुद्धि में सहायक बनती है। अन्यथा व्यक्ति प्राकृतिक संसाधनों के प्रति लापरवाह बनकर अन्धाधुन्ध दोहन करेगा। इस प्रकार वह पर्यावरण संतुलन का महान दुश्मन बन जायेगा।

प्रश्न 20 : एक गिलास पानी को अपने उपयोग के लिये सीधा नल से लिया जा सकता है। संभव हो तो गरने आदि से छानकर सूक्ष्म त्रस जीवों की रक्षा की जा सकती है। इस व्यवस्था में पानी का संग्रहण नहीं करना पड़ेगा, जिससे पूर्व प्रणाली में घड़े में हो रही हिंसा से बच सकेंगे।

उत्तर : उपरोक्त व्यवस्था में नल का पानी या तो छत पर रखी टंकी या अन्य तालाब से आता है। व्यक्ति जानता है कि उसने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि जब भी जरूरत पड़ेगी, तो नल से पानी उपलब्ध हो जायेगा। इसका एक मतलब यह हुआ कि पूरा पाइप आदि का तंत्र उसके लिये संग्रहण का काम कर रहा है। यदि घड़ों में भंडारण करते हैं तो वे श्रावक परिमाण रखने वाले गृहस्थ की श्रेणी में आ जाते हैं। यदि जागरूकता नहीं है तथा उसके लिये अपरिमित जल हर समय उपलब्ध रहता है तो वह गृहस्थ अव्रति और अपरिमाण वाले श्रावक की श्रेणी में आ जाता है। आगमानुसार परिग्रह परिमाण करने वाले गृहस्थ को हिंसा का दोष कम लगता है।

इसके अलावा घड़े में संग्रहण न करके नल से सीधा पानी लेने वाला गृहस्थ पूरे पाइप तंत्र में रहे हुए अपरिमित पानी की हिंसा का भागी बनता है, क्योंकि उस तंत्र के साथ उसका ममत्व और स्वामित्व का भाव बना हुआ है। यह स्थिति कमोबेश सार्वजनिक नलों आदि के लिये भी लगती है, यदि अलग से भण्डारण की व्यवस्था नहीं है।

प्रश्न 21 : हम लोग **एक्वा-गॉर्ड** को पानी की सफाई के लिये काम में लेते हैं। उसमें कार्बनिक पदार्थ छानने की बत्ती आदि रहने से छना हुआ पानी बैक्टेरिया और नुकसानदेही पदार्थों से मुक्त रहता है। इस प्रक्रिया से पानी तो अचिंत बन ही जाता है?

उत्तर : एक्वा गॉर्ड केवल त्रस जीव तथा वनस्पतिकाय के सूक्ष्म जीव हटा देता है लेकिन अप्फायिक जीवों को पूरा निर्जीव बना सके, जैसा कि धोवन बनाने से होता है, संभव नहीं लगता है। इसमें न तो पानी की योनियों के बीच ज्यादा रगड़ होती है और न कोई अतिरिक्त विजातीय पदार्थ मिलाया जाता है। न तो पानी की काया को छाना जाता है और न घुली हवा को हटाया जाता है। ऑक्सीजन तो वैसे ही मूलक अवस्था में रह जाती है।

इस प्रकार सैद्धांतिक रूप से वह पानी सचित्त ही रह जाता है। व्यवहार से यह सचित्त और अचित्त पानी का मिश्रण पैदा करता है। उबले, धोवन और नल पानी की “आभा-फोटोग्राफी” इस व्याख्या तथा विश्लेषण को सही सिद्ध करती है।

प्रश्न 22 : पानी की किल्लत के कारण, मकानों में बोरिंग के पानी को म्यूनिसीपेलिटी के पानी के साथ मिला दिया जाता है। यह दूसरा पानी अखिर में नदी या झील से आता है। अतः इस मिश्रण में स्वकाय शस्त्र द्वारा पानी स्वतः अचित्त बन जाता है।

उत्तर : आचारांग सूत्र के अनुसार दो अलग प्रकार के पानी के मिश्रण करने से पानी अचिन्त बन जाता है। लेकिन इसमें 2 बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

1. पानी के पूर्णतया मिश्रित होने की सुनिश्चितता। ऐसा न हो तो दोनों पानी साथ – साथ में, कुछ किनारों में अलग-अलग रह सकते हैं, बिना एक दूसरे पर आक्रमण या शस्त्र क्रिया किये। व्रती श्रावकों के लिए यह शंकास्पद होता है।
2. इस अचित पानी की काल-मर्यादा भी हमें मालूम नहीं रहती है। यह परकाय-शस्त्र द्वारा बने धोवन से भिन्न प्रकार का पानी है। विज्ञान के हिसाब से यह काल-मर्यादा, मिश्रित पानी में पाये जाने वाले खनिजों की मात्रा और प्रकार पर निर्भर करती है। अवसीमा से यदि कम मात्रा में ये खनिज हैं, तो पानी के शरीर के सभी छिद्रों को बंद करने में ये सक्षम नहीं रहेंगे। अतः व्रती के लिए यह, मिश्र पानी की तरह रहा हुआ

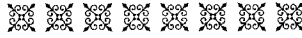
प्रश्न 23 : विनम्रता के साथ कहना पड़ रहा है कि जो रुढ़िग्रस्त **साधक लोग पौंछे का पानी** ले लेते हैं, उस पद्धति को निरुत्साहित करना चाहिए, खासकर स्वास्थ्य और स्वच्छता के दृष्टिकोण से। यह प्रथा अजैन समाज का ध्यान खींचती है और उनमें हमारे साधकों के प्रति घृणा के भाव पैदा करती है। वे हमारे समाज को गंदा, अस्वच्छ, घिनौना और घृणास्पद समझने लगते हैं। विज्ञान के हिसाब से भी ऐसे पानी को किसी भी प्रकार से साधकों के लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता है।

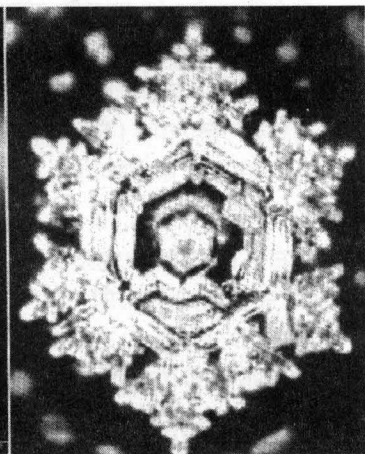
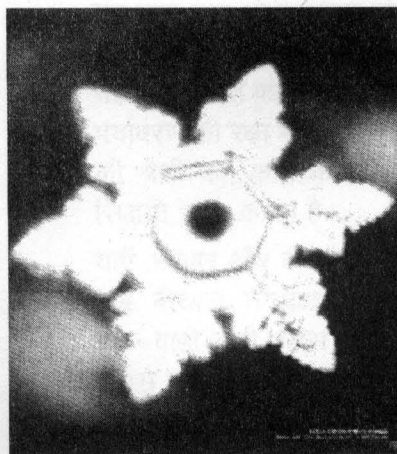
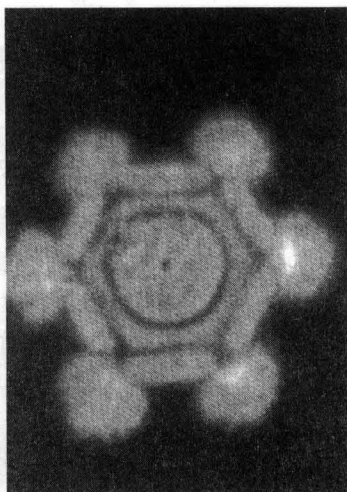
यहाँ अकबर और बीरबल का वह उदाहरण उपयुक्त नजर आता है, जब बीरबल ने बादशाह को एक गिलास वो पानी पिला कर वाह—वाही लूटी, जिस पानी को अकबर ने सबसे बदबूदार बताकर उससे घृणा की थी। बीरबल ने उसी गंदे पानी को निथार कर, छान कर तथा संशोधित कर सुगन्धित बना दिया था। शुद्धता का, कार्य की आवश्यकता के अनुरूप सुमेल बैठा देने से, घृणा को प्रशंसा में बदल देना संभव है। वास्तव में घृणा तो हमारे पूर्व के विचार व दुराग्रह से ही ज्यादा प्रभावित रहती है, न कि वस्तु निहित होती है।

$$\begin{array}{c} \text{---} \\ \diagdown \quad \diagup \\ \text{---} \end{array} \quad \text{(43)} \quad \begin{array}{c} \text{---} \\ \diagdown \quad \diagup \\ \text{---} \end{array}$$

अध्याय में मिलता है। सुबुद्धि नामक प्रधान अपने राजा को समझा रहा था कि पदार्थ—पुद्गल की पर्याय बदलती रहती है। यह उसका स्वभाव है। यानि पुद्गल के गुण बदलते रहते हैं। जब राजा को ऐसा कुछ समझ में नहीं आया तो सुबुद्धि ने किसी प्रत्यक्ष उदाहरण से समझाना उचित समझा। कुछ महीने बाद, उसने शहर की गंदी नाली, जिसमें शहर का गंदा पानी इकट्ठा होता था, के पानी को निथार कर, साफ व संशोधित/संस्कारित कर के राजा को अनजाने में पिला दिया। राजा उस पानी की उत्कृष्ट मधुरता चखकर पूछने लगा कि इतना स्वच्छ और मीठा पानी कौन से कुँए से लाया गया है।

इस प्रसंग से सुबुद्धि यह आगमिक तथ्य आसानी से समझा सका कि पुद्गल की पर्याय व गुण बदलते रहते हैं। इस स्वभाव के कारण अमनोज्ञ पदार्थ भी मधुर और मनोज्ञ बन जाते हैं।





a) **साधारण परिभाषा:** 'गोम्मटसार' के जीव-काण्ड (दिगम्बर जैन समाज का धार्मिक ग्रन्थ) के अनुसार जैन दर्शन में 'जल' शब्द निम्नलिखित 4 प्रकार से प्रयोग में लिया गया है:

जल जीव: बाटे बहती आत्मा जो जलजीव बनेगी या जलजीव से आई है।

जल कार्यालय: सजीव जल।

1. योनि (प्रज्ञापना, नवमा योनि पद)

(i) यह वो जन्म स्थान है, जहाँ पर आत्मा भौतिक शरीर में प्रवेश करती है। अपने नामकर्म के उदय के अनुसार जीव अपनी योनि का चयन करता है। तथा सर्वप्रथम उस योनि में उपलब्ध पदार्थों से अपने संपूर्ण जीवन में होने वाली घटनाओं की रूपरेखा बना लेता है।

जल की 7 लाख योनियाँ होती हैं, जहाँ अप्काय के जीव च्यव कर विकसित हो सकते हैं। जैसे बरसात का पानी, ओस का पानी, घड़े का पानी, सागर का पानी, कुएँ का पानी, झील का पानी, कोहरे का पानी, हिम—नद, झरना, बर्फ, ओले, बादल आदि का पानी इत्यादि।

वे तीन प्रकार की होती है ।

1. **सचित्त**: जीव-प्रदेशों से संबंध योनि सचित्त योनि कहलाती है।

2. **अचित्त**: जो योनि जीव रहित हो, वह अचित्त योनि है, और

3. मिश्रयोनि : जो योनि अंशतः जीव प्रदेश सहित और अंशतः जीव रहित है, यानि सचित्त और अचित्त उभय रूप हो, वह सचित्ताचित्त योनि कहलाती है।

(v) वर्षा काल में घर की छत पर लगे खपरेल के अंत भाग से टपकने वाला पानी नीब्रोदक कहलाता है। रजकण, धूम का कालापन तथा दिनकर के आतप से तप्त नीब्र के संपर्क से वह जल अचित्त हो जाता है। नीब्रोदक, वर्षा रूप होने के अंतर्मुहूर्त पश्चात् ग्रहण करने वाले नियम साधकों के लिए बताया गया है। बरसती वर्षा में नीब्रोदक का जल मिश्र होता है। वर्षा के रुक जाने के पश्चात् लिए गये नीब्रोदक में राख डाली जाय, तो वह काफी समय तक पुनः सचित्त नहीं होगा। वैसे राख से पानी को अचित्त बनाना ज्यादा सुगम और निरापद है, क्योंकि वह बर्तनों को मांजने के काम भी आती है। इस पर ज्यादा खुलासा अन्यत्र दिया गया है।

3. अप्काय की अचित्तता चार प्रकार से होती है —

(i) द्रव्यतः स्वकाय या परकाय से जो पानी अचित्त होता है, वह **द्रव्यतः** है।

(iii) **कालतः** स्वभावतः वायु क्षय होने पर जो पानी अचित हो जाता है, वह कालतः है। अतिशय ज्ञानी ही इस बात को जान सकते हैं, छद्मस्थ नहीं।

(iv) **भावतः** वर्ण, रस आदि के बदल जाने से, जल भावतः अचित्त बन जाता है।

पर निर्भर करता है, क्योंकि वे उन अणुओं को जिह्वा के विभिन्न कोषाणुओं के साथ क्रिया करने में सक्षम बनाते हैं। जिह्वा की सतह पर विभिन्न प्रकार के गुच्छ, जो कि समान प्रकार के कोषाणुओं से बने होते हैं, उसकी विभिन्न जगह पर बने होते हैं। हर गुच्छा/समूह एक विशेष प्रकार का स्वाद, उस रासायनिक क्रिया के अनुरूप समाचार को मस्तिष्क के कोषाणुओं को प्रेषित करके पैदा करता है। मस्तिष्क के कोषाणु, उन विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को पहचान कर, विभिन्न प्रकार के स्वाद का आभास कराते हैं। इस तरह जैन – विज्ञान और आधुनिक विज्ञान द्वारा मान्य तरीकों में आश्चर्यजनक रूप से समानता है।

4. सुगन्धः

विज्ञान के अनुसार गंध के पुद्गल/अणु हवा में तैरते हुए हमारे नाक की अन्दरूनी सतह पर पहुँचते हैं। ये अणु उस पदार्थ विशेष द्वारा हवा में छोड़े जाते हैं। **वाष्पशील** पदार्थ उनको बहुत तीव्र गति से छोड़ते हैं, जब कि ठोस या अवाष्पशील पदार्थ उनको बहुत धीमी गति से आस-पास के वातावरण में छोड़ते हैं।

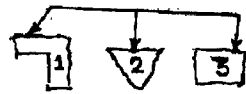
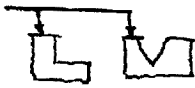


fig 1a : गंध अणुओं की आकृति का नाक की अंदरूनी सतह की प्रतिमुखी बनावट के अनुरूप, एक जोड़ी के रूप में बैठ जाना (Snug-fit)

5. स्पर्श गुण

जैन विज्ञान 8 प्रकार के स्पर्शों को मानता है, जिन की व्याख्या निम्न प्रकार है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार पदार्थ का हर अणु या परमाणु का अपना **विद्युत आवेश, प्रकम्पन व विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र** होता है। इनका प्रकटीकरण उनके **तापक्रम और विद्युत-आवेश**, के रूप में दिखाई देता है। ये दोनों, उस अणु/परमाणु के दो स्पर्श जोड़ों के द्योतक हैं।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, स्पर्श गुण के 4 जोड़े माने गये हैं। उपरोक्त दो जोड़े ज्यादा मूलभूत (बुनियादी) माने जाते हैं। यथा शीत-ऊष्ण और धन-ऋण विद्युत आवेश। इन दो जोड़ों से दूसरे दो स्पर्श जोड़े प्रकट होते हैं, यथा घनत्व से संबंधित 'हल्का-भारी' स्पर्श जोड़ा और कठोरता से संबंधित 'मधुर-कठोर' स्पर्श जोड़ा।

अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि अणु की प्रकम्पन ऊर्जा (ताप), विद्युत ऊर्जा (आवेश) और उसका विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र (जीवनाधार ऊर्जा), तीनों सम्मिलित रूप से उपरोक्त अंतिम दो स्पर्श—जोड़ों को प्रभावित करते हैं।

5.1 जीवित पानी की स्पर्श इंद्रिय और उसकी वैज्ञानिक व्याख्या

पानी के केवल एक ही इन्द्रिय होती है, जिसको स्पर्श-इन्द्रिय कहते हैं। बाकी की चारों इन्द्रियाँ, यानि स्वाद, गंध, चक्षु और श्रोतेन्द्रिय पानी के जीव के नहीं होती हैं। जैन दर्शन के अनुसार किसी भी प्राणी के 4 से 8 प्रकार की स्पर्श-इन्द्रियाँ हो सकती हैं। जलकायिक जीवों के आठों प्रकार के स्पर्श गुण पाये जाते हैं।

यानि **जल जीव** आठों प्रकार के स्पर्शों का अनुभव करने की **क्षमता** रखता है। उसकी खुद की **स्पर्श इंद्रिय** है, जो आस-पास के वातावरण में आठों प्रकार के स्पर्श को पहचानने की, अनुभव करने की क्षमता प्रदान करती है। दूसरी ओर चूंकि वह ऐसे परमाणुओं के स्कंध से योनि रूप बना हुआ है जो स्वयं आठों स्पर्श रखते

इंद्रियों से तथा बाह्य उपकरणों से भी अग्राह्य ही रहते हैं। श्वासोच्छ्वास, कार्मण शरीर, भाषा और मन के पुद्गल स्कंध इसी श्रेणी के होते हैं।

ये स्कंध 23 में से पहली 14 प्रकार की पुद्गल वर्गणाओं के ही होते हैं (गोम्मटसार, जीव कांड, भाग—2) जबकि श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार ये कुल 26 में से प्रथम 16 वर्गणाओं के स्कंध होते हैं (5 वाँ कर्म ग्रन्थ, गाथा 75—76)।

सूक्ष्म-परिणति के बाद ये स्कंध एक ऐसी अवस्था में रहते हैं, जो आधुनिक युग की “ऊर्जा” की अवस्था के समतुल्य होती है। (संदर्भ 1, 2)

क्रमशः 15 वीं या 17 वीं वर्गणा में स्कंध का घनत्व यानि सूक्ष्म परिणत स्कंध में, परमाणु प्रति इकाई जगह (इकाई जगह के परमाणु) एक ऐसे विशिष्ट स्तर पर पहुँच जाते हैं, जहाँ उनका आपस में शायद एक प्रकार का विशिष्ट बंध हो जाता है। इस बदलाव को **परमाणु स्थूल-परिणति** कहा जाता है। इससे यह स्कंध **बादर** बन जाता है। यानि एक **ऊर्जा-स्कंध**, एक प्रकार के कण-स्कंध में परिवर्तित हो जाता है तथा उसमें भार गुण **“गुरु-लघु”** स्पर्श **प्रकट** होता है।

15 वीं या 17 वीं वर्गणा के बाद की वर्गणाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार का स्कन्ध-घनत्व होगा, जिसको “लघु-गुरू” (हल्का-भारी) स्पर्श गुण कहा गया है। तथा आपसी बंधन के जोड़ों (गांठों) में भिन्न-भिन्न प्रकार की “मजबूती” का गुण प्रकट होता है, जिसको “मृदु-कठोर” (कोमल-कठोर) कहा गया है। यह इस विशिष्ट जोड़ के बंधन का लचीलापन या कठोरपना हो सकता है। शायद इसके कारण उस स्कन्ध में यानि पदार्थ में कोमलता का गुण प्रकट होता है।

स्थूल-परिणति (संकुचन से जुड़ना) के पश्चात् ये पुद्गल-स्कन्ध **चाक्षुक** बन जाते हैं तथा उन में **भार गुण** प्रकट हो जाता है। इन में शुरु के 4 स्पर्श गुण बढ़ कर अब 8 स्पर्श-गुण हो जाते हैं। (दिगम्बर मान्यता के अनुसार पदार्थ में 4 आधारभूत स्पर्शों के साथ 4 और आनुषांगिक स्पर्श गुण विकसित हो जाते हैं। इन आनुषांगिक स्पर्शों की विकास कथा निम्न प्रकार की बताई गई है)। संदर्भ 1, 2।

1. पुद्गलों में रुक्ष स्पर्श की बाहुल्यता से लघु (हल्कापन) स्पर्श गुण का विकास होता है। यानि ऋण आवेशों के बाहुल्य (अतिक्रमण) से

स्कंध 'हल्कागुण' प्राप्त करता है।

2. पुद्गल—स्कंध में स्निग्ध स्पर्श की अधिकता से गुरु (भारीपन) स्पर्श गुण का विकास होता है। यानि धनात्मक आवेशों की बाहुल्यता (अतिक्रमण) से स्कंध में **“भारीपन”** का गुण प्रकट होता है।
3. स्कंध में शीत और स्निग्ध स्पर्श की बाहुल्यता से **“मृदु”** स्पर्श का विकास होता है। दूसरे शब्दों में शायद यह कहा जा सकता है कि स्कंध अपने **“धन”** आवेश और शीतलता के आधिक्य के कारण **“नर्म”** गुण प्राप्त करता है।
4. स्कंध में ऊष्ण और रुक्ष स्पर्श की बाहुल्यता के कारण **“कर्कश”** स्पर्श का गुण प्रकट होता है। यानि कहा जा सकता है कि गर्म पुद्गलों के साथ ऋणात्मक आवेशों के अतिक्रमण से **‘कठोर’** स्पर्श पैदा होता है।

स्पर्श गुणों के इस प्रकार के परिवर्तनात्मक विधान से एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण व दिलचस्प आधार/नियम प्रस्तुत हो रहा है। सूक्ष्म स्कंधों, खासकर भारहीन कणों, जैसे न्यूट्रीनों (एक प्रकार का फरमिओन) और 'फोटोन' (एक प्रकार का बोजोन) जैसे आधुनिक विज्ञान के "अंतर्परमाणुओं" (Sub-atomic) के गुणों को समझने के लिए यह विधान काफी उपयोगी हो सकता है।

इनके संघटन और विघटन के कई विशिष्ट नियम जैन शास्त्रों में बताये गये हैं। उनको आधुनिक विज्ञान की भाषा में समझने और परिभाषित करने की आवश्यकता है।

नोट:- सूक्ष्म - परिणति की क्रिया पुद्गल-स्कंध के संकुचन गुण से संबंधित समझ में आती है। इससे स्कंध का आयतन एकदम घट जाता है तथा सघनता के क्रांतिक (critical) बिन्दु पर एक विशिष्ट घनत्व/भार गुण का प्रकट होना समझ में आता है। स्थूल-परिणति से उसमें **बादरपना** प्रकट हो जाता है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार ऐसा समझ में आया है कि स्पर्श गुण, स्कंध के प्रकम्पन और विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र पर आधारित है। ये दोनों स्कंध के प्रकम्पन की आवृत्ति और प्रकम्पन की पद्धति (mode) पर निर्भर करते हैं।

5. कठोरता (hardness)

साधारणतया कठोरता का गुण पदार्थ की ठोस अवस्था से ही संबंधित है। तब यह **कर्कशता** का गुण भाप या पानी जैसे तरल पदार्थों में कैसे

6. संस्करणः

पानी को संस्कारित (Charactarisation) करने की प्रक्रिया में, मधुमक्खी के छत्तेनुमा पानी की काया पर परते चढ़ती हैं। जीवित पानी के बारे में विकसित सिद्धांत के अनुसार यह संरचना कार्बन-प्याज (carbon-onion) जैसी बहुपरतीय होती है। इसीलिए इस काया की बनावट बहुत मजबूत हो जाती है। तब यह संरचना इतनी आसानी से नहीं टूट सकती है। पानी की काया/योनि, संस्कार-प्रक्रिया में 'कठोरतर' होती जाती है। जब कि साधारण सचित पानी 'कठोर' और अचित पानी (जिसमें जीवित योनि-बनावट नहीं पायी जाती है) अपेक्षाकृत 'कोमल' होता है। यह परतों वाली संरचना या तो भौतिक काया में हो सकती है या केवल संस्कारों (गुणों) की परतों के रूप में भी हो सकती है। दूसरी स्थिति में जल-जीव की काया के आकार या परिमाण में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

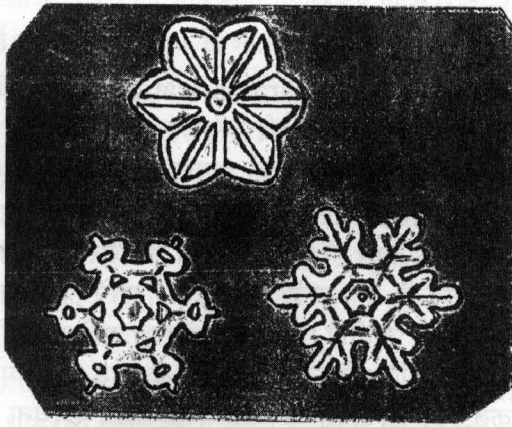
7. भावावेशों का प्रभाव:

जीवित पानी (सचित्त जल) हमारे भावावेशों या संगीत से प्रभावित होता हुआ पाया गया है। डॉ मसारू ईमोटो, जापान ने पानी पर कई प्रयोग, इस दिशा में किये हैं। वैसे पानी के कुछ चित्र, जिस को मानव की विचार तरंगों या लयबद्ध संगीत के प्रभाव क्षेत्र में कुछ समय तक रखा गया था, यहाँ दिये गये हैं। उन क्रियाओं का किस प्रकार अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ता है, ये दर्शाते हैं। (चित्र 2 से 6) संदर्भ: 4।

संदर्भ:

1. "अनंतशक्ति संपन्न परमाणु से परमात्मा", आचार्य श्री कनकनंदीजी म. सा., धर्म, दर्शन, सेवा संस्थान, उदयपुर।

2. "वर्गणा विज्ञान", नारायण लाल कच्छारा, अर्हत-वचन, अक्टुबर-दिस. 2008, पृ. 03-24, कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर।
3. Living water-cells and Working Principle of Homeopathy, Jeoraj Jain, Arhat Vachan, Jan Jun 2007, p. 95-102,
4. 'नया ज्ञानोदय', भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, मार्च 2004, प्रभु नारायण मिश्रा में प्रकाशित चित्र)



चित्र 2 : हिम लव/परतों की विभिन्न आकृतियाँ



चित्र 3
निर्जीव पानी (कोई रवा नहीं)

iv) निर्जीव पानी पीने के फायदे:

- 1 10 लीटर पानी में 50g गोबर की राख घोलने से अच्छा धोवन बन जाता है। 24 मिनट बाद निथार और छान कर उस अचित पानी को पीने के काम में लिया जा सकता है।
- 2 राख से अभिभूत पानी की P^h संख्या 7 से ज्यादा (यानि क्षारीय होना) होती है। इससे शरीर में जमा अम्लीय कचरा साफ करने में मदद मिलती है।
- 3 राख से उपचारित पानी ज्यादा शुद्ध और पीने लायक पाया गया।
(जामनगर में गुजरात के वाटर सप्लाय और सिवरेज बोर्ड द्वारा जारी टेस्ट रिपोर्ट, 24 अप्रैल, 2010)
- 4 **बैंगलोर** के स्कूलों में किये गये परीक्षणों में भी **राख घुला पानी** (कोलोइड), पूर्व के पानी से ज्यादा साफ और **बैक्टेरिया विहीन** पाया गया। ऐसा पानी पीने से शरीर में मूलकों की मात्रा कम हो जाती है। यानि यह **डीआक्सीडेंट** की तरह काम करता है। चूंकि यह क्षारीय जल होता है, इसलिए एसिडिटी की शिकायत (अम्लीयता) कम हो जाती है। अतः निथार और **छान कर** घर में ऐसा ही पानी पीने का इन्तजाम करना चाहिए।

इ) अहिंसक जीवन शैली और पर्यावरण संरक्षण:

- i) उपरोक्त आभामंडलीय फोटोग्राफी से यह पक्का **सिद्ध** हो गया है कि पानी **सचित्त/अचित्त** रूप में एक **जलकायिक** जीव है। आज हम इस स्थिति में हैं कि यंत्रों द्वारा यह पहचान सकते हैं कि कोई पानी सचित्त अवस्था में है या निर्जीव अवस्था में है। अतः विवेकशील मनुष्य का यह कर्तव्य बनता है कि उसके साथ **सम्मान** की दृष्टि रखें।

हमारे अहिंसक जीवन दर्शन 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' का तकाजा है कि इसके जीवन की रक्षा करने का भाव रखकर, हम पर्यावरण संरक्षण में अपना सहयोग करें। जीव-रक्षा का सीधा-साधा मतलब है कि हम अपने दैनिक जीवन में करुणापूर्वक, पानी का दुरुपयोग नहीं होने दें। हर समय जागरूक रहकर, इसके मितव्ययी बने। अपने विवेक द्वारा इसका अपव्यय बिल्कुल न होने दें। इसके अल्पीकरण के संकल्पों पर विशेष जागरूकता अभियान चलायें।

ii) मितव्ययता:

जैसे घी का उपयोग करते वक्त यह ध्यान रखा जाता है कि एक बूंद भी व्यर्थ नीचे नहीं गिरे या फालतू बहकर न चला जाय, वैसी ही मानसिकता जल की बूंद के प्रति भी समाज में विकसित की जाये। खास कर स्कूली बच्चों व कृषि तथा उद्योग में लगे व्यक्तियों को इसका महत्व, विशेष प्रशिक्षण द्वारा, समझाया जाये।

iii) कुछ साधारण विवेक के गुर :

- 1 पानी से धोते वक्त (शरीर, बर्तन व वस्तुओं) बहते पानी के बजाय मग या हाथ के चुल्लु का उपयोग करें तथा प्रत्येक बार पानी की मात्रा कम से कम लें।
- 2 बहता पानी (जैसे सिंचाई आदि) : नल या पाइप का व्यास (छोटे छेद वाला) कम से कम रखें। तथा नल को भी कम से कम खोलें।
फव्वारे या ड्रिप विधियों से खेती में बहुत पानी बचाया जा सकता है।
- 3 जल संरक्षण में पुनरुपयोग व्यवस्था का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसका उपयोग करने के लिए, प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे पर्यावरण संरक्षण में सहायता तो मिलेगी ही, साथ ही साथ में, निकट भविष्य में आने वाली जल समस्या से भी निजात मिल सकेगी।

उपरोक्त शोध के आलोक में हमें गंभीरता से सोचना चाहिए कि अप्रकायिक जीवों के प्रति हम समाज में किस प्रकार करुणा का भाव पैदा कर सकें। नहीं तो हमारी उदासीनता या लापरवाही से कहीं आने वाली पीढ़ी ही, पानी की कमी के कारण, पृथ्वी से विलुप्त होने के कगार पर न आ जायें।



जल एक रंगहीन, गंधहीन, स्वादरहित एवं पारदर्शी पदार्थ है, यह दो भाग हाइड्रोजन तथा एक भाग ऑक्सीजन के रासायनिक संयोग से बना द्रव्य है, यह हर प्राणी के जीवन के लिए अनिवार्य पदार्थ है। चूँकि यह एक अत्यंत शक्तिशाली घोलक है, जीवों की कोशिकाएँ इसके सहारे महत्वपूर्ण पोषकों, खनिजों व रसायनों को घोल के रूप में ग्रहण करके, जैविकीय प्रक्रियाओं को चालू रखने में सफल रहती हैं। जल के कारण ही चयापचय क्रियाएँ हो सकती हैं तथा व्यर्थ पदार्थों का शरीर से निष्कासन हो पाता है।

महत्त्वपूर्ण गुण :

जल का हिमांक 0°C

जल का क्वथनांक 100°C

इसका विशिष्ट घनत्व 1.0 है (4°C)

इसका प्रति लीटर वजन 1 किलोग्राम है।

पृथ्वी पर आज भी उतना ही जल है, जितना कि पृथ्वी के बनने के समय पर था, केवल उसकी गुणवत्ता में बदलाव होता रहा है।

यदि पानी एक अणु वाली संरचना का होता तो वह कमरे के तापक्रम पर गैस की अवस्था में पाया जाता। उसका हिमांक -120°C होता और क्वथनांक -100°C (बजाय $+100^{\circ}\text{C}$)। उस स्थिति में पृथ्वी पर कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता।

चूँकि इसका अणु द्विपोलर होता है, अतः वह हाइड्रोजन-बॉन्ड के माध्यम से एक जालीनुमा त्रिआयामी संरचना के रूप में उपलब्ध होता है। ठंडा होने पर यह सुन्दर पंचभुजी या षष्ट-भुजी बर्फ के दाने बनाता है।

0°C पर, पानी में से प्रति ग्राम 32 केलोरी ताप निकालने से बर्फ बनता है तथा 100°C पर, पानी 100 केलोरी ताप प्रति ग्राम सोख कर भाप बन जाता है। भाप बनने पर उसके आयतन में 530 गुणा विस्तार होता है, यानि 1cc पानी 530 cc भाप बन जाता है। भाप को दबाने से उसकी ऊर्जा बढ़ जाती है, जिसका उपयोग करके इंजन या टरबाइन चलाये जाते हैं।

हवा में पानी का **सतही-तनाव** 20°C पर 7.28 dyn/cm होता है, इसी दबाव के कारण पानी की बूंदें गोलाकार रूप धारण करती हैं।

पानी में कई तरह के पदार्थ घुल सकते हैं। समुद्रों के या भूतलीय जल में कई मिनरल्स घुले रहते हैं। इसमें से कुछ पदार्थ स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हो सकते हैं, तो कुछ हानिकारक भी होते हैं, आर्सेनिक जैसे तत्त्व तो जानलेवा भी होते हैं, अतः पीने के पानी की गुणवत्ता की जाँच करवाना आवश्यक होता है। पानी में TDS (कुल घुलनशील तत्त्व) की मात्रा भी मापी जाती है, बहुत अधिक मात्रा में TDS होने से पानी पीने लायक नहीं रह जाता है।

पानी कई प्रकार के जीवों का आधार ही नहीं होता है, बल्कि अनेक प्रकार के जीवों को अपने में प्रश्रय भी देने वाला होता है, बी. स्कोरबी द्वारा गंगा जल के पानी की एक बूँद में भी 36000 तक सूक्ष्म जीव, देखे गए थे, ज्यादा शक्तिशाली सूक्ष्म-दर्शक यंत्र द्वारा देखने से और भी ज्यादा जीव देखे जा सकते हैं, उबालने या छानने से इन जीवों की संख्या काफी घट जाती है, अतः पानी को छानकर पीना ही हितकर है।

विश्व का 97% पानी समुद्रों में है, जो खारा और पीने योग्य नहीं है, करीब 2% पानी हिमखंडों व ग्लेशियरों से ठोस रूप में जमा है, बाकी सिर्फ 1% पानी ही झीलों, भूगर्भ, नदियों आदि में हमारे पीने, सिंचाई व विनिर्माण आदि कार्यों के लिए उपलब्ध है, भूमि पर जल के वितरण के लिये, देखिये तालिका -1

लिए सबसे पहले आवश्यक रासायनिक क्रिया कराई जाती है। उसके बाद निथारने व छनन की क्रिया की जाती है। ब्लीचिंग पाउडर, पोटेशियम परमैंगनेट या राख आदि रसायनों का प्रयोग, पानी में पाए जाने वाले प्रदूषक तत्वों के प्रकार और मात्रा पर निर्भर करता है। छनन क्रिया में चार—कोल, बालू मिट्टी या बजरी तथा ग्रेवल आदि का उपयोग होता है। घरों में पीने के पानी को स्वच्छ बनाने के लिए कई तरह के उपकरण उपलब्ध हैं। टाटा, एक्वागार्ड, केंट आदि कई कंपनियों ने अपने—अपने जल शोधन के उत्पाद बाजार में मांग के अनुसार पेश किये हैं।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में जल की मांग 40 लीटर प्रति व्यक्ति/दिन है।
2. रेगिस्थान में यह मांग 70 लीटर होती है, क्योंकि वहाँ 30 लीटर अधिक पानी पशुओं के लिए है।
3. मानव के लिए जल की जीवन-रेखीय आवश्यकता 10 लीटर प्रति व्यक्ति/दिन है।

क्रिया	जल की जरूरत (लीटर)
पीने हेतु	5
खाना बनाना, बर्तन धोना	10
स्नान	10
कपड़े धोना	20
पलश	20
कुल	65

= 2000 लीटर प्रति माह

“जल के सदुपयोग का व्यावहारिक दर्शन”

अब यह सिद्ध हो चुका है कि जल भी एक प्रकार का जीव होता है (संदर्भ i, ii)। कुछ परिस्थितियों में यह निर्जीव हो सकता है। परिस्थितियाँ बदल देने से वह फिर सजीव (सचित्त) व प्राणवान बन सकता है। उसकी संवेदनाएँ लौट आती हैं। अतः शिष्ट व सदाचारी मानव जाति का यह नैतिक व नैसर्गिक कर्तव्य बनता है कि वह पानी के प्रति करुणा और अनुकम्पा का दृष्टिकोण जागृत करे। अपने बच्चों में करुणा और अनुकम्पा का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए सक्रियता के साथ शिक्षा के पाठ्यक्रम में समुचित सुधार कर, जल अपव्ययता /दुरुपयोग को महापाप का दर्जा दिया जाय। हर परिवार, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बन कर, जल पुनर्शोधन की व्यवस्था को अपनाये, क्योंकि समस्त चराचर का मूल आधार जल ही है। तथ्यों व आकड़ों को वैज्ञानिकता के साथ परोसा जाय। हमारी जीवन शैली में, अपने पर्यावरण व संसाधनों के बचाव व संरक्षण की महत्ता को घर व स्कूलों के कार्यक्रमों (22 मार्च अंतर्राष्ट्रीय जल-दिवस आदि) द्वारा समझा कर, उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाये।

A) पानी के अपव्यय और दुरुपयोग के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:

1. भारत में 900 शहरों का 70% गंदा पानी व मलमूत्र प्रमुख नदियों में, बिना शोधन (treatment) के डाला जा रहा है।
2. जर, जोरु और जमीन के साथ-साथ **जल** पर भी झगड़े होते नजर आते हैं।
3. मुम्बई में **वाहन** धोने में ही 50 लाख लीटर पानी प्रति दिन खर्च होता है।
4. बड़े शहरों में पाईप लाइन के वाल्व की खराबी के कारण 10 से 40% पानी बेकार बह जाता है।
5. **इजराइल** में औसतन 10 cm वर्षा होती है। इससे इतना अनाज पैदा कर लेता है कि उसका निर्यात कर सकता है। **भारत** में औसतन 50 cm वर्षा होती है, लेकिन हमेशा अनाज की कमी रहती हैं।
6. भारत में प्रति व्यक्ति पानी की मांग **85 लीटर** है, जो 2025 तक 125 लीटर हो जायेगी। उस समय भारत की आबादी 1 अरब 38 करोड़ हो जायेगी। इससे पानी की मांग में कुल 7900 करोड़ लीटर की बढ़ोतरी हो जाएगी। अभी उपलब्धता 307 लीटर है, जो घटकर 2025 तक आधे से भी कम हो जायेगी।

No serious research has been undertaken during the last 200 years to explain the 'How' and 'Why' of effects of homeopathy medicines. It has functioned as empirical pathy, based on non-specific assumptions. A new Theory of its working mechanism has been extended in this paper.

In formulating this theory, help has been taken from the old Jaina Canonical books, which give details of “live-water” and its properties. Its eight types of touch-senses, which depend on its vibrational and electrical properties, have been considered in the light of recent research in nanotechnology and the basic concepts of “living-things” in modern biology.

Although water looks to be a simple chemical compound of hydrogen and oxygen, scientists know that it is endowed with very special and unique properties. However, modern science does not recognize, as yet, any life form devoid of biochemical cells.

Modern biology defines “living-things” as having twin capabilities viz, ability to

- i) fix energy and transfer it in a directed way, and
- ii) Remember and pass on information.

Applying these two conditions has validated the hypothesis of living water cells in physical form. Once we understood the structure and nature of live-water, it became easier to comprehend the procedure of characterisation of water-cells (similar to stem-cell characterisation) during potency formation. **Such 'Sanskrit' water** uses its vibrational and electrical energy-field. After passing through the micro pores of cell membrane, it modifies or reinforces the codes of relevant genes. Homeopathy thus works at genetic level for treatments, even without the physical presence of medicine molecules.

While going through many articles in the science magazines and reports during the last few years, we tend to believe that modern science-community is not very serious about any research in the field of Homeopathy, which is a fairly well-suited and cost effective pathy for the poor countries like India, Nepal etc. It has established itself as an important alternative and affordable pathy. But we all know, it lacks scientific explanations and basic research.

Vested interests are discouraging outright, any pursuit of scientific research on homeopathy by saying that its efficacy is nothing more than **placebo effect**. But science history tells us that any such rigid stand like declaring the **Principles, on which Homeopathy works can't be Scientific, is itself unscientific**. It reflects biased attitude. As such, concerted efforts should be made to involve top scientists to undertake fundamental research to understand properly the principles of homeopathy and its mechanism. This would help enhance its effectiveness by unveiling its mystery.

Extended below is “**Hypothesis**” of its working mechanism, which introduces a new concept of living-water cells. It should catalyze or provoke further research on some of the assumptions to establish itself scientifically. In formulating it, help has been taken from the old Jaina Canonical books, which give details of “Live-Water” and its properties.

A) Vaccination principle in allopathy:

It is well known in allopathy that when small-pox virus is injected in small quantity into the body system, the immune system is stimulated to produce antibodies to fight the foreign virus. It also leaves an “impression” into the cell memory to repeat it under similar circumstances in future. Genes are stimulated to learn from this micro-combat to fight vigorously at any macro-attack in future and retain this strategy in its memory. The explanation is :-

- 1.1 Some antibodies remain in the system for sometime, and,
- 1.2 The trained skill or the acquired capability as above of

“immune system” or particular cell-system remain intact for few years. That means the memory and skill to produce sufficient antibodies to fight that particular foreign virus, remain with the system for prolonged period.

1.3 It leads to the conclusion that

1.3.1 “Capability enhancement of immune system i.e., genetic-code modification (**GCM**) is achieved by the vaccination of a small quantity”.

1.3.2 The message for GCM is not received directly by all the concerned cells. Instead, only a few of the “Concerned-cells” get their “genes” stimulated directly by the vaccines's gross substance, to pass-on further the “Combatting message” either in general i.e., throughout the cells of the body or to the specific cells to follow its **own communication network**.

B) How does it work?

How does the remedy works in - Homeopathy, where no original medicine molecules can remain present, say in a 200c potency preparation? For its explanation, we resort to some special properties of water. Firstly there is a concept of **living water** in Jaina philosophy. It divides living-things in 5 categories according to the development of its sense capability (see Fig. A). Apkaya i.e. Liquid-water falls into the lowly developed living thing with only one sense of 'touch'.

What we normally understand about life is living bio-chemical cells. Whenever we talk about cell-based life form, we mean only the biochemical cells, and nothing else. Pandit Jawahar Lal Nehru wrote in his letters to Indira Gandhi that the famous scientist **Sir Jagdish Chandra Bose** talked about “life” in stones etc. However, we did not know, as to what form of life he referred to. One of the other life-forms is probably based on **Physical-cells**.

C) Water Structure:

To understand physical cells, we will review the atomic structure of

lesser and lesser no. of foreign mols or impurities as shown in graph 8. Thus it exhibits the second attribute of a living cell also. The role of tutor, at every stage is performed by the

- (I) Vibrating mols of previous pure water and
- (II) a few of residual mols of medicine, attached to the water net.

Apart from this frequency transcription on whole body, certain properties are transferred to the surface of the water cell. Such water mols carry unique signature of med mols, just like the worm holes in space.

In subsequent dilution, the transfer of properties is mostly due to induction. It creates resonance as the hybrid structures are rarefied. Here

- (I) Medicine mols do not diffuse any more in the quantum vacancy of fresh water cell, Thus impuritons are gradually washed away.
- (ii) The frequency transcription of water-cell gets stronger and stronger, like multi-layer jacketing.

In other words, coaxed tube gets reinforcement in form of cell-sleeving during potency making, which can store energy like carbon anions. A stronger jacket does not break or gets diluted during its journey to the interior of body cell, where it has to modify gene codes.

E) Homeo-Action:

- (1) When this characterized water-cell, carrying the frequency mode and the energy-configuration specific to the medicine, goes into the body-cell through absorption and diffusion from the circulating blood stream, it influences the structure of the cell, See fig. 9.
- (2) When it passes through the micro-pores of the cell membrane, it generates electric pulses, which are used by neurons and other cells for communication.

- (3) Once inside the cell, it acts as a catalyst for genes. It creates resonance with a specific portion of DNA or genes. The individual threads of DNA and RNA get modified.
- (4) It creates or refreshes gene-memory and enhances the capability of that particular immune system to modify long-term **coded instruction** and **code density to stimulate**.
- (a) Synthesis of homeo-compounds (b) or production of antibodies at faster rate.
- (5) Effectiveness of above instructions depends on the 'potency' or memory field of **good effect** of the characterized living water-cell.

F) Conclusion:

- (i) Higher the dilution/potency, more will be the activation power or catalytic power of living water to stimulate gene memory or genetic code, either to produce antibodies or to synthesize similar bio-products.
- (ii) Like free floating radicals & deoxidants, characterized living water mols (Homeo) carrying a particular '**impression**', work as a specific type of 'catalyst' for the concerned body tissue/cell. This relevant body cell is stimulated by the catalyst.
- (iii) Thus it offers a challenging field to the Chemists, Physicists, Biologists and Genetic Engineers alike to come together to peep into the living water cells and to explore further its vibration and electrical properties, which are utilized in the functioning of evidence based homeopathic medicines.

I express my gratitude to Shrulddhar Pandit Shri Prakash Muniji and Shri Laxmi Muniji and extend my thanks to Dr. Kulwant Singh and Dr. H.S. Verma of Jamshedpur, for useful discussions.

LIVING THINGS

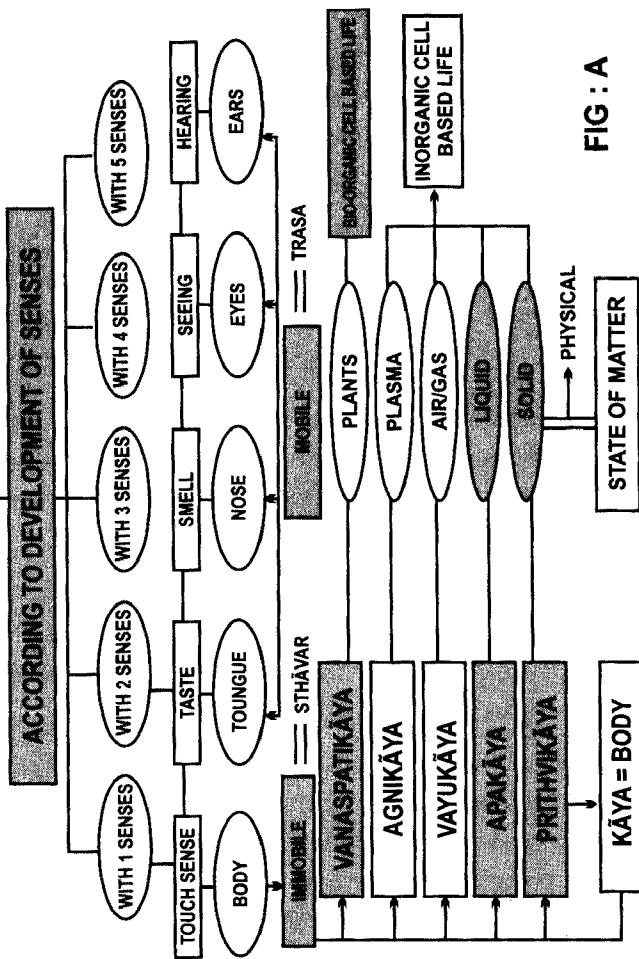


FIG : A

FOTO A : TYPE OF LIVING-BEINGS (TRASA AND STHAVAR)

Various Elements in Water Structure

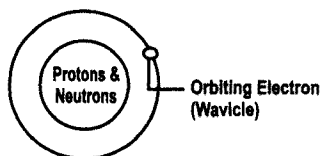


Fig. - 1 Simple form of an Atom

Electron Sharing Between two Nuclei

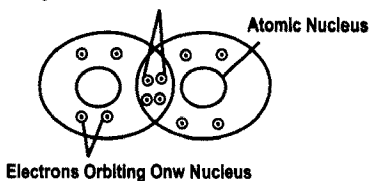


Fig.-2 O₂-Molecule (Skandha)

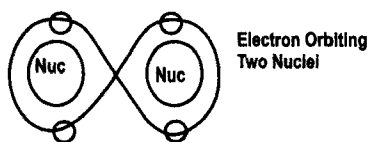


Fig.-3 Electrons Shared By 2 Nuclei

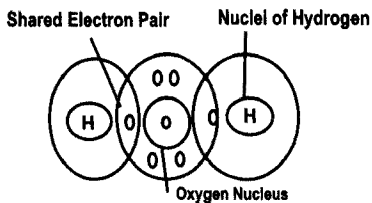


Fig - 4a Electron Sharing in Water Molecule



(I) Two Water Mols Attached due to e.s.field

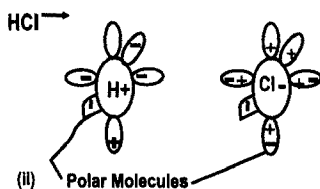
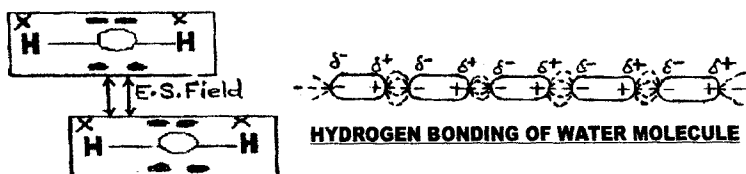
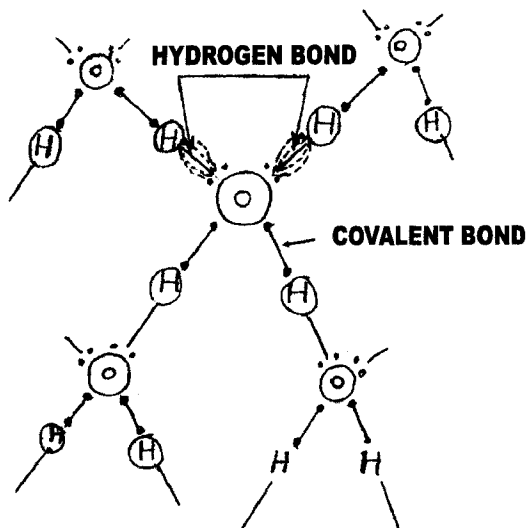
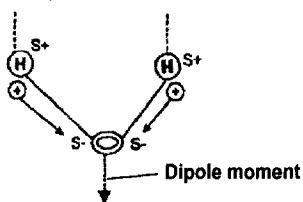


Fig - 4b Polar Molecules



Creation of Yoni some time after
formation of H_2O

Foto 4C : PROCESS OF SELF-ASSEMBLY OF WATER MOLECULES



Higher negativity of Oxygen
Fig-4c : results in dipole H_2O mol.

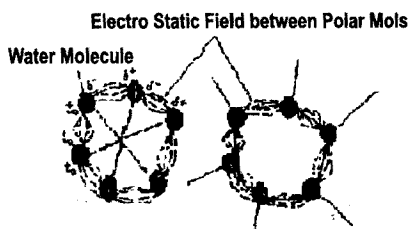
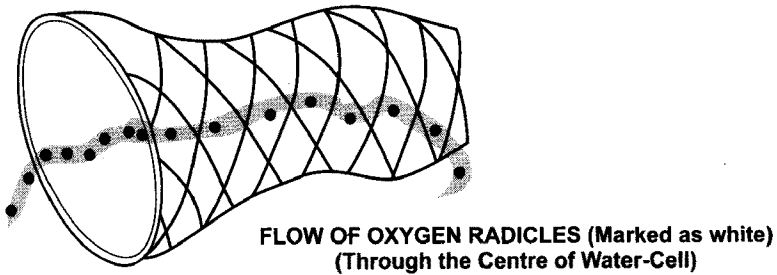
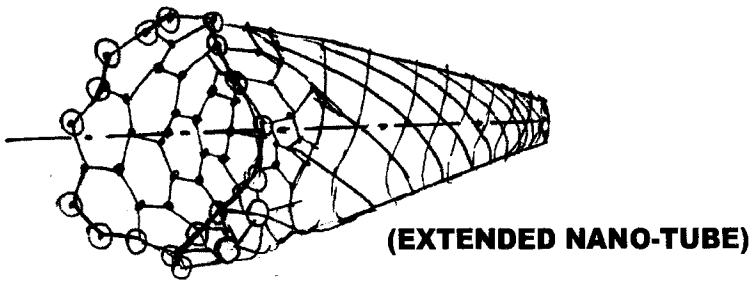


Fig-5 : Self assembled Crystal like
Hexa Unit of Water Moles $H_{12}O_6$



**FIG. 6 : BEE-HIVE CONFIGURATION OF TUBULAR NET
(LIVING-CELL)**

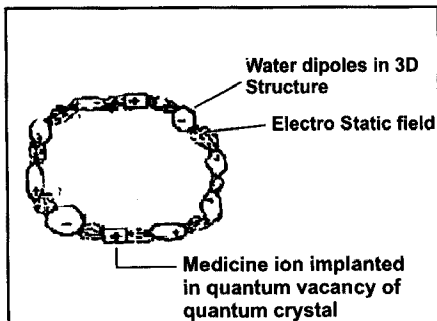


Fig. - 7
3D Hybrid Water - Structure
(Due jto quantum vacancy)

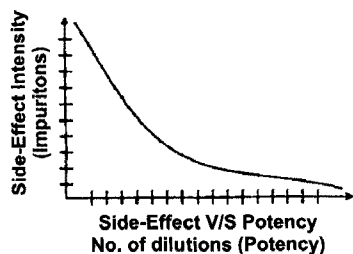
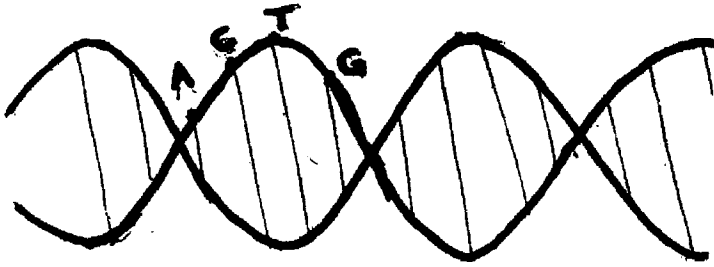


Fig. 8
Dilution of side-effect by
raising the potency



DOUBLE-HELICAL DNA-STRAND

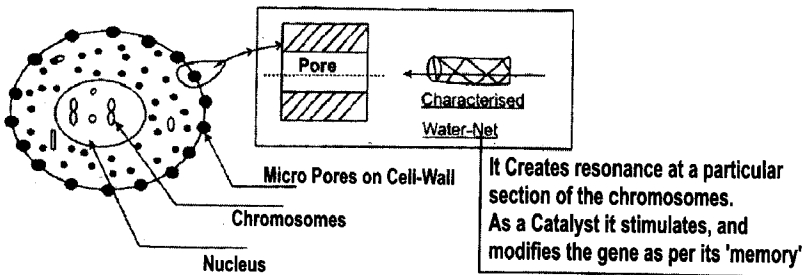


FIG 9 : INTERACTION OF REMEDY WITH BIO-CELL

Electro-vacancy: In the atomic structure, if the outer orbit contains less no. Of electrons then it could contain, it would have a vacancy for electrons.

In Jaina way of life the use of filtered/boiled water is essential for Sravaka (householder). This practice is environmental friendly and suitable for healthy life. The present article deals with the different ways to get non-living water (Treated Water).

1. Non living water:

Process to get Non-living Water:

Water obtained from natural water-cycle is normally living water. This living-water can be converted to non-living water by treating it with similar bodies or with dissimilar materials. Following are the 3 methods for doing it.

1.1 Mixing Process

There are various types of water. Each type would contain different minerals in different quantities and ratios. When they are mixed together e.g., water from a well is mixed with water from a pond, the live-water is disabled to remain alive. The internal ecosystem is disturbed and Yonis are choked, whenever one type of water mixes with another type of water at microscopic level. The end product lasts for some time, depending upon the difference in contents and their mutual tolerability.

The second method is to mix foreign materials with mechanical rubbing of water body. When foreign particles, above a critical quantity, are mixed thoroughly with living water mass (dhovan), it blocks the hollow, net-like structure of nano-tubes. Its radicals are also converted into molecules. Due to mechanical rubbing and friction, the “yonis” are broken apart.

the consumption of water and eliminates the threat of environmental destruction in a very simple method. This is also an important aspect of Ahimsā viz., to limit the requirement or to budget the consumption.

Secondly : When the raw live-water is treated, there are two steps involved in it. First a limited quantity is filtered in the morning for the household purposes with the help of a piece of “Chhanna cloth”, making water free from tiny trasakaya i.e., mobile living beings (a report from Bangla-Desh suggests that even “plague-germs” can be removed by this process).

The residue is put back invariably, into the rest of the water by carefull flush washing the filter cloth.

The limited quantity of filtered water is then treated to make it non-living for daily drinking requirement. It not only prevents the wasteful use of water, but also enhances the quality of human life. This discretion is commensurate with the principle of *Ahimsā* and *Aprigraha*, which leads to eco-friendly world-view and life-style.

1.5 Ahimsaka (non-violent) Life-Style and Treated Water

In the above context, an *Ahimsaka* life-style aims at not disturbing maximum possible no. of living-beings for sustenance of life. It has 3 components.

- (i) to limit one's needs or consumption
- (ii) to avoid killing of higher forms of life.
- (iii) To limit unavoidable *himsā*.

Following practice of using non-living water would fulfill the criteria of above life-style.

- (I) Filter the water for daily use in the house with a *chhanna-cloth*, thus protecting the microscopic water-borne living-beings. Killing of higher forms of life is avoided.
- (ii) Prepare daily limited quantity of non-living water consciously. It would reflect awareness about it. One will not indulge in the habit of wasteful consumption, like keeping the tap fully opened, while doing intermittent jobs of shaving etc. This awareness inculcates an attitude of efficient use of nature's resources.
- (iii) When the filtered water is treated-either boiled or de-energized,

and then kept earmarked for the day's consumption, an effective brake is applied to the perpetual birth-cycle of water-bodied living-beings. Without this treatment, these living-beings in the stored water would have continued to have innumerable birth-death cycles every moment. As there are innumerable living-beings in a single drop of water, the house-holder would become responsible for their deaths from a practical view point.

Attitude and conscious effort to avoid *Himsā* is an important trait of Ahimsaka life-style. Hence use of treated water represents an important aspect of Ahimsaka life-style.

2. Shelf-Life of non-living water

Pure non-living water takes some time to become again living-water, due to electrostatic forces between its molecules, Water starts forming net-like nano-tubular structures, called **yonis**. When left exposed to atmosphere, it starts absorbing atmospheric air in it. This absorbed air becomes a source for the yonis to breath and become “live”. However the rate of absorpition depends on the temperature and humidity of the environment as well as on the area of the water surface. It goes on absorbing air, till a saturation point is reached. Because these conditions of temperature and humidity are different in different seasons, the life-span of non-living water, to get converted back into live-water, would vary with the seasons.

3. De-characteriazation of the living water-cells

Water Cells can be characterized by homeopathic method, called dynamization process. These cells can carry faithfully, the specific imprints of trace-elements to the gene of the affected body. When the characterized cells travel in the blood stream, its impressions are difficult to be washed away by the “impurities” en route. However, the memory stability depends on temperature and environmental conditions, besides the purity i.e., rarefaction of the characterized water-cell.

On heating the solution, its capability of transferring information is lessened and its memory is partially erased. Distilling the water brings about a total erasure of this information.

4. Energy levels of water-bodied living-beings

As per the above discussions, water should also have its own aura (Foto-1) Four types of water were photographed by special Kirlian Method. They exhibit different energy fields of Aura. The area of 'water-aura' represents the sum-total of sub-auras of 4 components of the water mass. The four components are:

- #### 4.1 Non-Living water & its comparison with living water
- ##### 4.1.1 Types of Water :

$$\sum_{j=1}^n \left(\frac{1}{\lambda_j} - \frac{1}{\mu_j} \right) = 0. \quad (98)$$

(i) **Tap water for drinking (T) :** Carries more energy and more free radicals (free oxygen ions). It exists as living water.

(ii) **Additionally filtered** (by euroguard or RO process) tap water : (TF). Jeevani is filtered. Some minerals are also removed.

(iii) Boiled tap water (B) : Non-living water. Carries less energy and has no free radicals.

(iv) Distilled Water (D) : After absorption of Oxygen, it becomes live. Devoid of minerals and contaminations.

(v) Dynamised at lower potency (X) : Energetic living water, but its energy-field is different from that of tap water. Field of chemical/impurities may also co-exist.

(vi) Dynamised at higher potency (XX) : Its energy field is more concentrated and active, having configuration as per the initial chemical.

Since all of them will have different energy levels, they must logically exhibit different energy auras.

The relative quantum of earlier mentioned contents in different types of water are given below (Table 1) in terms of low (L), very low (VL), medium (M), high (H), and very high (VH)

S.N.	Contents of Water	T	TF	B	D	X	XX	Remark
1.	Trasakaya (Tr)	M/H	VL	Nil	Nil	Nil	Nil	
2.	Minerals (Mi)	H (Live)	M/H	VH	Nil	Nil	Nil	
3.	Live-water (Li) (Li)c & (Li)cc	H	H	Nil	H (nescent)	H̄	VH	
4.	Others (Ot)	H	M/L	Nil	L	L	VL	

Aura of above noted 6 types of water can be analyzed and assessed in terms of area of aura of its contents as follows.

A=Area of Aura, EA = sum total of Individual Aura.

Table 2 : Aura of various contents of Different types of water

S.N.	Water Type	A (Tr)	A (Mi)	A (Li)/A (Li)c	A (Ot)	Σ compo
1.	EA (T) tap water	A (Tr)	A (Mi)	A(Li)	A (Ot)	Σ 4 compo
2.	EA (TF) filtered	▲ A (Tr)	A (Mi)	A(Li)	▲ A (Ot)	Σ 4 compo
3.	EA (B)	Nil	A (Mi)	Nil	Nil	Σ 2 compo
4.	EA (D) distilled	Nil	Nil	A (Li)	▲ A(Ot)	Σ 2 compo
5.	EA (X)	Nil	▲ A (Mi)	A(Li)c	▲ A(Ot)	Σ 2 compo
6.	EA (XX) Highly Characterized	Nil	Nil	A(Li)cc	▲ A(Ot)	Σ 1 compo

▲ A : minute amount, nearing nil

4.2.1 Relative intensity of individual aura can also be expressed in ascending order on a scale of 1 to 5 e.g. A(Mi) 5 etc. See Table 3 :-

Table 3 : Relative intensity of Aura of Various components of different types of water.

S.N.	Component Aura		Type of Water				
		T	TF	B	D	X	XX
1.	A (Mi)	A (Mi)5	A (Mi) 4	A (Mi) 4	A (Mi) 0	A (Mi) 2	A (Mi) 0
2.	A (Li)	A (Li) 2	A (Li) 2	A (Li) 0	A (Li) 2	A (Li) 4	A (Li) 5
3.	A (Tr)	A (Tr) 5	A (Tr) 1	A (Tr) 0	A (Tr) 0	A (Tr) 0	A (Tr) 0
4.	A (Or)	A (Ot) 5	A (Ot) 4	A (Ot) 0	A (Ot) 2	A (Ot) 3	A (Ot) 3

4.3 Experiments

Certain experiments were conducted with the active participation of **Dr. J. M. Shah's** Laboratory at Mumbai and **M/s Willmar Schwabe India of Naida** to map out the Aura of water in above noted 4 states (Table 4). M/s Willmar Schwabe supplied specifically prepared water-based homeo preparations.

Table 4 : Area of "aura" measured by aura-photography (foto 10)
byDr. J.M. Shah

S.N.	Contents of Water	Area A (t) (Measured)	(Symmetry) %	Estimated Area x 1000
1.	Tap Water	21194	96	22
2.	Boiled Water	17712	84	15-17
3.	Kal 6X	18382	88	17-18
4.	Kal 10M	14666	97	15

The variation in Aura of different samples of water indicates that water does exist in animated and unanimated states. As a corollary the animated state would have etheric body aura, which can carry memory, particularly 10M(XX) water. The tap water shows the highest area A(t) of scattering. The intensely characterized water exhibits the lowest scattering (low entropy).

4.4 Discussions:

If we select a scale of 0-22, following relative values of component-auras can be assigned by deductive reasoning to match the actual gross area of aura of photographed samples. The maximum value of aura of a component is fixed at a level of 22, because in sample T, the max. energy is only 22, as measured by shah's Lab, on a unit less scale i.e., random scale. The relative data (area) about aura of various components, contained in Table 3, has been **interpolated** on the basis of deductive reasoning and are shown in Table 5.

Table 5 : Probable relative magnitude of aura of different constituents of water (Assessed) :

* Predicated figures.

In filtered water (TF*), it is expected that some of the minerals and bacteria are removed during filtration.

Foto 2 shows the actual area of Aura of different types of water. It is observed that the tap water (T) has the highest area of scattering. The intensely characterized water (XX) exhibits the lowest scattering. Dynamisation would mean that the water has drawn and absorbed max. Cosmic/Pranik energy. This area looks like to be a measure of **Entropy**. Live energy A (Li) is influenced by dynamisation. It enhances its value and quality. For XX, A (Li) of distilled water increased from 16 to A (Li) + A (Ot), i.e., to 22, for a net area of 15. This area becomes more compact with less amount of scattering as per shah's lab. This enhanced energy is **packed** in a smaller area. The negative energy A (Ot) goes down from -6 to -2. An additional force of discipline (d), compressing the energy field, comes into play. Although the total energy increases, but due to disciplinary pressure, the Area of energy decreases. Its concentration increases and the Entropy decreases.

If these could be proved correct, it would establish, in a way, the validity of the hypothesis of Existence of Living-water.

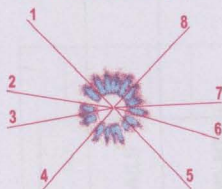
4.5 Symmetry of water-aura :

may mean better homogeneity of the mass. It is observed that live water has better symmetry than dead water (see Table 6)! It increases with dynamisation. It needs further experiments and exact evaluation.

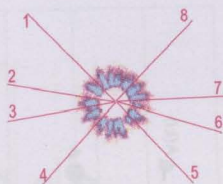
Type of water	B (Dead water)	X	T	XX	<i>JJ</i>
Symmetry %	84%	88%	96%	97%	92

- (i) Pure water exists in the form of bee-hive structure, having its own electrical and vibratory properties. By absorbing air in its quantum vacancy, it exhibits the properties of a “living-being”. When boiled, the dissolved air and the radicals are removed from it, thus making the live-water as dead water or better called as non-living water.
- (ii) Characterized water acts on the bio-cells, but boiling destroys its memory.
- (iii) Consumption of non-living water represents an attitude of Ahimsaka Life-Style.
- (iv) A characterized cell, in its pure form, will have a well defined and specifically attuned pattern of energy field around the profile of its body.
- (v) Similarly, variation in aura of water body, obtained under its different living conditions, validates the theory that water does exist as a living-being.

NAME: <Kalium 6x 180806-1>
 Year of birth : 2006
 18:08:2006 16:34
 Area 18382 Symmetry 97%



1L_Kalium 6x 180806-1 01:01:1601 05:30



1R_Kalium 6x 180806-1 01:01:1601 05:29

Fig-1b Typical Aura of Water

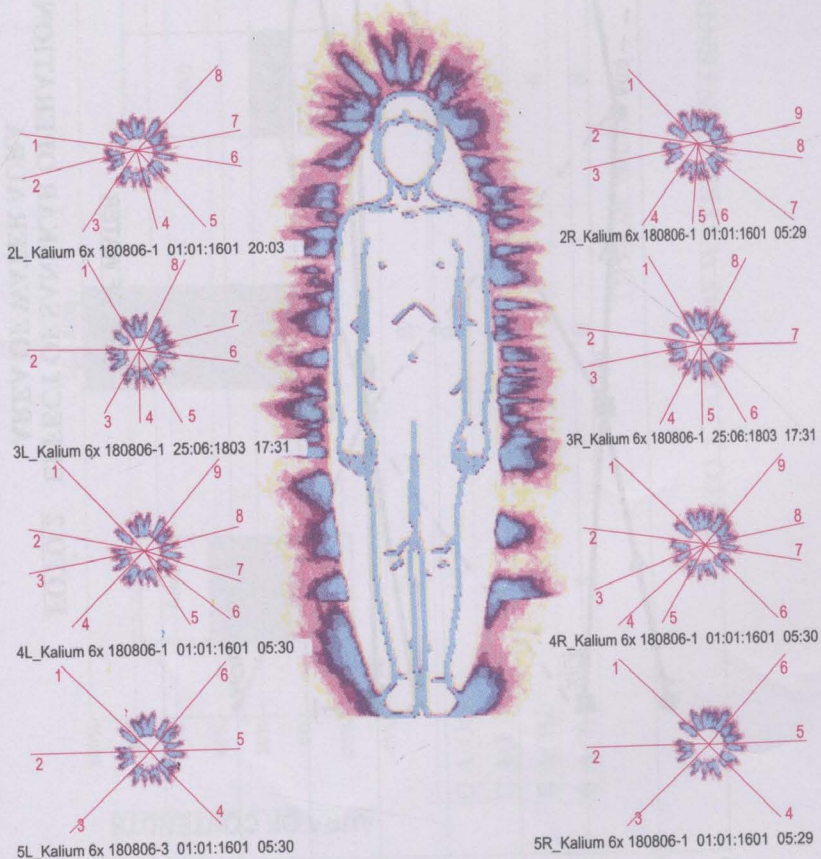
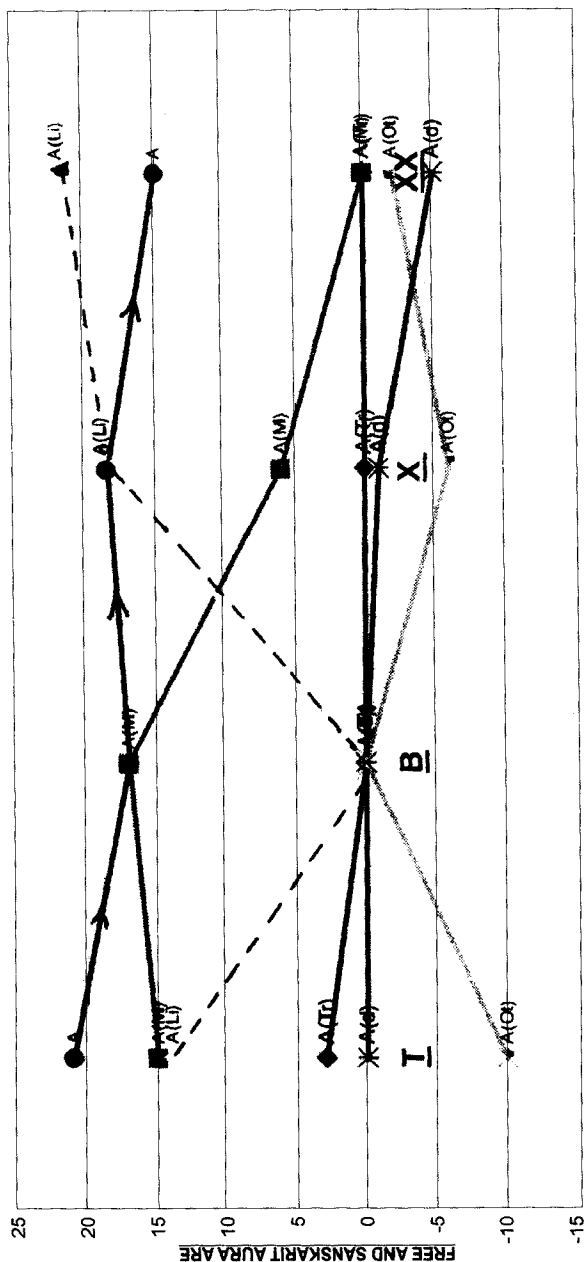
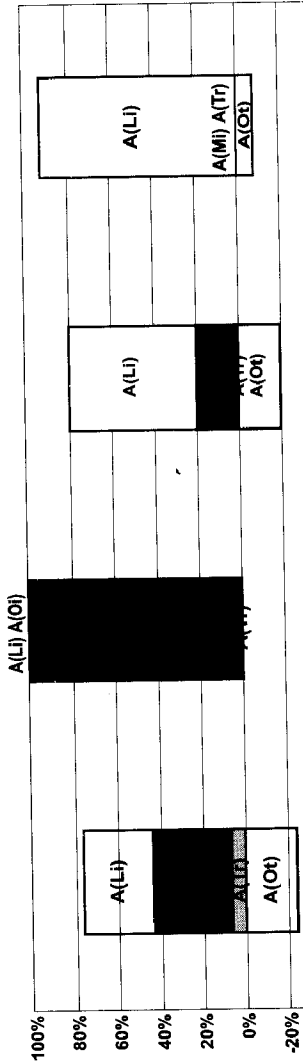


FIG :- 10a AURA OF 'X' REMEDY (SHAH)

Kirilions Technologies International



**FOTO 2 EFFECT OF SANSKRIT OPERATION ON
AREA OF WATER AURA**



		TYPES OF WATER	
T	B	X	XX
□ A(Ot)	0	-6	-2
□ A(Li)	0	19	22
▨ A(Mi)	17	6	0
▤ A(Tr)	0	0	0

FOTO 3 : AURA OF WATER CONTENTS

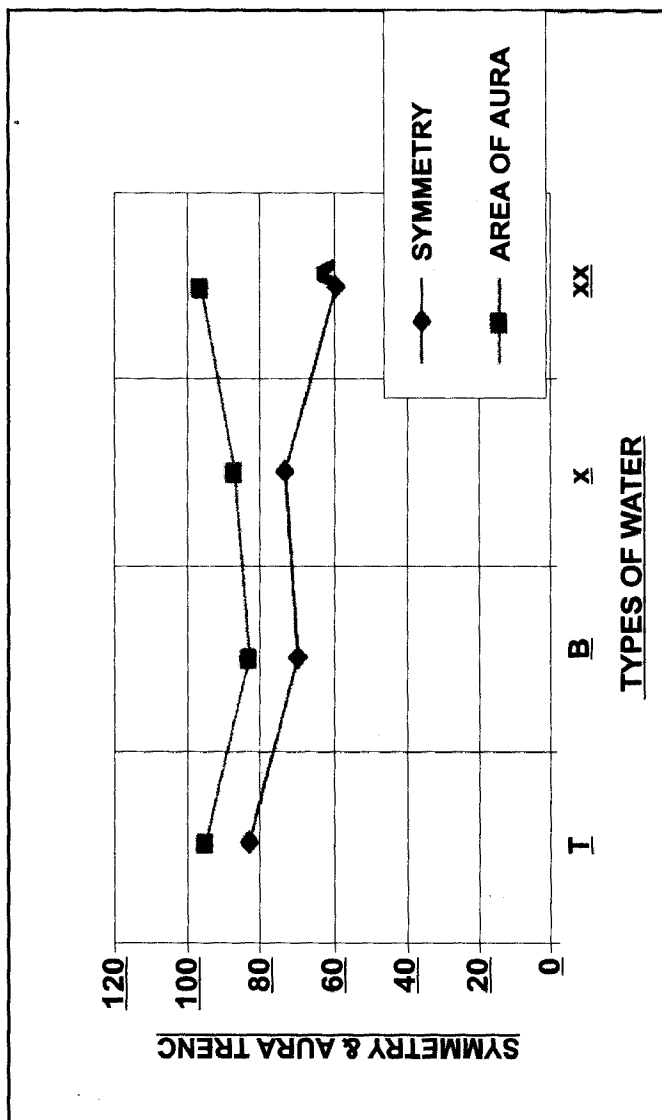


FOTO 4: EFFECT OF 'SANSKAR' ON AURA & SYMMETRY

'DIFFERENTIATING LIVING AND NON-LIVING WATER

Second Series of Experiments on Water-Aura:

In the previous 2 articles (Ref. 1,2), it was established that water does exist as a living-being (Ref. 3,4,5). After developing a scientific model of the structure of living water-cell, certain “Tests” were applied to prove the validity of the hypothesis (Ref. 2,5). Both the basic criteria of a living-being were applied to certain types of water and found it to be fulfilling them! Subsequently “aura” photography was resorted to re-establish the criteria of sentient water. Tests were conducted to differentiate living water from non-living water.

2. Second series of Experiments on Aura :

Based on the results of the first set of experiments with aura of different types of water(Ref. 2,5), second series of experiments were designed and planned as follows. It is known that Aura can be photographed either by **invasive** or by **non-invasive** techniques (Ref. 6,7,8). In the first set of experiments, Dr. Shah used invasive technique, which involves direct contact of the object with the high voltage field. In the second series, non-invasive method was planned, where aura is photographed from a distance.

Seven types of water, as given below, were prepared and kept in glass cups of similar size and material, so that the container-energy remains common for all the water-samples. All the samples were kept side by side on a table (Foto 13). In this position the auras of all the samples were captured in one photograph in the laboratory of **Dr. Amaresh Mehta**, at Ahmedabad, on 18.10.07. First photograph was taken in the morning at around 11:30 am (BN) and the second photograph of the same samples was taken in the After Noon (AN) at 4 pm, without introducing any disturbance in them (see photos). Both photographs lend them selves to be compared. This should reveal, whether timing has any effect on the quality of aura. **(Foto 14)**

The long **experience of Dr. Amresh Mehta**, in reading the aura photographs, was utilized to decode the meaning of coloured aura, surrounding the samples. He explained that Blue coloured aura means **Good energy** and Red coloured Aura means **Bad Energy**. We have considered only these two colors in our analysis. Both colors can co-exist. It is said that when one type increases, the other coloured area decreases. In the photograph of aura of samples taken on 18.10.07, the containers of samples were arranged as shown in **Foto 13**. The sequence of samples was as follows:-

Second Row: has i) Tap water without filtration (E/T),
ii) Boiled water, first Filtered and then boiled (BF) and
iii) Tap water filtered by Reverse Osmosis system (TF).

The first observation by Dr. Mehta was that there is no difference in patterns of morning (BN) aura and evening (AN) aura of the samples. From these photographs, the quality of energy of every aura has been assessed. The exact magnitude of energy or energy area could not be measured from these photographs, as has been done by the software of Dr. J M Shah from his aura photographs. This was due to application of different technology by Dr. Mehta. Dr. Mehta, however, found qualitatively the magnitude of **energy (good)** of samples, in a descending order, in form of **blue colour** as below:-

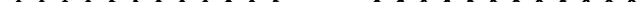
SN	Energy Grade	Sample Type	Quantum of good energy
1	BF	Boiled after filtration (RO System)	Maximum energy (Blue)
2	DF	Dhovan after filtration (RO)	slightly less/same
3	10M	Homeo remedy 10 M (XX)-----	lesser than 2 nd sample
4	TF	Filtered tap water (RO) -----	lesser than 3
5	DDD	Distilled water (Injection ampules)	lesser than 4
6	6X	Homeo remedy 6X -----	lesser than 5
7	E/T	Tap water without filtering ---	least Blue (Max. Red)

The reduction in energy area (from 21.2 to 17 units) indicates that not only the bad energy is converted into good energy, but also the “area” is reduced, probably due to increase in its density. The energy packed per unit area must have increased. In other words the randomness of energy (entropy) is decreased and the discipline of energy E_d is increased.

(Apart from Red and Blue colors, the other colors in Mehta's fotos might be related to dynamisation of 6X and 10M. This significance is not known as yet and needs further experiments)

When dynamisation of distilled water is done, the aura of living water gets disciplined. Its scattering gets reduced. As per Mehta, good energy increases and **bad energy decreases** due to **dynamisation** i.e., $E_t \uparrow = E_g \uparrow + E_b \downarrow$. The scattering of aura around the X sample comes almost to the level of boiled water B. When it is further dynamised (10M), the scattering of energy area is further reduced. It becomes more disciplined. (here, \uparrow denotes gain & \downarrow denotes loss).

If $E(A)$ is assumed as Total energy area (without differentiating as good or bad energy), it can be argued that



(111)

Boiled water - → has aura of inanimate object only. (Fixed or static type)

X Sample - → Scattering of energy around live-water is reduced. Aura energy becomes more disciplined.

XX (10M) Sample → The energy gets still more disciplined. (Foto 15 & 16) and concentrated.

This is possible, only if “area” (entropy) contains “some thing” which compresses the energy field, irrespective of its being good or bad energy, as identified by Dr. Mehta.

4.4) The scattering of **Energy Area/Entropy E(A)** decreases sequentially from Tap water to 6X remedy, to Boiled water to 10M remedy in Shah's photography, whereas in Mehta's photography the **good energy increases in the same sequence (Foto 16)**. In a bigger sample size of second series of experiments, the good energy increases in a sequential manner from Tap water to 6X remedy to Distilled water (DDD) to Tap filtered water (TF) to 10M remedy to Dhovan of filtered water (DF) to Boiled filtered water (BF). This can be expressed as

$$E_{(t)} < E_{(x)} < E_{(d)} < E_{(tf)} < E_{(xx)} < E_{(dhf)} < E_{(bf)} \text{ (good energy).}$$

This is represented in **Foto 15** (Table 4 & 8) and in Stacked Energy Diagrams (Foto 17a & 17b).

The energy content of individual sample can be **analysed and explained** in the following manner.

Nomenclatures used in the next analysis are:

- i) **5 suffixes** to denote **type of energy**, **t**=total, **g**=good, **d**=disciplined, **p**=pranik and **b**=bad are used without brackets.
- ii) Suffixes denoting the **type of water**, like **t**=tap water T, **b**=boiled water B, **dhf**=dhovana filtered water DF, **d**=distilled water DDD, **h**=dynamised (homeo) remedy 6X or 10M, **f**=filtered water, **dw**=dead water, **li**=live water and _{o/r}=oxy radicals etc are used in **brackets**.
- iii) E = specific aural energy quantity.

For example,

E_{tap} would mean total energy of filtered tap water,

$E_{g(dw)}$ would mean good energy of dead water i.e., boiled water.

4.5 In Shah's photographs:-

(Foto 18 as reproduced from reference 1):-

4.5.1 Energy of Tap-Water in Foto 18 can be denoted by $E_{u(t)}$. This energy $E_{u(t)}$ is composed of following components and can be expressed ab initio as:

$$E_{t(i)} = E_{(dw)} + E_{(li)} + (-E_{(o/r)}) \text{----- (i)}$$

Where, $E_{(dw)}$ = Energy of Dead Water, it may contain energy of its mineral constituents.

$E_{(ii)}$ = Energy of “living-being” of water alone. It may increase by addition of some other type of energy, called Pranik energy to it. It may also contain some energy of living Trasa Jīva contents.

$E_{(o/r)}$ = Energy of oxygen radicals dissolved in water.

4.5.2 Dynamics of Boiling operation:

During boiling the tap water, following changes in energy can occur. By boiling process, the energy of radicals of oxygen is reduced to zero i.e., $E_{(o/r)} = 0$, and

Live-Energy $E_{(li)}$ is also reduced to zero, because water does not remain alive after boiling

i.e., $E_{(ii)} = 0$. (nothing known has been done here to attract and store Pranik Energy.)

Hence the residual energy of boiled water $E_{(b)} = E_{t(t)} - (-E_{(o/r)} + E_{(li)})$

$$\begin{aligned} \text{Substituting } E_{u(i)} \text{ from equation (i)}, &= (E_{(dw)} + E_{(ii)} \\ &+ (-)E_{(o/r)} - (-E_{(o/r)} + E_{(li)})) \\ &= E_{(dw)} \end{aligned}$$

4.5.3 Here a **pertinent question** arises as to why the boiled water should have maximum **good energy (Blue)**, whereas its **entropy is decreased**?

Following possible **reasons** may be assigned to it.

- i) Because it does not have any negative energy of oxygen **radicals**, (which might be same or equivalent to Mehta's **bad energy!** This has to be investigated.)

- That means,**

- From this “**datum energy**” of boiled water as per Shah's lab. one has to subtract radical-energy (negative) and add Live energy E(li) (+ve), in order to get actual value of energy of tap-water.

- #### 4.5.4 Problems Paused:-

- #### 4.5.5 Effect of Dynamisation

$$E_{(xx)} = E_{(dw)} + E_{(li)} - E_{(o/r)} + E_d$$

4.6 Mehta's Photographs:-

[illegible]

If the good and bad energies do not cancel each other, they would exist together simultaneously, as revealed in Blue and Red colors in the Foto by Dr. Mehta. It is also observed that the graphs of good energy and the scattering of energies run almost parallel, if they are positioned about a neutral axis (Foto 15). It means, if a sample has more good energy (Mehta), it would also exhibit less energy-scattering (shah), as if the sum total of these **scalar** quantities has to be almost constant, unless extra **pranik energy** is added by dynamisation. When E_p (pranik) is superimposed on normal water aura area EA, its scattering is reduced in proportion to the intensity of E_p . Thus the density of aura energy goes on increasing and the entropy goes on decreasing by dynamisation. Since the data of Mehta is not quantifiable, it is considered to be only an assessment of the '**Trend**'. Table 5 of previous article has now been modified as per this analytical conclusion in new Table 5M, given here.

TABLE 5M : Probable relative magnitude of aura of different constituents of water (Assessed):

S.N.	Component Aura	T	TF*	B	D*	X	XX
1.	E Li	14	14	0	16	12	12
2.	E Mi	11	10	16	0	6	0
3.	E d/p	0	0-1	0	0	10	46
4.	E o/r (-ve)	-6	-11	0	-6	-2	0
5.	E Tr	2	0	0	0	0	0
6/Sum	E A (SHAH)	21.5	14-15	17.5	10*	18.5	14.5
7.	Energy Density (De*)	1		0.9		1.3	4
8.	E A (Mehta)*	21		16		24	58

*Predicted figures.

Further experiments are needed with sophisticated equipments to quantify these deductive statements. For the aforesaid data, following **equations** should hold good (Mehta):-

- (i) $E_t = E_g + E_b$ (ii) --- i.e., Total energy of a water sample.
- (ii) $E_{t(d)} = E_{g(d)} + E_{b(d)}$ (iii) --- for distilled water
- (iii) $E_{t(h)} = E_{g(h)} + E_{b(h)}$ (iv) --- for dynamised water.

when we express Shah's energy $E(A) = E(li) + E(Mi) + E(Tr) + E(o/r) + E_p/E_d$ (Foto 19, as reproduced from reference 2), we do not know, which of its components belong to good energy of Mehta and in what ratio. We also do not know, whether this E_g represents condition of all the 3-dimensions, even when its 2-dimensional component is getting measured! The values of various energies are roughly assessed from the experimental data and expressed in following tabular form to see the trends.

Table 9: Values of scattered/disciplined $E(A)$ and estimation of good (E_g) energy (SHAH)

Water Type	E(A) (Dr.Shah) (i)	Constt Et, Say (ii)	Eg (ii)-(i) (Shah) (iii)	Et, (If Et(h)>Et(d)), say, Foto 16 (iv)	Then Eg(Shah) = (iv)-(i) (v)
T	21.5	25	3.5	25	3.5
X/	18.5/	25/	6.5/	30/	11.5/
Boiled	17.5	25	7.5	25	7.5
XX	14.5	25	10.5	35	20.5

Note:-

1. The relative values of Et in columns (ii) and (iv) have just been assigned to facilitate the understanding of possible effects of dynamisation in terms of good or bad aura energy.
2. Dynamisation may possibly draw cosmic energy from the universe, thereby increasing the life-energy E_{ii} , due to super imposition of $E(p)$.
3. If total aura energy E_t does not increase by dynamisation, the increase in good-energy would be just balanced by corresponding decrease in its bad-energy.

In such a situation, if its concentration or memory power is increased in a particular field or direction, total E_t may not be required to be altered.

These results look **astonishingly in conformity** with the deductive results obtained from different samples on the basis of the postulates of above mentioned theory of water-bodied Living-beings without DNA & RNA.

5. Summary:-

- i) A characterized water cell in its pure form will have a well defined and specifically attuned **pattern of energy** field around the profile or architecture of its body.
- ii) Similarly, variation in aura of water body, obtained under its different living-conditions, validates the theory that water does exist as a living-being. As a corollary, the animated state will have **Etheric aura** component, which is responsible for carrying memory.

This theory may act as a Foundation Stone for the Homoeopathy.

- iii) Experiments were conducted to find difference and changes in “**Aura**” of living and dead water. It established the existence of living-water cells.
- iv) Preliminary experiments strongly suggest that it is now scientifically possible to differentiate between living water and dead water ! This would provide effective tool to facilitate nurturing of *Ahimsak lifestyle* for the mankind.

Knowing that WATER **exists** as a **Living-being** theory of karma (Ref. 9) and human attribute of Compassion (Ref. 10) should now prevail on mankind for self restraint and for **minimisation** of consumption of water.

Some tips are given in Foto B for conservation of water in daily life, titled as, "**Do You Know**"

- v) Further it is also established that dynamisation of water affects **positively** its energy field.

The whole exercise has been done with very limited facilities. However, in view of the encouraging results, there seems to be a tremendous scope for scientists to undertake multi-Disciplinary **organized research** with advanced sophisticated equipments, like atomic-force microscope and magnetic-resonance techniques to peep deep into the molecular structure of water. Latest Aura techniques can also help reveal many secrets of such wonderful **Live Water-Cell**.

Reference :-

- 1) Dr. Jeoraj Jain, "Non-living water and its comparison with living Water," Arhal Vacana 20 (3), 2008, p 91-98.
2. Jeoraj Jain, "Living Water Cells and working principle of Homeopathy", Arhat Vacana, 19 (1-2), 2007, p 95-102
3. Exlward Wriothsesely Rusal, "Report on Radionics", Neville Spearman Suffold, 1983.
4. An interview with Dr. David Schweitzer, "More than just H₂ O", Nu Health, 32 Notting Hill Gate London, W11 UK, 2000.
5. Prabhunarayan Mishra, Photographs published in, "Naya Gyanodaya", Bhartiya Gnanpith, Delhi, Mar. 2004.
6. Kirlian photography and Brochures prepared in the laboratory of Dr. J. M. Shah, Mumbai and Dr. Amresh Mehata, Ahmedabad (2005-08).
7. Acharya Mahapragyaji M.S., "Aabha Mandal", Adarsha Sahitya Sangh Prakashan, 210, Deen Dayal Upadhyay Marg. Delhi - 110002, p 155-220.
8. Arun Zaveri etc. "Therapentic Thinking", Geekay Corpn. A-109, Ghat Kopar Industrial Estate, LBS Marg, Ghatkopar (W), Mumbai - 400086, p 14-16.
9. Dr. N.L. Kachhara, "Jain Karma Sidhanta, Adhyatma aur Vigyan", Dharma Darshan Seva Sansthan, 55 Ravindra Nagar, Udaipur - 313003, P. 100-106
10. K.L. Lodha, "Jeev- Ajeeva Tattwa' (in the light of science), Prakrit Bharti Academy, Jaipur.



Glass Cups as Containers

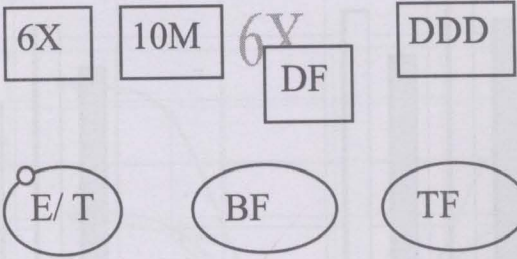
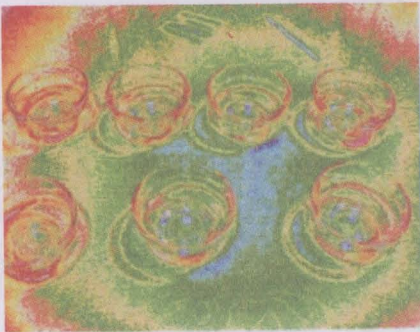


FOTO 13 Arrangement of Samples on Table for Photography (Dr. A. Mehta)



Morning

Afternoon

FOTO : 14 Water Aura In BN (before Noon) & AN

FOTO : 15 EFFECT OF SANSKAR ON AURA ENERGY

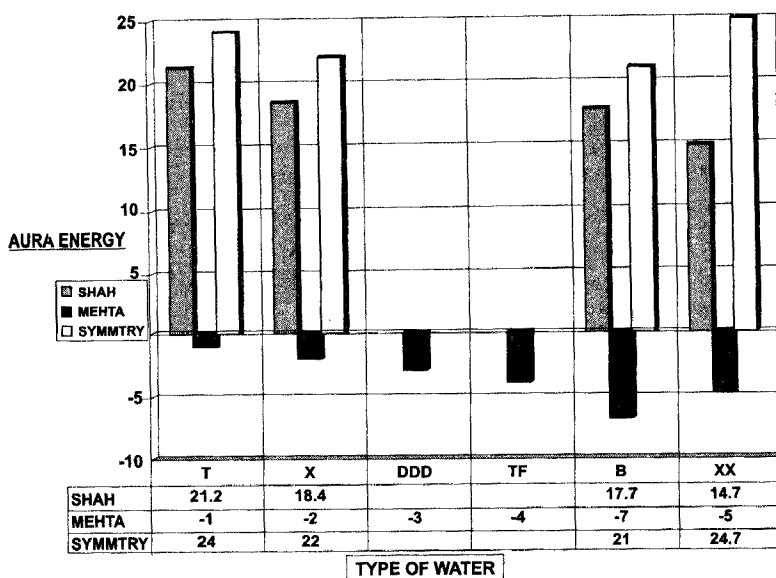


FOTO : 16 AURA ENERGY IN 3D GRAPH, AS OBSERVED BY SHAH & MEHTA

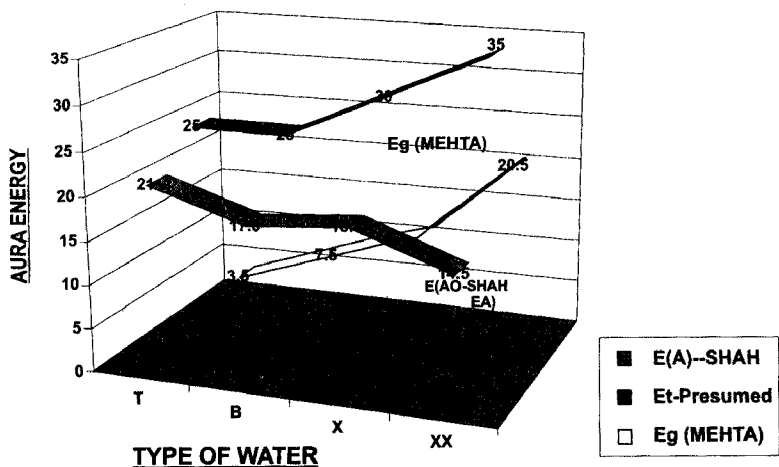


FOTO : 17a : STACKED ENERGY SCHEMATIC DIAGRAM
(COMPARING SHAH & MEHTA'S READINGS)

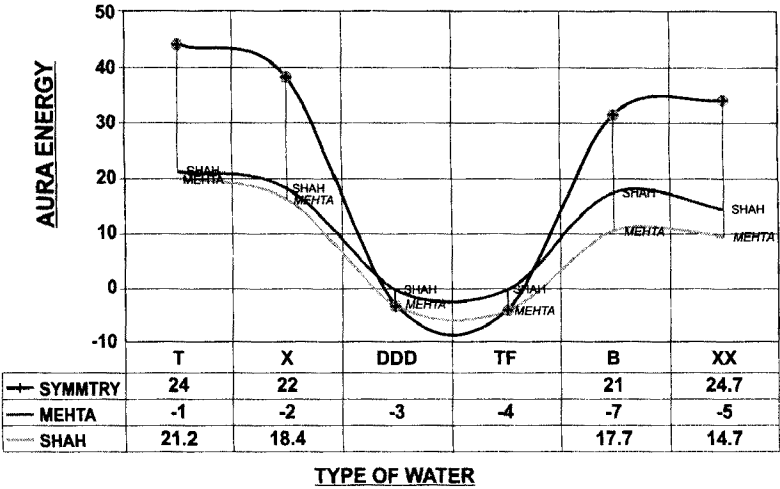


FOTO : 17b : STACKED ENERGY DIAGRAM (-SCHEMATIC)
IN ASCENDING ORDER (SHAH & MEHTA)

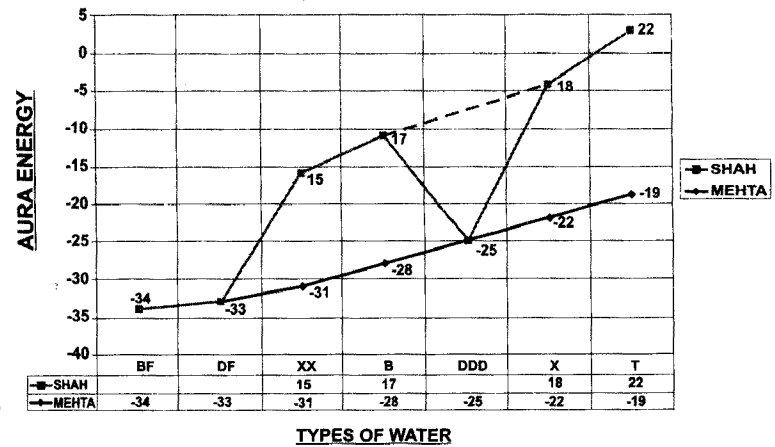


FOTO 18 : PROBABLE CONTRIBUTION OF COMPONENT AURAS

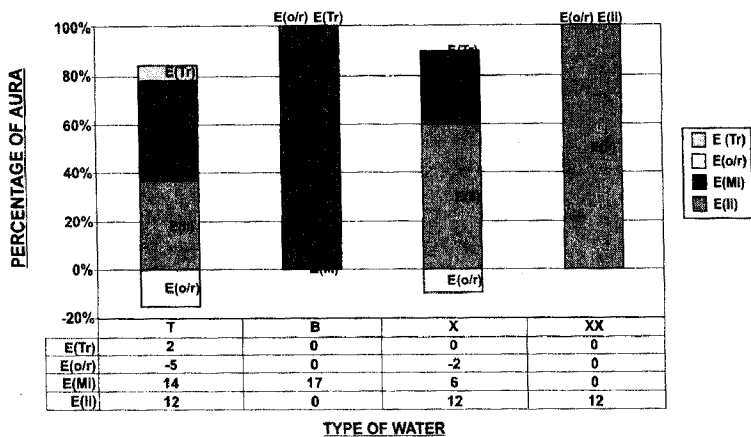
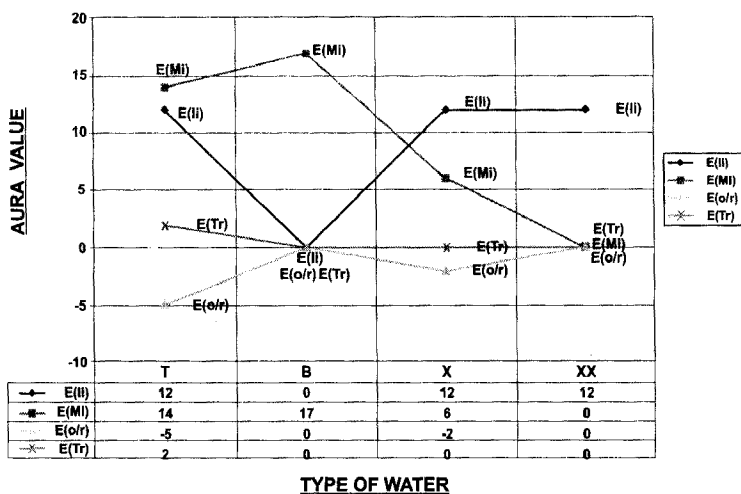


FOTO 19 : AURA OF CONTENTS OF SAMPLES (SHAH)



That means, the experimental results obtained earlier by the author himself in Dr J M Shah's (Mumbai) and Dr.Amresh Mehta's (Ahmedabad) Laboratories, have been independently **revalidated** and reinforced by it. Therefore, it leaves **little doubt** about the correctness of the **Theory of Structure** of water-body and the **Livingness of water**, as propounded earlier (Ref. 1,2)

- 1) fix energy and transfer it in a directed way, and
- 2) remember and pass on information.

(3) In the photographs sent by Dr. Vinod Shah (see attached figures), the **aura** of water sample is located at the **foot** of the container, in **rectangular** shape. The **'good-energy'** in aura is a **relative** term and may correspond to some particular quality of water. We have, for **comparison purpose**, attributed this **'goodness'** to **non-livingness**. The grade of good energy (Green Energy) is visible in the aura of water, in descending order, in the samples of water as given below:-

(A) **Following Samples have 100% good energy in aura, exhibiting, 100% non-livingness of the sample.**

- i} Water treated with **Gobar** Ash
- ii} Tap water **boiled** and cooled

All these water samples are non-living waters, as their energy is manifested only in **Green color**]

(B) Bottled mineral Water.

This sample contains **hazy** patch of light orange (**LO**) color in the completely green area of its aura

[This means that the sample water is not 100% non-living entity; as its aura energy is manifested by Green color with some small hazy patch of LO color]

(C) **Distilled water:** In green color, there is a big patch of Red color, instead of usual Light orange color (We do not know its special significance as yet) in the aura field

Distilled water does not have any sort of minerals, except that it becomes a living-water, if stored and kept in open for some time. Red color may indicate this quality in some form.

(D) i} RO water

ii} **Aqua Guard, and**

iii} **Raw Tap water**

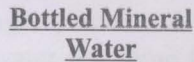
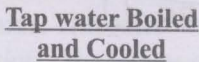
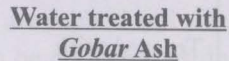
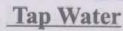
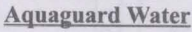
Auras of all these samples possess substantial area of Light-Orange color in the Green colored field, **clearly exhibiting the livingness** of water samples.

Above results are absolutely in line with our earlier predicted trends and claims !

Reference:-

1. Living Water-cells and working principle of Homoeopathy, Jeoraj Jain, Arhat Vacan, Jan-Jun2007, P95-102, Kundkund Jnanapitha, Indore.
2. Non-living Water and its comparison with Living-water, Jeoraj Jain, Arhat Vacan, Jul-Sep.2008, P91-98, Kundkund Jnanapitha, indore.
3. Second series of Experiment on Water-Aura, Jeoraj Jain, Arhat Vacan Kundkund Jnanapitha.

(See the Green etc colors in the lower Rectangular field)



Experiments by Dr. Vinod Shah

(Aura of water samples)

Colour code : **DB** - Dark Blue **LB** - Light blue
(In Aura Diagram) **G** - Green **LO** - Light Orange
 R - Red **Br** - Brown
 CR - Crimson Red **C** - Cement
 P - Pink

S.No.	Sample	Bottom Energy Diagram (Aura) (a)
1.	Aqua Guard	
2.	Tap Water	
3.	Bottled Mineral Water	
4.	Treated with Gobar ash	
5.	Distilled Water	
6.	RO Water	
7.	Tap Water Boiled & Cooled	

(a) = Energy of Samples (at the foot of sample container)

G=Green= 'Good energy' of sample water.

1. It is a general practice in India to wash the water containers and kitchen ware every morning. The steel utensils are rubbed with wet ash powder (Rakh) and then washed with water. For it, requisite quantity of water, filtered with a piece of cloth (garana) is taken from the tap in to a bucket. Then these wet utensils are dipped and washed in this water in the bucket. The quantity of water taken in the bucket should correspond to the number of utensils to be washed. This wash water is allowed to settle for at least 24 min. (i.e. one ghari). The excess ash powder gets precipitated at the bottom and clear colloidal water is obtained as Dhovana. This decanted water is then filtered for further use by the Sādhakas.

2. The kitchen-ware like chakla, rolling pin, flour-pan etc. are also washed with water after their use. This wash water also comes under the category of dhovana.
3. Before cooking, the cereals are washed several times. Their first wash is to remove the polishing agents and preservatives from the grains. Thereafter they are washed once again, with hand-rubbing action. Then they are kept soaked in water for some time, to facilitate boiling. This second wash water and the soaking water also come under the category of dhovana. The rubbing action and the prolonged soaking action make the water non-living. Instead of throwing it as waste, it can be consciously used as dhovana.
4. When vegetables, pulses and food-grains are boiled, either in open vessels or in pressure-cooker, the excess water is normally drained out and discarded. This water can effectively and beneficially be used as boiled non-living water.

All the above types of water are dead water and come as a **by product** of house hold activities. No extra activity is indulged into, to kill the water-bodied living-beings. This is considered as safe, pure and perfect dead water for Sādhakas, because it is obtained by sin-free or offence-free operation with care by the laity.

B) By foreign materials :-

Dhovana can also be made by mixing foreign materials into water. By mixing and dissolving ash, lime powder, cardamom, *Triphala* etc in living-water, it is rendered non-living. However, ash powder has been considered to be most effective and useful for making non-living water. Lime also makes the water effectively non-living. However, there should be a simple and practical way to judge as to how much quantity of lime would convert a unit of living water into non-living water. It is not correct to make dhovana by dissolving one or two pinch of ash powder into living water, because it would still remain either as living or mixed water solution.

The ash powder is mostly, either alkaline or neutral. Germs or bacteria, as such, do not grow in it. While dissolving ash powder into water, if some excess ash powder settles down at the bottom, the dissolved quantity of powder may be considered to be sufficient for making of proper dhovana water.

Some Jains use the clear lime water from the top of the lime solution, to make Dhovana . **Lime** is considered to be a very strong medium or tool to convert living to non-living water. However, the efficacy of clear lime water for this purpose may be **evaluated and** tested by modern means.

It is also difficult to judge the correct quantity of *trifla* to convert a unit quantity of living water into non-living, because its very small quantity is capable of changing the color of water. Thus its color dominance may lead to misjudgment of its efficacy. Ash powder and lime are easily available and are less costly. Dhovana would be acceptable only after the change of its color, smell, taste and touch.

C) Boiling :-

Water can be made non-living by boiling it above 90°C. Normally,

 (131)

 (131)

 (131)

 (131)

 (131)

 (131)

 (131)

2.Salt:

A few Acharyas have considered salt as a special material, having a mixture of all the 5 tastes viz.,

Type of tastes	Example
1. Pungent	Saunth, pepper
2. Bitter	Neem, Karela
3. Astringent	Amla, Harde, Kattha
4. Sour	Acidic items
5. Sweet	Sugar etc.

Salt is normally extracted from soil, mixed with water. Hence it is not considered to be an effective weapon to make 'non living-water. Since water is the birth place of salt, probably therefore, it is not considered to be an effective weapon for annihilating water bodied living-beings. It might be having power to make it dead. As per science, when salt molecule is dissolved in water it ionizes and its ions are covered by **hydration envelope** it does not go directly in molecular form to block the holes of net-like structure of water-bodied living-beings. Use of too much quantity of salt may result in this mode of killing by choking the water living-beings.

3. Materials of astringent taste (Trifala, Harde, Amla, Kattha etc.)

All these materials are considered to be feeble weapons. After eating these materials, water tastes pleasant or sweetish, although they themselves are of adverse taste. The color of water can be changed, even by very small amount of these materials. This makes it very difficult to judge beyond doubt, the actual quantity of materials, used in the water to make dhovana. One would always be suspicious about the quantity used. If excess quantity is used in form of fine powder, it may block the holes in the net-like structure of water to make it dead.

The uncertain data about the fineness of the powder & its quantity, doesn't allow one to judge properly, whether the water has become dead or whether the precipitate, which settles down, is due to sufficient dissolved quantity or because of coarse powder. Hence, in practice, it is not recommended to make dhovana by these foreign materials.

Water can make a good colloid by use of these materials in 500 &

above **mesh size** and water can be in non-living dhovana state in form of 'quath'. Right quantity of these materials, used for making dhovana cannot be ascertained well, just by seeing its color, because of its non-precipitation.

It may be noted here that it would now be possible with modern techniques to ascertain the correct size and quantity required to make non-living & useable dhovana water.

But due to astringent taste and **sweet after-taste**, it is not recommended for sādhakas.

4.Sand:

Sand is also not a recommended weapon, because it is also considered to be the birth place of water. Clay is highly soluble in water. Sādhakas don't consider the clay-dissolved water as non-living dhovana from practical point of view. At many places, it is found that the boring water contains a lot of clay, like in Howrah (WB) etc places. It is just possible that that much amount of clay may be able to make that water non-living! Boring water is able to hold a lot of dissolved clay and salts in underground state. But when it is pumped on to the surface and kept in open air, some of the clay starts settling on the walls of the vessel. From practical point of view, it is better to not to consider it as non-living. It is, of course, **now possible** to examin and judge a particular sample about its living-ness with the help of modern instrument and method.

Coarse sand (SiO_2) does not work as a weapon to make water non-living.

5. Lime- Ca(OH)_2

This is a stroger weapon than ash powder. Its small quantity is sufficient to make water non-living. Because it is strongly alkaline, it may affect tongue & stomach adversely. To reduce its strength, it is dissolved in water and the dilute lime water is taken from the top of the solution by decanting. In practice it is not possible for a laity to know the right amount used and its dilution degree. It forms colloid very fast and its solubility is very high.

There is no standard measurement to ascertain the right amount of highly soluble materials for ensuring 100% non-livingness. In case of

cow-dung ash powder, it is possible to get precipitation of it, even by dissolving comparatively smaller quantity.

Although the fineness of proper ash powder does not vary widely. but People are now also using **flyash**, which is easily available from industries. It is difficult to tell the proper quantity and fineness of fly-ash powder or lime of lime **solution** in practical terms. Modern gadgets may help to quantify these parameters for them. But then it has also to be simple and practically viable for a lay shrāvaka to adhere to it.

6. MILK:

It is a colloid and falls under an agreeable juice category. Its limit less quantity can be dissolved in water. It is available in body form, instead of in molecular form. It makes homogeneous solution with the body of water. If its container is rub washed with water, it can break the water body structure to make the wash water non-living. Even its minute quantity can change the colour of water. There is no precipitation in milk solution. As such from practical view point, it is considered to be unsuitable for making dhovana. Sādhakas do not take chance to remain under the state of suspicion.

7. Conclusion:

- i) Highly soluble materials or those materials, which are capable of changing the colour of water even with its minute quantity, are considered to be unsuitable for suspicion-free dhovana making. One of its reasons is that no practically simple and fool-proof measurement can be assigned for a just **“sufficient quantity”** of these materials. If the required quantity is small, it cannot be seen by way of precipitant. The precipitant indicator is the most practical method to keep the Sādhakas doubtfree about the validity of proper dhovana making process.
- ii) The astringent materials are not easily soluble, but can discolor the water even with the use of its minute quantity. The exact quantity used remains always uncertain. Hence they are declared unsuitable for efficient (prasuk) dhovana.
- iii) A few Acharyas have tried to specify how much Lime or Trifala powder should be used in 10 liters of water. It has to be vigorously stirred for a minute. It becomes useable dhovana after 24 minutes

(1 ghari). A few sâdhakas permit the use of diluted lime water from the top of a lime solution. This is mixed in a pot with living potable water and stirred well. It becomes non-living dhovana after 25-30 minutes.

In short, it is recommended that to overcome the state of uncertainty about the quantity and coarseness, the Jain samaj should now resort to **modern equipments** and techniques to quantify these parameter for 100% guaranteed non-living dhovana. In that condition, such dhovana, which are non-blemish, more non-violent and can be universally available, can provide perfect alternative to boiled water. Such experiments have to be conducted in the light of the recent research on water-bodied living-beings. The Jain Society has to change its mindset and show its commitment to Scientific Philosophy and Non-violence.



However, recently a **scientific model** of the structure of living water has been **formulated** by the author. The basic micro unit called '**Yoni**', consists of a minimum 18 water-molecules. It looks like a net type of hollow cylindrical structure, through which dissolved oxygen radicals can pass through. By conducting certain experiments, direct as well as through certain indirect evidences, the validity of the hypothesis has now been proved. With the help of the above noted model, it has been proved that it satisfies the basic criteria of a living-being. Certain interesting results are given below.

- (i) to **differentiate** between living and non-living water and to label it.
- (ii) to **understand** as to how living-water becomes non-living by boiling or by rub-washing it with foreign materials, a process called dhovana making.
- (iii) to understand as to how living water can carry **memory** and how a drop of water can contain innumerable no. of water-bodied living beings, which constantly undergo cycles of death and birth.

With a noble intention of **minimizing** the loss and **killing** of these bodies and to **protect environment**, **Jaina** ascetics and many laities **use only non-living water**. A feeling of **Karunā** is thus inculcated.

mixing of foreign materials like ash, cardamom etc into the water and shaking it well. The first method is a routine activity of Indian kitchens. A homogeneous and well rubbed water-mixture is 100% **non-living**. Very small quantities of edible kitchen materials from grains and utensils go into the water and remain there as colloidal. As such this process is less violent to other living-beings. This is called **Dhovana** or “wash-solution”. (Ref.: **Āchārāṅg**, 2nd Shrutskandh, Adhyāy 8th Uddeshak: 21 types of non-living water i.e. 20 types of Dhovana & 1 type of Boiled water. The last type of dhovana is termed thus :- “other type of dhovana like the wash-water of kitchen utensils, obtained after rubbing and cleaning them with ash.)

Scientifically judged, the foreign particles, during washing operation, block the openings of the tubular-body, so that it can no more **breathe**. The oxygen radicals are converted back into molecules. Due to internal rubbing, the yonis are also broken apart. The quantity of foreign materials should be more than a **critical** quantity, otherwise it would not be able to block the yonis and water would remain living-mass, as is the case with homeopathic remedies. It takes relatively longer time before it again becomes living-being.

One more thing happens in both these methods. The **mobile micro** organisms in water also become life-less. In the first method, it gets killed at elevated temp of boiling. In the second method, they are rendered lifeless due to rubbing, fatal contact and alkalinity of foreign materials.

Thus we see that during the process of making water non-living, not only the water yoni and the dissolved air are affected but its micro organisms and bacteria are also affected.

Q.2: What is the **chemistry** of making **Dhovana** by adding foreign materials?

A 2: The role of foreign materials mixed in water can be further analyzed.

There are two types of solids:-

Q.4 How do the **Monks** and the **Laity adjust** themselves with Dhovana / Boiled water of **limited shelf-life** to take care of its non-livingness endowed with “self-reversal” criteria?

i) If a suitable weapon is not reused after a definite period, called shelf-life, for any dead and stale mass of water, the water-bodied living-beings can take rebirth in that mass. Thus that water would again become living-mass. For boiled water, this period is 3 **Prahara** (1 prahara = 3 hours) in rainy season. For different seasons, different **time-limits** are carefully prescribed.

Time-period: After 2nd prahara (6 hours after sun-rise), monks can accept the dhovana water from laity, only after getting the already prepared dhovana (having ash sediment settled down at bottom) stirred well. That should also be not used after 5 prahara (15 hrs.). After accepting such water, monks further filter it with a piece of cloth. This filtered water is also not used for drinking after 9 hours in rainy season.. People, who do not have any **vow** to not to drink water after sun set (chouvihāra), but have taken a vow to not to drink any live-water,

normally make fresh dhovana in the evening, preferably by rubbing and washing utensils etc. There is no restriction for them to drink this water after the sun-set. The dhovana from morning, is not useable in the 2nd prahara of the night (3 hrs after sunset) for those having a vow of not drinking live-water.

Dhovana prepared with inadequate ash powder or washing and rinsing of 1-2 utensils or putting 2/4 cardamom or 2-4 crystals of sugar, might not have become 100% non-living, because its color, taste and touch sense at microscopic level might not have changed.

(It is known that increase of temperature and humidity promotes the birth of living-beings in water. The shelf-life of non-living water gets reduced by these 2 factors. Because fridge has colder and humid environment, non-livingness cannot remain for a longer period. Hence wise laity does not keep dhovana/boiled water in the fridge. Ice itself is living-water. If it is mixed with milk or juices, the liquids would become living body, at least for about ½ hour (24 minutes) after it's melting! Thereafter it may be in a state of 'mixed'-being)

Q 5: When the wash-solution (dhovana) becomes life-less due to operation/rubbing of foreign particles with it, the dissolved air continues to remain in it. It means, breathing action can continue. Then the assumption to have made the dhovana water life-less seems to be a mere deception.

A5:- Before any answer is given, first let us understand the science behind it. Although the dissolved air continues to remain in dhovana, the micro structure of the Yoni is broken down due to the rubbing and mixing action of the foreign materials, employed for preparing the wash solution. This makes the live water life-less. Because there is no appreciable change in the quantity of dissolved air, the time period of dhovana to remain non-living does not change with the season. Normally Sādhakas do not use dhovana after 9 hours for drinking. It may remain in non-living state for prolonged periods, if regular churning is done.

Q. 6:- Can the boiled water be reboiled after the expiry of its time-limit to make it again non-living for drinking purpose?

harmful materials like arsenic and fluorides etc.) is considered to be more useful, rather than being regarded as dirty water. Similarly, water mixed with ash or some other specified foreign materials, as per **standard** procedure, should be considered to be fit for consumption. All the foreign materials, which are prescribed to be used for making Dhovana, are edible materials except ash (burnt solid fuel). Ash is normally alkaline. If it goes into stomach, in small quantity, in form of colloids, it will not harm in any way. Moreover, Dhovana is normally used after proper settling process, so that the un dissolved solids are separated out from water. Because of alkalinity of ash, it may help in reducing acidity in stomach, when it reaches there in colloidal state.

Dhovana is non-living water. The mobile micro-organism, contained in the water also becomes non-living. Similarly, the oxygen radicals, present in the living-water, get destroyed during the process of making Dhovana. By using such radical-deficient water, it is found that the “emotions” of the user remain at low level!

In Dhovana, dirt of bio-cells is not present there. Hence it is considered to be quite fit for drinking.

Q. 10: Can one keep Dhovana or boiled water in Earthen pots?

A 10:- If the pots remain wet and unstirred for prolonged periods continuously, chances are that algae/fungus (Nigoda) starts building up on its surface. The household is then required to use his commonsense. For using earthen pots **four types of situations** arise:-

- 1a) We take all possible care to ensure that no fungus develops on the surface of the pot by
 - i) Rubbing thoroughly everyday morning with the hand, the inner and outer surfaces of pot and then washing it. Because the pot wall is porous, the pores may be blocked after sometime due to everyday rubbing action by hand.

In that case, water will not get cooled (due to non availability of trapped water in pores for evaporation and cooling).
 - ii) Otherwise, after sometimes, fungus starts developing in the pores unnoticed. In absence of vigorous hand rubbing, the fungus grows unobstructed.

- 1b) the **second method** is to dry the pot in the sun for one day. It should remain dry for a day and should be used again next day. A second pot should be used on alternate day. This precaution will prevent development of fungus on the pot surface for a long period. Alternatively, the pot should be emptied every night before going to bed and kept in inverted position to dry overnight.
- 1c) the **third method** is to treat water with a small quantity of disinfectant like potassium permanganate/chromate (say two drops) every morning. This is an oxidizing agent. The water is not rendered unfit by it. The water-born germs also become non-living. Specially, its use in rainy season enhances the quality of drinking water. Probably this treatment is also capable of converting water into non-living dhovana water.
- 1d) there may arise **another situation**. Either we are not fully aware about the above noted precautions of rub-washing and drying or we are negligent and allow the fungus to develop into the pores and on surface. Green or blackness on the inner surface of pot may even become visible. If it has become a careless routine, the fungus will also definitely creep into that dhovana everyday. This is not palatable to a sādḥaka.
- 2) Mere **contact of fungus** may not make the non-living water a living mass. That means dhovana does remain as non-living water. However, there is a strong possibility that the pot provides a breeding place for development of different types of fungus. This fungus may not be visible in the initial stages. But it is harmful to health.

To eliminate this possibility, it is better, as per the common sense, for an ordinary shrāvaka to not to store the dhovana in earthen pots. Ordinary shrāvaka means those people who can not take the requisite care for maintaining the pots fungus-free with above mentioned methods. In case of boiled water, we know that it is devoid of oxygen. Hence the possibility of development of fungus on the inner surface of pot is reduced for some time. After some time, the oxygen content in it also starts increasing. That time, the environment becomes conducive for development of fungus in that water.

gets condensed in form of drops on the surface of water container. If the container lid is not closed **air-tight**, there will be a passage for the ambient-air to come into contact with the water-surface inside the container. This water will absorb vapour from the air in form of condensed live-water drops. This would make the non-living water as mixed-water, having a mixture of living and non-living components. Thus it becomes unfit for use by the Sādhaka. (Ref.: **Suyagdānga Sutra**, 2nd Shrutskandha, 3rd Chapter p 112/113, “Āhāra Prigyā: The souls/lives of Dew-water take birth by adopting or absorbing the atomic-material of non-living water called **non-living** Yoni. Thus non-living mass is converted into living water mass.)

In case, the container is really air-tight (which is difficult to judge/ascertain, in normal conditions, by an ordinary shrāvaka), the water should remain as non-living. But it is always a doubtful case. However, when this fridge-cooled water is taken out from the fridge and the air tight lid is opened, it will be observed that the outer-surface of the container becomes wet due to dew-drops. Similarly, chances are that these drops are also formed and absorbed on the cold water-surface, due to large temperature difference. Thus the live dew-drops make it “mixed” and unfit for sādhakas.

We have also seen that low temperature and high humidity **promote** water to become live very fast. Hence the non-living water in the ambience of fridge may become “live” very fast.

Q.13 :- While making dhovana or during boiling, the water-bodied living-beings as well as the animate micro-organisms in it are ultimately killed. Then why should we resort to all this ostentation? We do not save any living-being by adopting processes of dhowan-making or boiling for sādhakas. How can we consider these practices as non-violent or non-injurious in line with the spirit of ahimsā-vow?

A 13:- There are 3-4 different aspects of it which should be taken into account.

- (i) **A day's** requirement of water is normally stored in pots. It is filtered through a piece of cloth before making any type of non-

living water, Care is also taken to dispose off the micro-organisms in the filter cloth by washing it properly, so that these organisms are not killed.

- (ii) Making dhovana by washing the morning kitchen utensils with this filtered living water is considered as an essential activity of the kitchen for the household sustenance. As such Sādhakas do not become the cause to provoke or induce this activity. Hence, loss of living-beings in this activity can be considered for the householder as **Ārambhjā himsā** i.e. minimum life disturbing activity to sustain the prudent householder's life. In doing his chorus or routine kitchen activity i.e., washing, dhovana is generated as a **side-product** only. It is not an intentional stand-alone activity. This is the **ideal non-violent** process to generate dhovana.
- (iii) However, making dhovana by other means or boiling the filtered water purposely for drinking, cannot be considered as side-activity. Nevertheless, a wise householder uses the technique very judiciously to achieve his **objective of minimum** possible life-disturbance. Following **two methods** can be adopted to get non-living water:-
- (a) **First Method** (Path of least Himsā): Making dhovana by use of repugnant foreign materials, or boiling the water in **Sun-cooker/heater**. Here a minimum possible himsā of water-life is involved, because the prudent house holder, first estimates his day's requirement & then takes that much of quantity only for this operation. That means, he judiciously limits his requirement. This is a kind of **Tapa/Penance**, which inculcates in one's mind, the habits of **limiting** or budgeting the requirement. Use of sun-heater for boiling also avoids the direct use of fire-bodied agnikāya. Thus boiled water can be obtained **without the killing (himsā) of agni-kāya**. **Minimization** of himsā is a trait of **Ārambhjā-Himsā**, (under compulsion) which differentiates it from **Sankalpjā-Himsā**.
- (b) **Second Method** is boiling the water by use of furnace

fire. It does involve more himsã/violence, in form of additional disturbance to fire-bodied life, as well as air-bodied life. As per above deductions, use of **agni-kāya** should normally be avoided by householders. However, on cloudy-days, when sun is not available in the morning hours, and where efficacy of some dhovana-making process is doubtful (though seldom), this practice may be resorted to.

- (iv) In above techniques and processes, some important aspects, of our '**Intentions/Purpose**' and "**Quantity**" are also involved. The intention is to
 - a) Minimize the consumption and eliminate waste, and
 - b) To minimize the impact of life-disturbing activity.

This is explained in detail as below.

One drop of living-water (**Sachitta**-water), it is known, contains 'innumerable' water bodied living-beings. They exist in a state of continuous birth and death cycle. In an open position, we become the cause for their life and death for all the water stored in our tanks and pots because of our **attachment** with it. Just imagine their numbers. It is “innumerable” in just one drop! That too, their deaths, occurring every moment are solely due to us.

However, if we budget our requirement and limit the quantity for making dhovana or for boiling, we are responsible for himsā of that much limited quantity only. The intention of shrāṅvaka is to avoid killing of innumerable number of lives and strive to limit it consciously with a feeling of compassion.

Moreover, by same reasoning, we find that once the water is made non-living, that water remains devoid of water-bodied life for a period of say 8 hours. As such the deaths occurring every second in living-water are avoided for that period. Thus 'himsā' is minimized to a great extent by these operations. The himsā in 'boiling' the water may still be far less than that occurring in innumerable life-cycles of stored live-water, in 10-12 hrs. The boiled water, we know, remains non-living for more than 10 hrs. Our emotion of **Karunā** (compassion) is reinforced due to this act.

These have been analyzed below in the light of the new scientific “**theory of water-bodied life without DNA and RNA**” and with the relevant understanding of Himsā. While enumerating it in Toto, some of the points, already covered in the aforementioned text, are **likely to be repeated**.

Let us first test the rationality of new arguments and also examine, whether the old stand has any scientific basis, in the light of the latest theory of water-bodied lives.

It is true that in boiling, the water bodied living-beings are killed. One has not saved the living-beings by boiling. Let us understand the real logic behind it.

When we store raw water in the pitcher for our use, the water-bodied living beings (**wbl-beings**) are afraid of us. This is but natural for any living-being. Our intention was, definitely, to use it. That means it will be killed.

- (i) **In this raw water**, the cycle of birth and death will continue till we consume it. Thus in a way we become the cause for this continuous activity of deaths of innumerable wbl-beings as per **Vyavahar Naya**.
- (ii) If this water is boiled, all these Sthāwarkāya- beings would be killed once for all. After that no wbl-beings will be born in it throughout its shelf-life. Thus the total deaths are vastly minimized in that water, kept for our consumption.
- (iii) Thus there is a vast difference in the number of living-beings killed, in storing water either in living or in non-living form. In the later process, innumerable wbl-beings are killed only once during 8-10 hours of shelf-life, where as innumerable living-beings would be killed every moment in the living-water through out its storage period!

There is, of course, no difference in the number of mobile living-beings involved in both forms of water.

Q 16:- This is your argument. You cannot feel the actual pain of suffering or killing. Let us ask the water itself, which is stored in a glass. What does it think? Would it like to request us to be consumed in raw condition or after boiling?

- ii) **Himsā** can also be divided in 6 categories as per our **“Intentions: or “Contemplations”** better called as **Leshyā**.
 - a) They represent the quantum of “cruelty” of our intentions and are expressed vividly in the classical example of 6 persons, desirous of eating Jamunas from a Tree!
 - b) The **“intentions”** decide the bonding-strength of karma with our soul. The cruelest intention will produce the strongest bond, which cannot be altered or weakened even by doing austerity or penance.

- 1) As such '**discretion**' (**Yatnā**) should be used to indulge into only those essential activities, which form part of our '**duty**' towards our family and society and not to indulge in '**greed**' and '**attachment**'.
- 2) Must have a sense of '**repentness**' towards himsā and must nourish compassion in our heart.
- 3) Strive to **limit** the himsā and take vows to **restrain** it.
- 4) Identify **wasteful himsā** and eliminate such unnecessary himsā.

- 1) It is well known that the process of boiling is **more violent** than that of Dhovana making. The user of “**fire**” is regarded as **the killer** of all the 6 types of living-beings (Āchārāṅga, 1st Shrutskandh, 1st Adhyāya).

- 2) Even if Dhovana is required to be made by some other method, it still breeds an **attitude of minimization** of himsā and cruelty, which is an essential part of less violent Ārambhjā **himsā**- himsā in daily routines. The himsā of fire-bodied lives is saved in this method.
- 3) All these **essential** activities belong to **Arambhaja** himsā

(violence in daily routines for sustenance). The strength of Karmic bond will not be so strong. Although himsā in the routines like cutting of vegetable, fruits etc are done knowingly, it is done with a sense of **constraint, compassion and helplessness.**

- 4) In Uttaradhyayan (2131) sutra, it is clarified that if our **diet is helpful** in keeping us alive and **convinced in our vows**, it cannot be termed as **one-sided sin**.
 - 5) Since the killings in fire are still far less in quantity than that involved in continuous life-death cycle of water-bodied living beings, it is recommended to use boiled water throughout the day.
 - 6) One can **reduce** the quantum of himsã drastically by using non-living **solar heat** to boil the water. Use of **solar-heaters**, manifests **our will** to reduce or minimize the himsã. **It saves the killings of fire-bodied as well as air-bodied living-beings**.
- (B) **Answer** to the above question was also sought from the Reverend **Shrutdhara Sãdhuji**. The clarifications are like this:-
1. **Cause of Himsã:** When raw water is stored in the house for drinking purpose, innumerable life cycles of water bodied living-beings are repeated every moment. In a way, I become the cause of their birth and death cycles from vyavahara view point.
 2. **Additional Sufferings:** Whenever we take out a glass of water from the pitcher, “Jalakãya” (water-being) suffers a lot due to dipping and taking out the glass from the water. I am the cause of this suffering. They will suffer every time the water is taken out. If the stored water were non-living, we would be saved of this injury-inflicting Himsã.
 3. **Limiting the Quantity:** If a vow is taken for use of non-living water, the consumption would be restricted to a certain quantity for the whole day, because only a limited quantity has been made non-living. This is an **additional benefit** of one's

vow to drink non-living water only.

4. **Outings:** When one is outdoors, he will not use the normally available, living raw water. Thus, one would be saved of the habit of drinking small-small quantity of raw water during every outing or visit. One would thus be drinking water after coming back to his house due to his vow and limitation.
- iv). **We reconsider the point (i) again with an example.**

“I am responsible for the Himsã of birth and death in the pitcher”, says one Shrāvaka.

Let us check it from another angle.

Example: There is a stone lying outside my house, but I do not notice it. Since I do not have any attachment to it, I do not incur any Karmic-bond with it. If at any time, I pick it up & keep the stone in my house, thinking that it would be useful for me for some particular job in future; I would create a Bhava (“**subjective attachment**”) Bandha with it. When I throw it out again, thinking it to be useless for me, my bondage is broken with it.

Similarly, when I keep a pitcher full of raw water for my use, I create a subjective Karmic bondage with that water.

In the same way, if I purchase and bring 1 kg of potato in my house, I do create a subjective Karmic bondage with it.

Now the question arises,

Whether I become a cause of running of life cycles of “birth/death” in that pitcher or potato, from the time I bring them in the house till I use it? Shall I be held responsible for the birth-deaths cycles taking placing in it?

If yes, will I be attracting Karma accordingly?

“If I consider the **loss-gain** of the alien matter, like potato or water as my own loss-gain, it would inculcate attachment-detachment **bhāva** (feelings) in me. But if I do not consider it as my own loss or gain, there will be no subjective Karmic bondage”.

This can be further elaborated in following manner:-

- v) If I think in terms of “**Bheda-Vigyāna**” i.e., my (soul) entity is different from my material body. I do not involve my

Q. 17 b) Boiling process is more cruel and violent to convert living water into non-living water rather than the process of making Dhovana. Boiling involves the use of fire, which results in gross killings of fire-bodied lives as well as that of air-bodied living-beings.

What benefits are derived by drinking boiled or dhovana water?

In the light of above noted 17B, following benefits are bestowed due to drinking of non-living water.

- Q.18:- You consider Dhovana to be less violent, but bubbles have been seen sometimes coming out of dhovana. Hence it becomes more violent due to fermentation. Fermentation**

sustaining activities. This “himsā” is termed as “**Ārambhjā Himsā**”. Its stickiness of Karmic bond is of second grade.

- iii) Our common sense constantly reminds us to minimize or eliminate the wasteful **himsā**. This compulsion drives us to use boiled or dhovana water. Our humbleness and helplessness towards such living-beings **enhance** our inner **human values**. Otherwise one may tend to become reckless towards natural resources, and may pose a serious threat to the **ecological balance**.

Q. 20:- A glass of water is taken directly from the tap for drinking or other purpose. At the most, care is taken to put a filter cloth or device on the tap to remove carefully the macro mobile living-beings from the tap water. We do not require water to be stored for us. Hence we do not bear any liability for the himsā.

A20:- In the above situation of not having any water pot, the water comes either from an overhead tank or from some other reservoir. One is always aware and sure that water would be available in the house, whenever the need arises for it. It means the whole system of pipes etc. works as storage for the user. In resorting to storage, there is a known limit of water for one's use. One becomes **limit-setting shrāvaka** by habit and design. When there is no alertness and unlimited water remains at one's disposal, one is categorized as no limit-setting shrāvaka. As per Āgamas, limit-setting shrāvaka (**Vrati**) carries far lesser liabilities for himṣā. Moreover, one using direct tap water without resorting to a limited storage of it becomes liable for killing of **unlimited water-beings** in the piping system, for which one has '**attachment**' and ownership. This situation may also apply to all systems of public taps, if water from it, is not separately stored and consumed.

Q. 21:- We are using **Aqua-guard** water purification unit. This unit uses carbon granules and filter candle and dispenses water, which is free from bacteria and other harmful substances. This purification process should thus transform the water into non-living water!

Q. 23:- With due respect, the dogmatic approach to obtain water from “**wiping of floors**” should be discouraged in our society, especially from hygienic point of view. Such practices induce and attract attention of non-Jainas to think and label our society as dirty, unhygienic and repugnant.

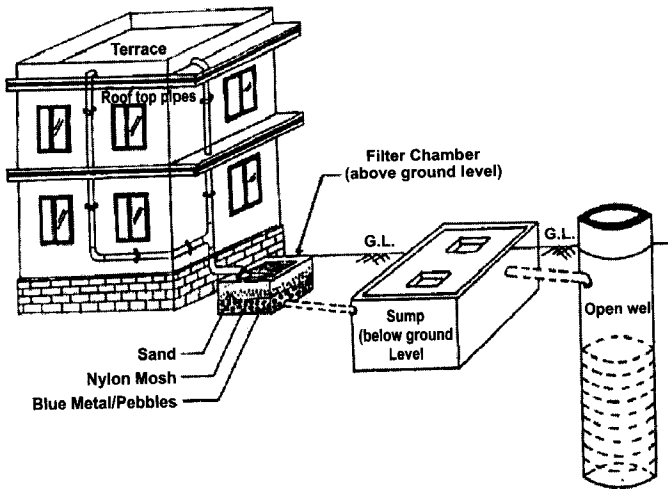
As per science also, there is hardly any room to remotely consider such water fit for use by our Saints!

A 23:- Here, the basic idea is to **conserve** and **re-use** water. If one can '**recycle**' or 'reuse' a natural resource, it should be **encouraged** and not disrespected. Normally, people store this used water (if no chemicals were used in wiping), then **decant** it, allowing it to settle for sometime. Then filter it. The filtered water may be used for **flushing** lavatories or even for washing of **dirtier** wiping-clothes etc. It is all about applying **common sense** in practice to achieve the objective of '**conservation**' of natural resource. It is here, that the '**relative**' grade of **purity** of water is matched with the **purpose** of usage.

Here, one is reminded of the famous story of **Akbar** and **Birbal**. Birbal could make Akbar drink with pleasure one glass of that water, which was brought from the dirtiest source, and hated earlier by Akbar himself. However, it was offered only after subjecting it to proper **purification** and flavoring treatment. '**Hate**' was thus converted into **liking** by matching the purity with the purpose of use. Actually hate is mostly an outcome of our preconceived ideas or notion.



A. : RAINWATER HARVESTING USING SUMP AND OPEN WELL



B. : PERCOLATION / RECHARGE BORE PIT

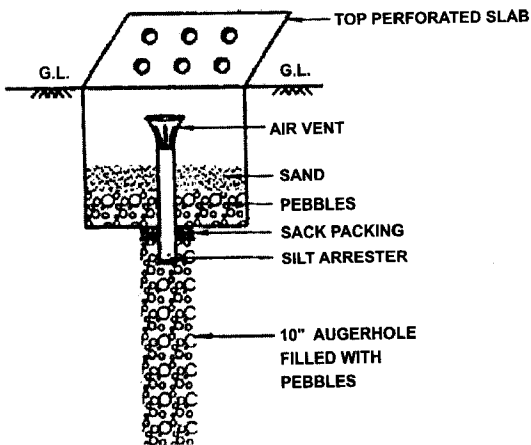


FOTO 1 : HARVESTING ROOF - WATER

Dynamisation of Water

(Fundamentals of potency making)

Introduction

The results of the investigations done so far stand as below:-

i) Living water-cells and Working Principle of Homeopathy (Ref. 1, 3)

A) Structure of pure water

1. **Polar molecules** of water form self-assembled nanostructures in hexa or penta shape, called quantum crystals.
2. These unit structures join together to form **net-like nano-tubes** or cylindrical structures, called CELLS.
3. These “tubes” have “ion-implant” facility in its quantum vacancy and are surrounded with its own energy field.

B) Dissolved oxygen in water

1. It makes the hydrogen bond of water stronger. Cell energy keeps the movement of oxygen molecules or radicals in dynamic balance.
2. It is absorbed (digested) in the hollow spaces of tube and in its “quantum” vacancy to form a “**zygote**” (**yoni**).
3. Its flow generates electric energy by its movements. Its potential energy is fixed in the nano-tube.
4. It renders the tube as living water-cell.

C) Training of cells (Dynamisation):

1. When molecules of a chemical or its "ions" are implanted in the quantum vacancy of living-water cells as "impuritons", it imparts its e.m. field properties i.e., em vibrations to the cell by means of induction as well as conduction.
2. Apart from this frequency-transcription on the whole body, certain properties of ions are also transferred to the surface of the water-cell.

D) Subsequent characterization of water

1. After 7-8 sequential dilutions (potency making), ions would not be available to diffuse in the quantum vacancy of fresh water-cells.
2. The frequency-transcription of water cells gets stronger and stronger, like multi-layer **jacketing** in mechanical vessels, by mixing of the pre-trained water-cells, for better metabolization of instructions.
3. In other words, coaxed tube gets reinforcement in form of “cell-sleeving”.

E) Influence of Trained cells

1. When the **characterized water-cell**, carrying the frequency mode and the energy configuration specific to the introduced chemical, goes into the blood stream, it enhances the Zeta potential (-ve charge) in the blood cells. Subsequently, when it goes into the body-cells through absorption and diffusion from the circulating blood stream, it influences the inner structure of the cell.
2. When it passes through the micro-pores of the cell-membrane, it generates **electric pulses**, which are used by neurons and other cells for communication.
3. Once inside the cell, it acts as a catalyst for genes. It creates resonance with a specific portion of DNA or genes. The individual threads of **DNA and RNA get modified**.
4. It creates or refreshes gene-memory and enhances the capability of that particular immune system to modify long term coded-instructions and code-density to stimulate either Synthesis of homeo-compounds or Production of antibodies at faster rate.
5. Effectiveness of above instructions depends on the training-grade (density and depth of its impressions) or memory-field of the characterized living water-cell.

F) Corollary with Homeopathic system

In this system, remedies are prepared exactly in the same manner as in the process of water characterization. Success of homeopathic remedy depends on the living water cells, who carry faithfully the instructions to the affected body at genetic level. Since the effectiveness of Homeopathic is well established/proved in practice, the above theory of living-water thus gets indirectly

validated by it.

ii) Non-living water and its Comparison with Living-water (Ref. 1, 2)

A) Non-living water

An attempt has been made to explain various procedures to produce it, to study its life span and its characteristics. The Importance of its utility in present day eco-system has been scientifically explained by this theory.

B) Aura of water energy

Different types of water should have, logically, different energy auras. Experiments were conducted to photograph the auras of various types of living and dead water. The mapping of aura and its analysis corroborates convincingly well with the theoretical deductions. Variation in Aura, obtained under different living-conditions validates the theory of existence of living and non-living water.

C) Assessment

- a) In view of the deductions made in the above two articles, it is evident that **Water** does **Exist** as Living-being. It can be made non-living mass by conducting certain operations on it.
- b) Living water can carry and transfer its acquired properties and memory to other similar well defined clusters of water cells, even though they do not have the traditional DNA, RNA or TNA chemicals in it. The properties are transcribed on the special energy field surrounding the nano net-like cell structure of water.
- c) Modern Imaging Techniques may reveal various aspects of this interesting phenomenon. "Aura" photography is the simplest of various methods, which has been utilized to unearth some basic traits of it.

D) Further Study of Dynamisation Process

Nomenclature:-

- i) Suffixes of Energy E without brackets denote **Type of Energy**,
- ii) Suffixes of Energy E with brackets denote **Type of Water** or its content.

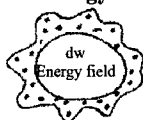
$$E_d = E_p + E'_{(b)} + E_{(li)} - E_{(o/r)}$$

$$E_p + E_{(li)} - E_{(o/r)} + E_{(b)} - E_{(Mi)} \dots \dots \dots (2)$$

$$E_{(x)} = E'_{(b)} + E_{(li)} - E_{(o/r)} + E_{(p)} = E_{(d)}$$

E_d = disciplined energy, after absorption of E_p by $E_{(li)}$

H.F. Energy Pulses



(Live Distilled water)
Fig. 1

Distilled water aura $E'_{(b)}$ gets surrounded by HF energy pulses. When it becomes live. (Fig.1)

$E(A)$ depends on its scattering or better called Discipline / Randomness

It is observed that by dynamisation, discipline increases, but 'A' decreases due to reduction in scattering.

Effect of Dynamisation on HF pulses

The HF pulses actually get smoothened as below, by dynamisation. (Fig.2)

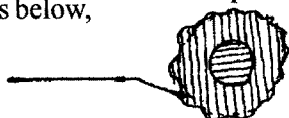


Fig.2

In Mehta's Mode:-

E_t = Total energy (sum of co-existant good and bad energies, represented by EA).

If E_g is a part of EA (Total Area of scattered aura energy)

$E_g < EA$ (i.e. if aura is 14, E_g could be, say 8)

Normally, EA should have the components like E_g, E_b, E_n, E_p , etc.,

$EA = E_g + E_b + E_n + E_p$, where E_n and E_p may be neutral. The pranik energy from cosmos, reduces the energy area by enforcing disciplining act, like that of a Centripetal force.

03). Observations Revisited:- (Ref. 1, 2)

Shah's scattering in energy field is not seen in Mehta's foto, because of its different technique. Mehta's coloured aura rings are continuous rings, merging one into other. It does not contain peaks, valleys or comets etc on the **outer rings**! (Fig. 3)

Smooth rings of different colors (Mehta)

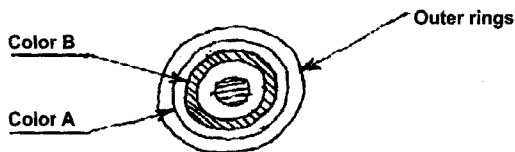
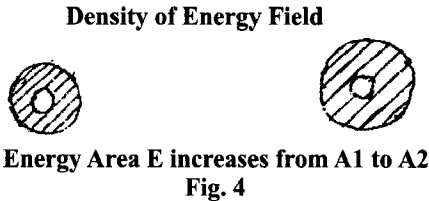


Fig. 3

04). Revelations in Shah's Fotos:-

Shah has given information about E_t (area) and **symmetry** of content or its density.

(a) Area of Energy Field (Fig. 4)

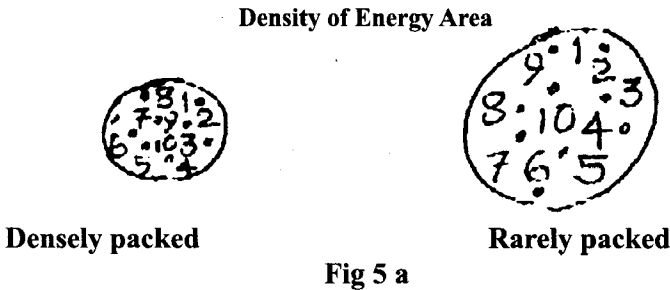


Area increases from A1 & A2

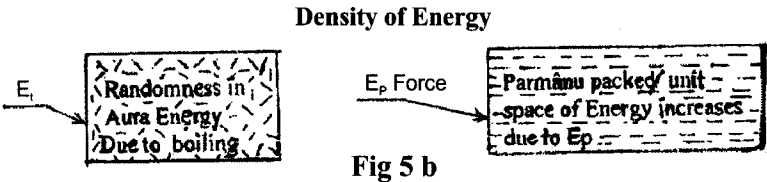
EA is not a measure of energy value, because the value depends on the density of energy packed in this area. **Boiling operation rarefies** the energy in this area. (Fig. 4)

Parmanus packed/unit space is density. Hence total parmanus packed = Area x density.

It can also be represented as follows, by keeping no. of dots (parmanus/wavicles). (Ref. 4, 5) constant. i.e.,



Densely packed (Area is reduced) means the density is increased. Fig. 5a,b

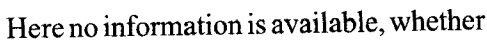


i) As per Shah's Foto (fig. 6)



It does not give any idea of the nature of its contents i.e., E_g or E_b or E_d or E_p , as well as their quantity.

Ratio of good and bad energy



- a) E_i is changing or not?
- b) E_d or E_p is present (may be in some other colour) or not?
- c) When E_t changes, E_g & E_b may change in different ratio
- d) Mehta may not give idea about **energy-density**
- e) It also does not give any idea about **Symmetry**

Result:- By comparison, it can be inferred that

- 1) E_i may change by change of $(E_b + E_g)$ components
- 2) E_i may change by change in density of $E_b + E_g$.

i) Energy of radicals is treated as negative energy (-) $E_{(o/r)}$. It is subtracted in Shah's mode to arrive at net energy of that water sample! However in Mehta's mode, it is observed that good & bad energies **coexist** around the body and both of them jointly

form the “area of aura energy”. Fig. 8

- ii) During '**sanskar**' operation --- total energy area goes on decreasing because of higher density of aura energy field due to disciplinary action of **prāṇik** energy. (Ref. 1, 4, 6)

When “dynamisation” is done, then the density of 'energy lines' increases in shah's mode. (Ref.1), thereby reducing the “energy-area”.

Good and bad energy in Aura Area

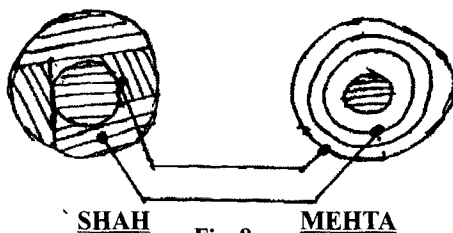


Fig. 8

(all words in continuation) the “energy-area”.

It also increases the symmetry of the field (sample X and XX).

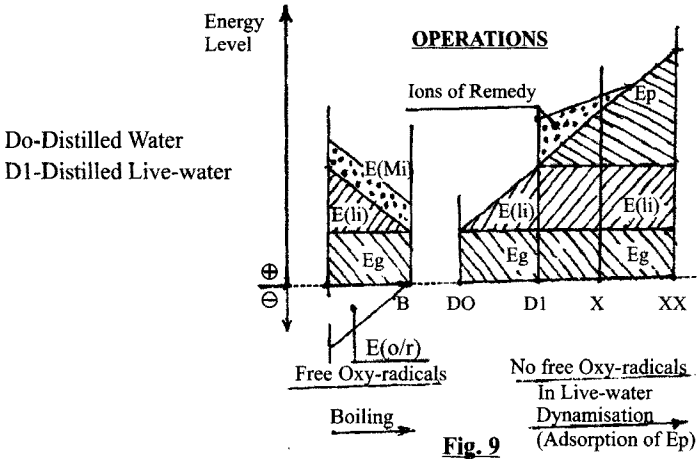
- iii) $E_{(o/r)}$ remain same for both X and XX homeo remedies.

In tap water $E_g = 0$ (in Mehta's mode). $E_{(li)}$ is same in T, X and XX.

iv) As a result of boiling :- (Ref. 1,2,3)

- $E_{(or)}$ is reduced to zero. There is good energy only
- $E_{(li)}$ of water-being is also “zero”, because it becomes non-living water.
- $E_{(li)}$ is due to $E_{(or)}$. Before boiling, some radicals may exist as free radicals and others move as dedicated radicals through nano tubular structure of water-yoni body. They are bound with the structure of water yoni/body.
- It increases the **entropy** and thus maximum randomness is achieved in water aura area.
- Here, the energy is represented by $E_{(Mi)}$ and $E_{(dw)}$
- In **distilled** water, $E_{(Mi)}$ is also zero. Hence, its residual energy would be the Basic $E_{(dw)}$ energy only (or E_g) **Fig. 9**

Effect of Boiling and Dynamisation



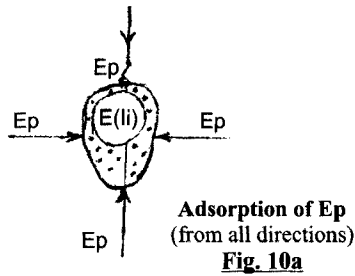
06) Effect of Pranik Energy (Fig. 10a, b).

E_p (cosmic energy absorbed by Live-water)

Due to action of Centripetal force of E_p on the existing energy field:-

- i) The existing field gets disciplined as E_d , and
- ii) The $E(li)$ component of the existing energy field adsorbs E_p

Effect of E_p absorption



Adsorption of Pranik Energy by the unsaturated / unsatisfied surface forces on the envelope reduces peaks and scattering of energyfield area. Compression by E_p makes the area A more coherent and smaller due to dynamisation. As expressed in equation (1),

$$E_{d(li)} = E_p + E_{(li)} + E_{(b)} - E_{(Mi)} - E_{(o/r)} \dots \dots \dots \text{SHAH}$$

The diagram shows a cross-section of a Prandtl ring (Pranik) with a central core. A trapezoidal load labeled E_p is applied to the top of the ring. Two horizontal lines on the right represent energy levels: $E_{(d)}$ (dashed line) and $E_{(II)}$ (solid line). An arrow labeled 'i) Pranik' points to the ring. Below the diagram, four items are listed:

- ii) Good energy.....→ - no change
- iii) Bad energy.....→ - no change
- iv) Total energy = $E_d = E_a + E_p - E_b$

As per Vargana principle (Ref.6) the energy area would decrease and its density increase, when the prāṇik energy increases by adsorption.

$E_e \div EA$ Density of energy. (E_d is a measure of energy density).

By application of E_p , A is reduced, E_t would increase, and density of energy E_d would increase.

i) In dynamisation, the energy field area may not expand. Only the energy concentration / density is increased (Ref 1). The symmetry of field also increases, as revealed in the samples X and XX. Here, whether Area A is also reduced or not, is to be rechecked & verified. A reduction in area would correspond to the principle of conversion of a vargana into higher varganas as per Ref. 5, 6.

ii) **Process Analysis and its Flow diagram, Fig. 11 to 15** (Enhancing the potency from 6X to 7X, Ref. 3). When a characterized structure is mixed with pure live-water cells, the core-molecule of characterized cell gets surrounded by raw water-cells as a hydration envelope.

The surrounding water cells attain the quality of core molecule by Induction process. Their surface energy tentacles (as windows) open up.

That means:

a) Induction process transfers the properties of previous core-

molecule of remedy to the cluster of the new raw water-cells.

- b) Induction opens up surface tentacles of water clusters. These tentacles help in absorbing “**Pranik Energy**” in subsequent mechanical shakes.
- iii) When a drop of 6x remedy is mixed in fresh distilled water for making 7X potency, the fresh water makes a **hydration-envelope** around the water-cell body of 6X. The envelope gets the same disciplined structure of energy field, as that of 6X due to induction. But its outer periphery opens up its **energy tentacles** (Fig 12), like surface fibers, during mechanical stirrings of potency making to receive further E_p (cosmic energy).

It is to be noted that the original 6X mol was saturated with E_p , it did not have any 'open' window to receive further ' E_p ' for next higher potency.

The new envelope surface has unsatisfied attractive forces, better called **residual valence** forces. These forces are largely responsible for adsorption of cosmic energy.

The discipline level of hydration envelope is enhanced to that of 6X mol, probably in the 1st stirring itself.

- iv) Envelope is assembled in 3D mode with **individual** mols of water having 6X discipline, but having window-openings in the **energy-field**. Fresh cosmic-energy is adsorbed through these windows and the envelope gets further disciplined (Fig13) in subsequent stirrings. As ' E_p ' is adsorbed, the open windows start closing down. The opening or the adsorption capacity gets reduced.
- v) As soon as the envelope gets **saturated**, the windows (openings) are **shut completely** (Fig14). Then the envelope cannot hold its members together any more. All constituent cells **fall apart**, as fully disciplined entities with 7X potency.
- vi) Each mol is saturated with 7X energy (Fig 15) and doesn't have any open-window to absorb further cosmic energy.

(Pure solvent water normally gets disciplined in the **first stirring** itself by **induction** method in potency making)

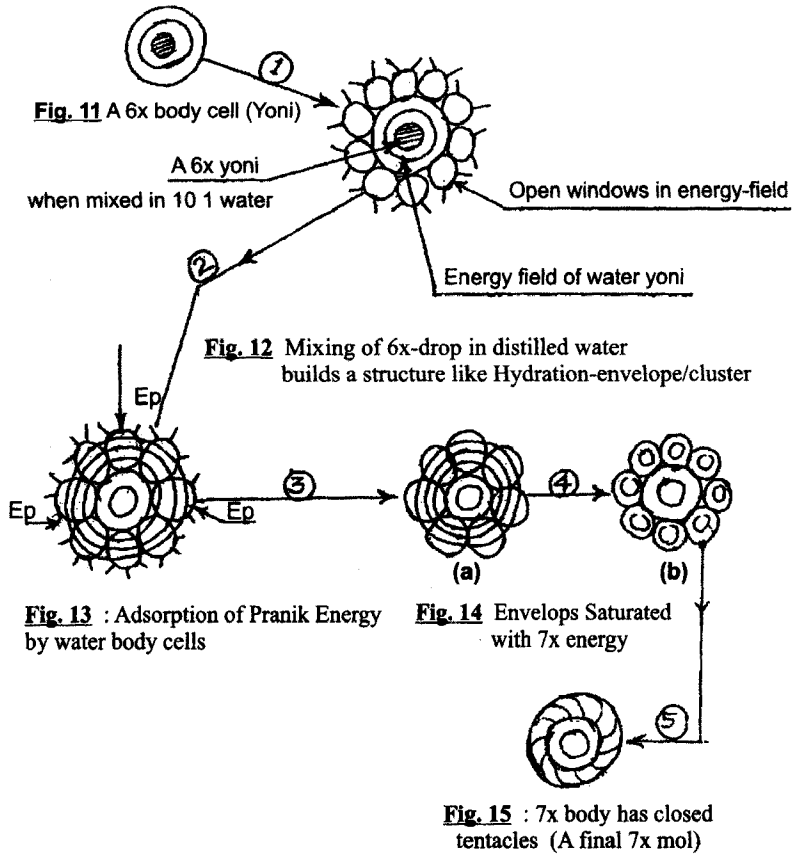
08) Conclusion

Above understanding of the process of characterization will provide a strong **Foundation** for '**homeopathy**' studies and practice proven-observation. Some Doctors and Practitioners forwarded a number of queries and sought explanation, as to how the above theory can provide solution to them. This would be dealt in the next article.

Reference:

1. Jeoraj Jain, "Second Series of Experiments on Water-Aura"
Unpublished manuscript.
2. Jeoraj Jain, "Non-living Water and its comparison with living water", Arhar Vacan, 20 (3), Jul-Sep. 2008, p91-98, Kundkund Jnanapitha, Indore.
3. Jeoraj Jain, "Living water-cells and working principle of Homoeopathy, Arhat Vacan, jan-Jun 2007, p95-102, Kundkund Jnanapitha, Indore.
4. Acarya Sri kanaknandji, Anant Sakti Sampanna Parmanu se Lekar Parmatma, Dharma Darsan Seva Sansthn, Udaipur-1
5. Dr. N. L. kachara, Jaina Karma Sidhanta, Adhyama aur Vigyan, Dharm Darsan Seva Santhan, Udaipur
6. Narayan lal Kachara, Vargana Vigyan, Arhat Vacan, Oct. Dec. 2008, p 03-24 Kundkund Jnanapitha, Indore.

Dynamisation Process (Flow - Chart)



Dynamised Water

Introduction

After publication of the hypothesis of **Live Water-cells** without traditional **DNA/RNA** and the feasibility of its characterization, a number of queries were raised about its different aspects from various quarters, **including professionals**. A few of the interesting queries are dealt below for better understanding of its various aspects.

Before we deal with the queries, let us first recall the events taking place during **potency-making**. It is a process of energy adsorption and strengthening of **memory imprints**.

- I) During **dynamisation** process, the energy of live water $E_{(ii)}$ **adsorbs** cosmic energy (**Ep**). Due to disciplining action of E_p , the total energy content (E_t) increases and the **energy area (EA) decreases**. This has been observed in the Aura photographs. Thus the energy density E_d increases. Also, the good energy E_g increases.
- ii) During dynamisation process, the initial mode of Vibration (IMV) of the foreign ion (medicine) is transferred to every fresh living water-cell of the envelope. This may happen even during the first stirring of the total 9 shakes. That means the whole water mass achieves the properties of previous potency during the first shake itself.
- iii) The impurities (water cells implanted with foreign ions) are gradually washed away.
- iv) As the “energy” content increases during subsequent shakes, the IMV gets reinforced due to “sleeving” process.
- v) The final 9th shake makes the envelope or cluster saturated with the Pranik Energy. The window openings or tentacles get fully closed, so that constituent cells of the envelope fall apart loose in form of individual cells, charged with reinforced memory in form of sleeved IMV of the next higher potency.

happens to the frequency of remedy, if two or more chemicals are used for making it?

Ans. In homeopathic preparations, two or more chemicals **may** be used. The imprints of their properties on the envelope body would naturally be multi dimensional. The combined property of all the chemicals will have a **vectorial summation** to form IMV on the envelope. Initially '**IONS**' of chemicals remain embedded in the envelope. They are flushed out during subsequent dilutions. The effect of **IMV**, then becomes more pronounced. During such characterization of a water-cell (which is a 3-dimensional entity), the vibratory, electrical and electro-magnetic properties of a chemical are transferred by modifying the shape, size, profile and its surrounding energy field of the water-cell.

Q.4 How does this 'imprint' **communicate** with the genes at subtle level?

Ans. The imprint communicates with specific genes within a bio-cell through non-contact means like induction, resonance etc. This communication is instant. This is some sort of physical phenomenon, not found in classical physics. This is also chemical phenomenon like that of neurons. But this can be better explained theoretically by super-string theory i.e., by M-brane. Here it is presumed that a molecule influences its counterpart not by chemical means i.e., by having different **potential energies** of valence electrons, but by physical means i.e., by having different **kinetic energies** of its wavicles.

Q.5 In sequential dilution, initially there should be **two types of envelopes** or cells. One with trace elements and other without trace elements i.e., one with memory imprint and other without memory imprint?

Ans. This is true. But in systematic and controlled sequential dilution, there will ultimately be only one type of envelopes. All the tubular water cells will have the same type of memory-imprints on them, when they become free of trace elements, called **impuriton**.

shape, size, as well as the vibratory and elctro-magnetic properties of **nano-cell**.

During early stages of dilution, the type of embedded ions may differ from cell to cell. These ions “manifest” themselves as “impurities” in the process and are washed away subsequently.

However, individual cells do not conform to the properties of the individual embedded ions only. They **conform to the IMV**, which is a replica of the combined property. The effect of IMV would then become more pronounced.

Q.9 On what factors does the **memory** depend?

Ans. The stability of memory/imprints on water cells depends on Temperature, **Environmental** conditions and the Purity i.e. the degree of ultra dilution.

Q.10 **Hydrogen bond** of water molecules is about $1/20^{\text{th}}$ as strong as a covalent bond. They last for a fraction of a second. The water molecules continuously form new bond with other water molecule around them. This produces simple waves, like those in lakes. Then how does the stability of envelope and its memory **imprints survive**?

Ans. When water molecules form a long chain due to hydrogen bond, it is very unstable and fragile. But as soon as it forms a 3 dimensional structure by closing the open ends, in a shape like a sphere or a cylindrical net, the bond becomes very strong and stable. The structure may even get “**sleeving**” like reinforcements. Hence the body of live-water cells in form of tubular nets is quite stable. They are also quite stiff, because they vibrate at high frequencies.

Q.11 If the memory is carried by living water cells, then what is the effect of a magnetic field on it?

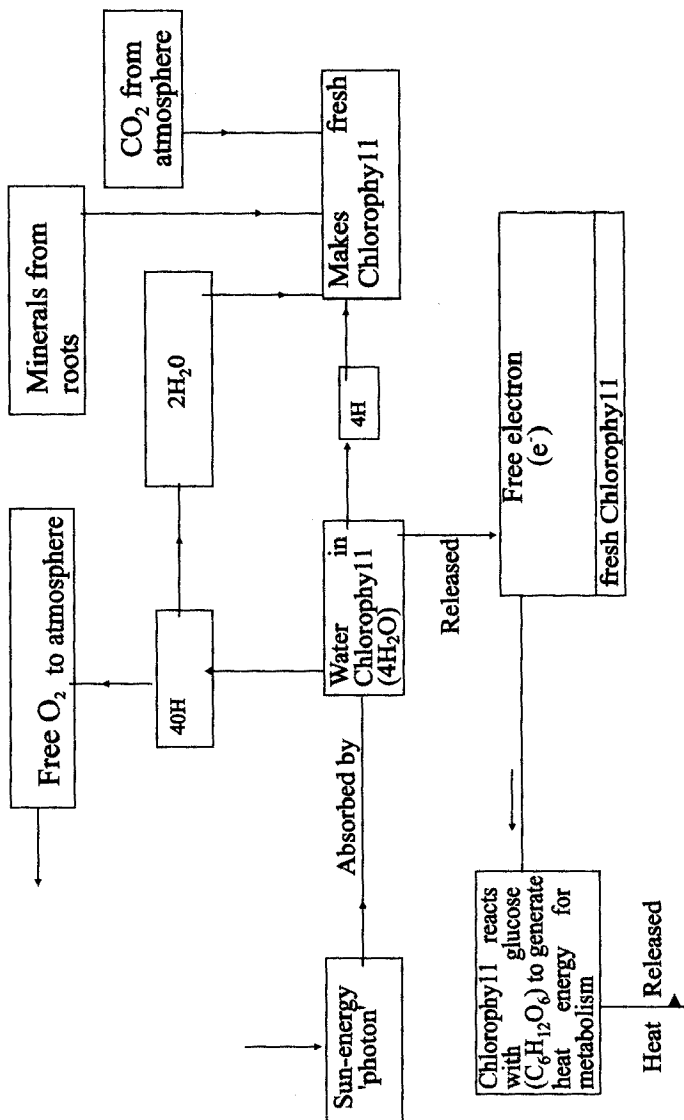
Ans. The hollow structure of water cell exhibits electromagnetic field, capable of generating an em current & emitting photon, while giving a passage to oxygen radicals through it.

In this model, external magnetic fields, therefore may affect its memory, depending on the “**intensity**” and “**duration**” of this field.

However, during condensation and storage process, distilled water will **absorb air**. In fact, we can compare the distilled water with the pure rainwater on distant mountains, where air is not polluted!

Q.15 You have given the criteria of a living thing as “Ability to **absorb energy**, fix it and transfer it in a directed way whenever required.” Apart from water-bodied living beings, can it be applied to one-sensed **vegetative living** beings also?

It absorbs sun energy in form of “**photons**”. Photons excite the outermost electrons of water-molecule to eject it out as free electron in the presence of chlorophyll. Then it utilizes the electron in making fresh chlorophyll. It also reacts with glucose to **release energy** in form of heat as shown below:-



Free Oxygen (O₂) is released by plants. (Even the micro-plants in oceans release heavy amount of O₂, which maintains eco-balance.)

aware of existence of any electro-magnetic fields or **IMV** or Super imposed or sleeved net-like basic structures of distilled water.

Bibliography References:-

1. Edward Wriothesly Rusal "Report on Radionics", Neville Spearman Suffolk 1983
2. Kirlian photography and Brochures prepared in the laboratory of Dr. J M Shah, Mumbai and Dr. Amresh Mehata, Ahmedabad (2005-08)
3. Arun Zaveri etc, "Therapeutic Thinking", p14-16, Geekay Corpn., A-109, Ghat kopar Industrial Estate, LBS Margm Ghatkopar (W), Mumbai-400086
4. Jeoraj Jain, "Second Series of Experiments on Water-Aura", Arhat Vacan Kundkund Jnanapitha,
5. Jeoraj Jain, "Non-living Water and its comparison with living-water", Arhat Vacan, Jul-Sep. 2008, p 91-98, Kundkund Jnanapitha, Indore.
6. Jeoraj Jain, "**Living water-cells** and working principle of Homoeopathy", Arhat Vacan, Jan-Jun 207, p.95-102, Kundkund Jnanapitha, Indore.



In Jaina philosophy, water is considered not only as **one-sensed** water bodied living-being, but it has also been **assigned** certain well spelt out **attributes**. Some of the details of properties are given below.

As per '**Gommatsara**' **Jīva Kanda** (a Canonical book of Digambara Sect), the word **Water** is used in Jaina philosophy to convey following 4 sets of meanings:

Water-beings (Jala Jīva) : Souls in transit. (Which will become water-bodied or which have exited water-bodied living-beings)

Water-bodied life (Jalakayika) : Living water.

1). Yoni

There are 7 lakhs types of birth places, called yonis, where **souls of APKAYA** (Water-bodied) living-beings can enter and develop. Some of the examples of its yonis are : Rainwater, Dew water, Pot-Water, Ocean-Water, Well or Boring-Water, Lake-Water or Fog-Water,

Glaciers, Rivers, Water-falls, Plant-roots, Geysers, Snow, Hail-storms, and Clouds etc.

When it enters into living-water, it gets living yoni and as such may not require any conversion.

Water has 7 lakh types of Families (races), called **Kula-Kodi**. One type of **family**, which is made up of a specific type of **shape** and **taste** particles, is termed as one **Kula**. If any race is made of certain shape and taste particles, which are different from that of the other one, it is treated as another Kula. In this way, different shapes and tastes of particles will form different types of **Kula**.

3) Life-Span:-

bodied lives. That means water can nurture earth, air, plant (all single sensed) as well as two, three, four and five sensed living-beings residing in it. This is in conformity with modern science also.

Contents of normal water and the processes to **remove** them, as given by Jaina science, are scientific and are being recommended by modern science also. See the table given below. Only one thing is to be noted here that the theory of water-bodied living-beings, as given in Jaina canonical books has to be understood properly and then presented to the modern science.

- (i) Water-bodied **living cells** (Jala Kayika) -- By Boiling or by making **Dhovana**
- (ii) Insoluble/soluble **minerals** -- By Filtration plus precipitation and decantation
- (iii) Air and **Oxygen radicals** -- By Boiling
- (iv) 2 or more sensed **mobile** living-beings -- By Filtration and extinguishing them.
- (v) One sensed **Sthavara**-beings, algae etc. - by boiling and or dhovana making.

C) Scientific Explanation of the Basic Properties.:-

The **basic 5 attributes of water dravya** (matter) as per **Jaina philosophy** are :- **Shape (form), Colors, Taste, Smell and Sparsa (Touch Sense).**

They are specified in the Jaina **canonical** literature in the following manner. It is noticed that according to modern science, these properties are mostly functions of its shape, structure and **vibrations** (electrical, electro-magnetic and mechanical).

Each atom (**Parmanu**), as per Jainism, will have one color, one smell, one taste and two primary **sparsas** (Touch senses), viz.,

one from hot and cold (**sitala**), and one from positive and negative (**Ruksa**) touch sense. A **parmānu** has infinite latent energy.

According to science, the first type of sparsa depends on **temperature** and the other type of sparsa depends on **electric charge**. It means one atom (parmanu) has to have temperature and electric charge as its **basic**

property. **Temperature** is considered to be a property, associated with the **vibrations** of atoms and **charge** is considered to be associated with its electro-magnetic (em) **field**. Hence a **parmanu** (atom) may be considered to be a unit “**vibrating charge**”. When they combine together, they form a mixture like **skandha**. It will have 4 **sparsas**. And after **micro-transformation**, it acquires all the 8 **sparsas**, including weight. Water-bodied **Anu** (skandha) will have 8 sparsas.

1) Sansthana (Shape/Form)-

It is just like **Water bubble**. As per modern science it depends on Azimuthal no. **L**, which is a subsidiary quantum no. In normal water, its molecules cannot join together continuously without voids or **microvoids** between joints. Air may be trapped or absorbed in these voids very easily. This air can exert great pressure, when released through bursting of their bubbles. This results in **erosion** of surfaces of containers.

2) Color-

As per Jainism, there are 5 types of basic colors, viz, black, blue, red, yellow and white. Water is said to have **Red** color. Although water body is normally considered to be transparent, i.e. Most of the incident light is refracted. Then the question arises as to why its colour is specified as red? May be its microscopic individual body (as per our hypothesis, it is a net-like tubular nano structure) has the orientation of its hex and penta shaped components in such a way that they reflect red light from its body. Other colors are absorbed/refracted by it. Because of random orientation of microscopic tubular bodies in water mass, the light gets scattered and refracted.

As per modern science, the irregular **surface structure and contours** of a body at micro-level, affect the quality of light, reflected from it. Light is considered to be electro-magnetic waves or moving photons, falling in the visible spectrum. This incident radiation is affected and modified differently by different materials depending on their molecular/crystalline structure, contour and surface finish. It also depends on its capacity to absorb and refract the incident light. The **reflected light**, when reaches the **retina** of eyes, produces **sense of color** of that body, according to its new modified em- property.

Color is also dependent on temperature, because it changes the surface contours of the material. It needs further scientific experimentation.

3) Taste -

As per Science, water has no taste. However, as per Jainism, water is tasteless from gross view point only. Because, at subtle level, it is not without a taste. There are 5 basic tastes viz., Pungent (Tīkhā, **Sauntha**), Bitter (Kadva, **Nīma**), Astringent (Kasailā, **Harde**), Sour and Sweet. The taste is experienced by a process of “**Badha parsva Sparsha**” i.e. a skandha would first touch the sense organ cells and then it would bind itself with it. (Ref. 5)

According to science, these tastes are experienced due to the **chemical reactivity** of particles reaching the **tongue**. It depends on the potential energy (PE) of spinning electrons, which enables those particular molecules to react with corresponding cells on our tongue. Tongue has different types of **clusters** of similar **cells** situated on its surface at different locations. Each cluster produces a different but specific type of taste sense by transmitting the **message** of its reaction with the particles of the substance to the **brain cells**. These brain cells recognize the messages in form of different types of '**tastes**'. Thus there is a striking similarity in the process of recognition between Jaina philosophy and modern science.

As per science, water does not have any taste. However, at microscopic level, water has to have one or combination of many tastes, as per Jain philosophy.

4) Smell -

As per Jainism as well as science, water from a gross view-point, is odorless. But as per Jainism, it is of course, not without a smell at subtle level. There are 2 basic smells - good and bad. As per Jainism, smell is also recognized by the process of **“badhaparsva sparsha”**



According to science, smell-particles (pudgalas) float in the air and reach the inner walls of our nose. These molecules are released by the particular substance in its ambience. Volatile substances may release them very fast, whereas solid and non-volatile substances may release them very slowly.

The diagram consists of two parts. On the left, under the heading "Contour of cell", there are two irregular shapes representing cell contours. Arrows point from the text to each shape. On the right, under the heading "Types of smell particles", there are three numbered shapes: 1 (a T-shape), 2 (a triangle), and 3 (a rounded rectangle). Arrows point from the text to each shape.

5) Sparsa / Physical Touch Sense -

There are 4 pairs of sparsa-senses, as discussed earlier. The first two pairs are more **basic**, i.e. **cold-hot** and **positive-negative** charge pairs. These pairs **produce** another two types of pairs,, viz, **density** related **light** and **heavy** sparsa and **hardness** related **soft** and **hard** type of **sparsa**, as mentioned above.

5.1) Touch sense of Living-Water & its scientific explanation:

 (193) 

Hearing. Further it is said that Living-beings can have 4 to 8 types of Touch senses. Water is bestowed with the property of all the 8 types of touch senses. These are paired in 4 groups of opposites.

(i) **Snigdha/Ruksa** i.e., **Smooth-Rough**. This property may be on a scale of roughness. However, this would suit entities even with 4 touch senses only, because the roughness is a mere surface phenomenon. For gross bodies, this property is mostly considered to be associated with the electric **charge**, with respect to a neutral reference/datum. As such the surface of water body (at unit level) will have either **negative** or **positive** charges, corresponding to Ruksa or Snigdha **sparsa** of Jaina sciences.

(ii) **Sita/Usna** i.e., **Cold-Hot**. This is measured on a scale of **Temperature** with respect to our body temperature as per modern science.

(iii) **Guru/Laghu** i.e., **Light-Heavy**. This is a measure of compactness or **density**, as per modern science

(iv) **Mridu-Kathor**, i.e. **Soft-Hard**. This can be expressed on a scale of **hardness or springing** action at micro-level, as per the understanding of modern science.

5.2) Development of Touch Senses

An inanimate Parmanu (Atom) has only 2 Touch - senses. When 2 or more parmanus come together, they form a pudgala skandha.

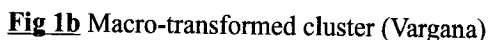
Pudgalas have 2 types of transformations (Parinatis)

Micro and macro transformations:-

These transformations take place, when the value of parmanus in terms of its quantity or density in that cluster reaches a threshold limit. For example, when 2 or more parmanus come together to form a cluster (skandha), a micro-transformation can take place due to its contraction property. Here the space occupied by the cluster is reduced, i.e. the cluster becomes very fine. Its density is increased manifold. It can result in enhancing the touch senses of cluster from 2 to 4-touches. These pudgalas are not visible. They are also weightless (**aguru-laghu**) and cannot be recognized by our senses, even with the help of external instruments. Such examples are pudgalas of **Breathing, Kārmana body, Bhāṣā and Mind** varganās.

In the 15th and 17th vargana the cluster density i.e., the packing of micro-transformed clusters in terms of parmanus per unit space reaches such a critical value (level), that it probably causes '**bonding**' between them. This transformation is called '**Macro-or gross Transformation**' of parmanus. Thus an energy cluster is converted into a particle cluster (skandha), thereby acquiring '**Weight**' phenomenon.

After **macro-transformation, (bonding by contraction)**, these pudgalas become visible and acquire **weight**. With this transformation, the number of sparsas are again augmented. The original or basic 4 sparsas **develop the next 4** secondary sparsas,



(i) **Excess of ruksa-sparsa** in pudgalas results in development of **Laghu-sparsa**. That means **excess** of negative charge, makes the entity **Lighter** (leading to weightlessness)

- (ii) **Excess of snigdha-sparsa** in pudgalas results in development of **Guru-sparsa**. That means **excess** of positive charge would make the entity heavier!
- (iii) With **excess** of **Sîta and snigdha** sparsa in pudgalas, it (the entity) acquires the property of **Mridu** sparsa. That means “colder” pudgalas along with positive charge would make the entity softer / resilient.
- (iv) **Excess of Usna with ruksa** sparsa in pudgalas, would make the entity develop '**Karkasa**' sparsa. That means relative hot *pudgalas* with negative charge would help the entity develop **hard-sparsa**.

This dynamics of combination of **sparsas** offers very interesting background to understand the properties of sub-atomic entities, particularly massless particles like '**neutrinos**' (a Fermion) or '**photon**' (**a Boson**) of modern science. Many specific rules for integration & disintegration of *parmanu-pudgalas* are specified in the Jaina Scriptures.

Sparsa senses, as discussed and understood earlier in the light of modern science, **depend** on the **vibrations** and **electro-magnetic** field of particles (pudgalas). These are related to their **frequency** and **mode of vibrations.**)

In ordinary sense, “**hardness**” is related to solid state of matter only. Then how it is concerned with steam and **water**? Can a gas have hardness? One possible explanation is that when two molecules are joined by an electro-static field, the **flexibility of the joint** is a measure of soft **or hardness**. When we say **Martensite** or diamond is very hard, it simply means that the bond between two molecules of martensite (not between Iron & Carbon), is very **rigid/hard** and **brittle**.

Similar logic can be applied to gases also.

6) Effect of training:

In characterization, the bee-hive structure of living-water gets **sleeving** layers (Ref. 3) like **carbon-onions**, as postulated in the Hypothesis of living-water. As such it becomes very strong. (It cannot be broken up then so easily!) That means characterized yonis (bodies) go on becoming **“harder”** on dynamisation, whereas normal living-water is

“hard” and the **'dead water'** (not having living yoni-structure) is **softer!** This sleeving can either be in physical body or it may be in its characteristic- properties only, without affecting the size of the physical body.

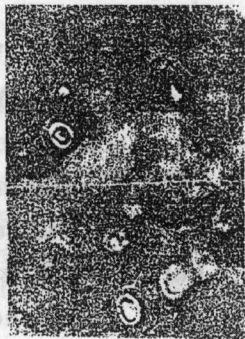
7) Effect of Emotions:-

Living water is found to be affected by our emotions or by music. Dr. Masaru Emoto of Japan has conducted a no. of experiments on water. A few photographs of water, treated with human thought waves or with rhythmic music, **clearly** show its good and bad effects on the structure of gross cells of living water (Fig. 1, Ref. 4).

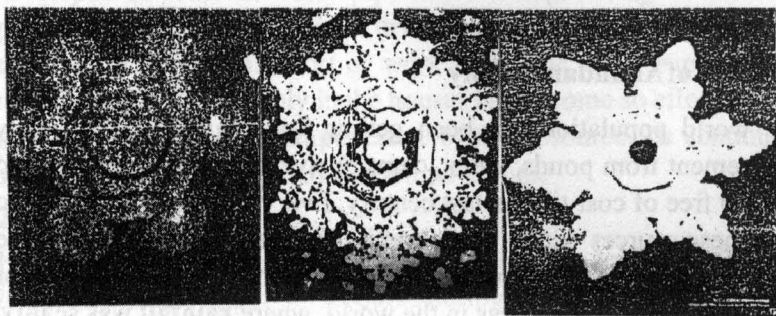
References:

1. Anant Sakti Sampanna Parmanu se Lekar Parmatma, Acarya Sri Kanaknandji, Dharma Darsan Seva Sansthan, Udaipur -1
2. Vargana Vigyan, Narayan Lal Kachhara, Arhat Vacan, Oct-Dec. 2008, p 03-24 Kundkund Jnanapitha, Indore.
3. Living water-cells and working principle of Homoeopathy, Jeoraj Jain, Arhat Vacan, Jan-Jun 2007, p. 95-102, Kundkund Jnanapitha, Indore.
4. Photographs published in “Naya gyanodaya”, Bhartiya Gyanpitha, Delhi, Mar 2004, by P. N. Mishra.





DEAD WATER (NO CRYSTALS)



CRYSTALS OF LIVING WATER

**FIG. 1 : DIFFERENT SHAPES OF WATER CRYSTALS
(DR. MASARU EMOTE)**

Contents:

- ### 1) Notion of Abundant supply

It is one of the basic constituents of environment.

Realizing the importance of water, many **civilizations** and religions had attached great **respect** and care for this commodity. **Wastage** of water was declared to be a great “**Sin**”! It had **social and religious sanctions** against misuse, excess use, over extraction and destruction

The present civilization, all of a sudden, has woken up to the naked truth or reality that this essential commodity has not only become **scarce and depleted**, but is also fast becoming **unfit for human consumption**. The causes can be assigned to reckless deforestation, over extraction of underground water by digging numberless tube wells/deep borings, unplanned consumption of low cost water for industrialization, converting tanks and ponds into garbage yards.

ii) Dooms Day

iii) Water Pollution and its Management:

There are two types of pollutants, Bio-degradable and non-biodegradable pollutants. Bio-degradable can become a problem, when added to the environment faster than it can be decomposed. Non biodegradable pollutants are very difficult or impossible to be removed, once contamination occurs.

It has led to the emergence of wasteful Social habits as well as wasteful Industrial technologies and Irrigation methods. This has pushed the humanity very near to a state of water-emergency

2. To avert this impending crisis, conservation of every drop of water must be done. Every nation must implement the following 6-point strategy for developing a sustainable **Water Security System**:-
 - i) Rain water harvesting & storage
 - ii) Participatory water-shed management, desilting & renovation of ponds & reservoirs
 - iii) River water sharing & its efficient use
 - iv) Waste water management. Treatment & recycling of sewage water & industrial effluents
 - v) Sea water usage along the coast lines, mangrove plantation
 - vi) Use of efficient irrigation techniques.
4. The **MOTTO** is to utilize the resources as per its capacity of “replenishment”, so that perpetual supply can be ensured.
5. Inculcate habits in children (as future responsible citizens) through schools to use water with utmost **care and respect**, similar to that as given by poor people to ghee:-

Water treatment requires consideration of all consequences for the environment; other wise one problem would be transformed in another serious problem.

Environmental damage can be reduced by replacing chemical materials and processes with biological technologies, like

Various methods for decontamination of effluents or to render pollutants harmless are:-

- Cost effectiveness** of a method depends on the quality of effluent

The impending doom due to water pollution can be eliminated, if the above practices are spread and introduced seriously in Industrial and Domestic field conscientiously as a campaign.

People living in water-scarcity or water-stressed areas, like **Thar Desert** area as well as most of the '**Jains**' have developed, as a **tradition**, very efficient habits for using the water. A few examples of **standard practices** are given below:-

- ### v) Awareness Training

Training Programs have been designed for individuals to optimize the use of water for bathing and for washing of clothes and utensils. It dwells more on the use of commonsense, rather than any dogma. It gives insight into the basic principles of Industrial Engineering to

vi) Campaigns

Campaigns in schools and towns have been started to spread this message of seriousness to each and every human being in the world. Many projects at micro-level have been started for **conservation of water**.

The most important aspect of water conservation is the development of right *attitude* towards water.

i) To give due **respect** to this commodity and consider it precious.

ii) **To limit** one's daily requirement and try to reduce it to a bare minimum.

iii) To put conscious efforts to **conserve** it for our children.

$$\left\{ \begin{array}{l} \text{---} \end{array} \right\} \quad (204) \quad \left\{ \begin{array}{l} \text{---} \end{array} \right\}$$

to follow and practice these **principles “religiously”** in our development plans to stop loss of sustainable environment and to **save the humanity**.

The principles to show respect to water are:-

- A) Do not **waste** a single drop of water in house, factory and farm.
- B) Do not **pollute** the discharge -- apply principle of recycling and reuse.
- C) **Review** the requirement, identify the excess consumption and make conscious efforts to eliminate this excess and to limit the consumption to bare minimum.

4) Management of Water Resource

a) Storage

- i) **Forests** conserve rain water and atmospheric moisture. Do not destroy forests recklessly. They attract rains and reduce floods. Forests store a lot of water under the surface of forest cover. Hence introduce perpetual recycling for them.

Implement simple projects to achieve a minimum sustainable growth of 2% in national forest coverage. **Carbon-trading** in International market is a **right step** towards it.

- ii) **Tanks** : Have small-small **tanks, ponds, johads, ashads** and check-dams spread around all the villages/towns to meet their local needs. Resort to full scale rain water-harvesting in buildings.

(It has been discovered that rain **water harvesting** in buildings had been a common phenomenon in **Rajasthan**. There, the availability of rain water was scarce. Mostly , a mere 100-150 mm rain was sufficient to provide year-long supply of water to the householders. Each and every house in the town had an under-ground tank to store the roof-top rain water. This water was used for drinking purpose and was sufficient for a year's demand. Deep boring was not resorted to.)

- iii) **Harvesting** : Now, it must become **mandatory** for every urban building to have water harvesting structure. The roof-water should be discharged in a covered 30'-40' deep well/recharge pits. The pit can be filled with gravel to act as porous filter.

Harvesting of water acts like a **Recurring-Deposit** scheme. Foto 1a & 1b show schematic lay-out diagrams of rain water harvesting for multi-storey building. When roof water is diverted to underground water, it dilutes favorably the salinity of water. It also prevents water-logging in big towns. Such schemes are essential to maintain the water-table. The off-take **potential** of the borings/deep borings would improve, i.e. The borings can thus become permanent and sustainable source of water-supply (Ref1).

Such programs should be **implemented 100%** with all seriousness within a time-period of say 2 years in each and every town. Many people are still not aware about this system or its technical details. Every builder, engineer and construction worker should be trained in the proper construction methods. **NGOs** can provide free training & consultation in this area to give momentum to this activity. Governments and NGOs give subsidy for constructing water harvesting structures. **Research** should be undertaken to **improve its efficiency** and to reduce its cost.

b) Optimum Utilization of water

b1) In Households:

Following **tips** will help the householder **to reduce** his consumption.

- i) Do not resort to washing in flowing-water, wherever possible e.g., washing of utensils, taking bath, brushing teeth or shaving. All these operations can be done either with water stored in a bucket or mug or with intermittent water flow or with a **reduced size of water tap**.
- ii) If one cannot change the normal $\frac{1}{2}$ or $\frac{3}{4}$ " **tap-size** to $\frac{3}{8}$ " tap-size, train the house-members to do the above operations, not with taps fully opened, but with taps just opened **half** or so. A slow moving water jet or/and low pressure jet may require a few seconds more time for doing any of the above noted activities, but will **eliminate** a lot of **wastage** in water consumption. Each and every school should inculcate this habit in the children, by practicing it in schools, and by arranging **competitions** and imparting proper training.

standards, (as set out in Jaina philosophy) for optimizing the consumption of water should be **highlighted** for the benefit of humanity at large. The philosophy and water conservation go hand in hand.

The **practice** of using **boiled** or **dhovana-water** as per Jain prescription needs further independent **studies** through out the world, to **understand** its implication in reforming **human attitudes** and optimizing the consumption of water.

- vi) A new **Standard** for per capita consumption of water for the world community should be **evolved** and achieved.

b2) In Agriculture:-

Low cost retail storage facilities to harvest the rain and river water should be taken up, individually or jointly by all the farmers of every village. Appropriate **farming techniques** must be made popular and attractive for *water stressed* areas. They should have at least **4 cooperatives** per village, representing four directions West, East, North and South (WENS). It should

- I) Construct **Check dams**, Tanks, Johads etc with the help of NGOs.
- Ii) Provide **pipelines** or channels to conserve water,
- Iii) **Train** members in proper use of sprinklers, drip irrigation etc modern techniques for **optimized use** of water. It would improve their efficiency.

b3) In Industry and Town:-

- i) **Water recycling** or waste-water treatment should become a part of water distribution system in the industry. The used water should be cleaned and reused. Loss of water i.e., **top-up** water, in each cycle, should be controlled and monitored properly. Every industry should be encouraged to strive to become **Water-positive**. **Quality** standard for **treated water** should be maintained in terms of each parameter like pH value, oil and grease contents, COD and BOD, solid contents etc. by every industrial unit.
- ii) **Norms** for consumption of water for various industries as well as for every operation should be evolved. It should become

iii) **Tree plantation** and its density norms should be prepared and implemented for Towns and Industry. Ratio of forests and work area or habitats/structures should be prescribed region wise. It should become **statutory requirement** for each town and industry. Awareness should be increased to such a level that it becomes a **normal mind-set** of the public to expect such performance routinely.

In fact, the whole **approach** towards this precious resource has to undergo a sea-change to save environment and humanity from the impending disaster. The world community has, to this end, decided to celebrate, every year a **World Water Day**, to keep the community always aware of the importance of its right attitude towards water.

- I) **Farmers** should go for **self-irrigation schemes**,
- Ii) Communities in Urban as well as **in rural areas** should introduce various ways of **rainwater harvesting**

a) Accessibility and its Cost

The primary need of the world-community is to have an **easy access to safe drinking** water. In **Indian** context, the challenge is to develop **low cost** processes and simple equipments and to make them available to each household in thousands of remote villages to enable them to convert the local water into safe drinking water.

Water of different places might have different types of organic and inorganic contents like Ca and CaCO_3 , MgCO_3 , Zn etc. Similarly **Anions** in form of Chloride, Flouride, Nitrite, Sulphate, Phosphate etc. and **Cations** like Manganese, Copper, Nickel, Magnesium, Calcium, Lead, and Iron etc. may be present in water.

It may also contain **Arsenic**, In full analysis, its acidity, alkalinity, total dissolved solids and total suspended solids will also have to be determined. Many standards have been prepared and are available as guidelines. A Few Agencies are : Bureau of Indian Standards (BIS), WHO Central Public Health Environmental Engineering Organization (CPHEEO) manual, Government of India, United States Environmental Protection Agency (USEPA). They specify limits of permissible contaminations for safe potable water.

Contaminated water may cause many **water-borne diseases** like anaemia, Arsenicosis, Campylobacteriosis etc. Hence proper analysis and treatment of water play a very important role.

Therefore, the treatment process and its **equipment** should be appropriate for the local contaminants to make the water potable. International guidelines and standards are available for the permissible amount of foreign contents in safe drinking water. However, **Testing facilities** for the water are to be made available to the villages on regular intervals.

Foreign contents, as mentioned earlier, if not removed properly can cause many water-related or water borne **diseases** for the users, like diarrhea, hepatitis, fluorosis, cholera, typhoid, jaundis, anaemia, trachoma etc. Hence, it is essential to provide suitable equipment and appropriate technology, particularly to villagers to prevent such hazardous diseases and provide facilities to monitor quality of treated water. For urban population, many types of safe and efficient filters and suitable absorbents are available for treating water. Good quality filters, having pores of about 0.2 micron are available in the market. These filters do not permit the entry of bacteria, fungus etc. **Ceramic Filters** are highly suitable to supply **germ free** water. Also equipments having **reverse Osmosis (RO) filtration** membranes and activated charcoal etc. can ensure supply of potable water. But these are mostly suitable for urban areas. Due to non-availability of electric power in villages, these equipments have to be developed and provided to remote villages to suit their specific conditions.

It is found in the recent times that the surface waters are mostly contaminated. But **ground water** from borings, having depth of several hundred meters with a proper distribution system and having water

withdrawal depth of 30-40 meters is bacteriologically **safe**. However, arsenic, fluorides etc, need to be checked and removed before declaring it potable.

b) Contaminants and their effects

Most of the ancient civilizations had been very much concerned about keeping the water potable. Apart from insects, micro-organisms, many chemicals and minerals can make the water unfit for human-consumption. By introduction of certain carefully designed rituals and customs, the common man was made to **respect water-resources** and to have an attitude of gratitude towards it.

Normally, we consider the water, containing sand and turbidity etc. as dirty and unfit for drinking. However, even if our water looks to be clear and **transparent**, it may contain many other types of pollutants, which may make it **unfit**.

The common, present day, pollutants are discussed below:-

- i) **Fluorides:** If the content is more than 1.5 mg/l, it would cause fluorosis. It causes tooth-decay and skeletal problems.
- ii) **Arsenic:** If the content is more than 10 mg/l, its prolonged use over a period of 15-20 years may cause arsenicosis. It causes change of skin color, skin cancer, disease of blood vessels, reproductive disorders, high blood pressure.
- iii) **Lead:** It affects nervous and reproductive system. Lead in water comes from the lead-pipes carrying water.
- iv) **Iron Deficiency:** It causes anaemia which results in fatigue, weakness, loss of color of skin, lips and eyes etc.
- v) **Hardness:** Caused by some alkaline salts. It causes laxative effect and indigestion etc.
- vi) **Sulphates:** Mostly are of sodium & potassium. It can cause diarrhea in conjunction with bacteria and parasitic organisms.
- vii) **Bacteria:**
 - a) *Vibrio-cholerea* bacteria causes Cholera
 - b) *C. Coli* bacteria and other viral organisms cause Diarrhea, dysentery.
 - c) *Salmonelia typhi* etc. Bacteria cause typhoid.

d) Chlamydia trachomatis causes Trachoma.

viii) Parasitic worms: Cause round worm, hook worm infection.

ix) **Virus:** Hepatitis A & E viruses spread through water. It affects nervous & reproductive system. Causes inflammation of liver, loss of appetite, nausea etc.

x) **pH Value:** This is a measure of alkalinity. It is very important to keep the pH water at a value which favors the growth of bacteria. The recommended value is 6 to 8. pH 8 means alkaline water.

xi) **Oil and Grease:** If these are not removed from the waste water before discharge, it can interfere with biological life below the surface water. It creates layers of floating matter and films of oil.

xii) **Chemical Oxygen Demand:** COD is the quantity of oxygen needed to oxidize chemicals. It is a measure of depletion factor for both waste-water and natural water.

xiii) Biological Oxygen Demand: BOD This is the most widely used parameter of organic pollution of both waste and natural water. It is the quantity of oxygen required by bacteria to oxidize organic matter present in water and is the main factor in deoxygenation. **Heat, organic waste, suspended minerals and toxic chemicals reduce the solubility of oxygen.**

Unpolluted natural waters are generally saturated with oxygen. That is why the measure of dissolved oxygen is one of the main factors in stating the pollution load for any type of water.

Water without oxygen is '**dead**' and may be turbid. Water has natural tendency to reaerate itself. It involves the measurement of dissolved Oxygen used for oxidation of organic matter over a given period.

Potassium chromate ($\text{K}_2\text{Cr}_2\text{O}_7$) is commonly used as oxidizing agent.

c) Treatment of water for Domestic use:-

It is obvious that drinking water should be either made free from above contaminants or should be reduced to permissible safe levels. Water can be completely purified by distillation and deionization. However, many **organisms** and creatures, which may otherwise be **useful** to human-beings, cannot survive in de-ionized and distilled water. The treatment of effluent water is generally done by following method:-

chemicals. These chemicals are also very expensive.

New experiments are underway to split water by using sunlight as plants do. It is observed that some **manganese clusters**, found in green pigment **chlorophyll**, provide plants the ability to absorb photons from sunlight for splitting of water and forming carbohydrates with the help of carbon dioxide. But instead of creating carbohydrates, researchers have used **nature's recipe** to split water into its two elements. (Ref. 2)

Researchers have used an electrode, coated with proton conductor. The conductor is impregnated with a form of manganese-manganese clusters, known as **Cubans**. Since this manganese complex is not soluble in water, researchers have overcome this problem by coating one electrode with a special membrane called Nafion. Housed within the aqueous channels of membrane, the catalytic species is stabilized and has good access to the water molecules. Tests have shown that catalyst assembly remains active for longer period, producing hydrogen and oxygen gas with the help of sunlight and 1.2 volts of electricity. This method may revolutionize the dependence of the mankind on fossil fuels.

Reference:

1. Rain Water Harvesting in Urban Areas, Akash Ganga Trust, Rain Centre, no. 4, 3rd Trust Link Street, Mandavelipakkam, Chennai 28, www.raincentre.org
2. Invention Intelligence, Sep-Oct 2008 p 27, N. Delhi



AWARENESS
DID YOU KNOW ?











WATER IS LIFE



THERE IS LIFE IN WATER ALSO

"Leakage of ONE DROP per second would waste 17lit of water per day"

Quantity of water consumed in different methods

General Method	Improved Method	Resultant Savings
Bathing Under Shower  180 lit	Bathing with Bucket  15 lit	165 lit
Using Normal flush in Toilet  13 lit	Using small bucket/cistern  4 lit	9 lit
Shaving in running water  11 lit	Shaving with water in a Mug  10 lit	
Brushing teeth with Tap opened  33 lit	Brushing with Water From A mug  1 lit	32 lit
Washing cloth under flowing water  166 lit	Washing cloth with water bucket  18 lit	148 lit

THINK - CONSERVE EVERY DROP OF WATER

FOTO:B

8) Guiding Principle

- i) The solid **skin** of planet Earth is only **65 km** thick. 70% of its surface is covered with water. Statistically, **97.5%** of world water is saline (stored in oceans and seas) and is unfit for human consumption. Out of the balance 2.5% water, 1.7% is in form of polar-ice. The rest **0.8% only** is available in form of lakes, rivers, glaciers, ponds, underground sources, in bodies of plants, vegetation and animal world.
- ii) It is estimated that the present world population of over 6 billion utilizes around **54%** of total **useable water**, which would increase to 70% by 2025. Out of total consumption of water, 69% is used by agriculture, 23% by industry and 8% by households. In different regions, the per capita consumption of water differs widely.

- iii) However, **pollution** of water is identified as a **critical threat**. The industry discharges around 500 million tons of waste materials per year in the water sources. Waste water has increased from 7000 mld (78-79) to 16,600 mld in 94-95, in cities having population of 1 lakh and above. However, sewage treatment capacity has not kept pace with it. These wastes must be treated and removed before discharging into the water sources. Some other industrial wastes are creating green house effect on earth. It is not only warming up the earth but is already resulting in increase in ocean levels.

These **climatic changes** will bring about water scarcity for the human population. Presently earth's surface temperature is increasing @ 3.2° F/ century. Scientists have estimated that due to present rate of global warming, the sea level will rise by 50 cm as a result of melting of polar ice. This would be sufficient to submerge many coastal countries. Similarly, the mountain glaciers are contracting at alarming rate, reducing thereby the flow of rivers. At the current rate of **glacier retreat** in Himalayas, all glaciers in central and western sectors would be lost by 2035! This may cause floods as well as water crisis thereafter. Shrinking glaciers and melting sea ice are sensitive indicators of climate changes like heat waves and intense storms. This impending water scarcity may pose a great threat to world peace. Water has already become a commodity of **military importance** for middle-east countries. Even in India, water conflicts have already become contentious between different states.

- iv) In the mad rush for industrialization, the **old practices** of rain water harvesting through innumerable ponds, johads, pits and rivulets and the practice of their regular **desilting** have become extinct. On the other hand, water **extraction** from under ground resources has been increasing by leaps and bounds. This has lead to the falling of water table at a very fast rate. In fact, excessive pumping of natural underground water reservoirs is causing land to sink in various parts of the world.
- v) The lack of seriousness and failure to take bold steps to assign

priority in allocation of funds for restoration of proper balance in natural water-cycle, on the part of National Governments and NGO's is driving the world community to desperation. It must be understood well by every Government and Society that any **negligence** towards water-cycle and misuse of it by human-beings is an unpardonable **crime** towards future generations.

2) Water-Cycle & Eco-Balance:-

Water is closely linked with our **life, environment, culture, civilization, and development**. To understand it properly, the long-term impact of various structures like dams and other man-made changes in water topology was studied. As a result the water cycle and the importance of its various components have now become clearer to the world community. **Water-cycle** consists of

- i) Surface **evaporation** of water from resources like oceans, lakes, rivers, plant leaves and glaciers etc.
- ii) **Transportation** of this water vapor, to various levels of clouds, condensation of clouds, its interaction with atmospheric air and drafts,
- iii) **Retention** of rain water and snow by surface structures like forests, dams, lakes, glaciers, snow covered mountains and land-locked rivers on the earth. Forests hold a lot of water below the surface of forests.
- iv) **Consumption** by the living-beings on earth surface like animals & plant etc.
- v) **Seepage** of water into underground water-resources, flow of water through rivers, underground flow channels etc. back to oceans and lakes.

3) Corrective measures to restore proper water-cycle & Eco-balance:

In view of such critical importance, any negligence or misuse of water by human beings is really an unpardonable crime.

The **first** controlling parameter is the **replenishment** of underground water resources for storage, because it ensures that the over ground human habitats remain rich in low depth underground water resources, especially for potable water.

The **second** controlling factor is the **attitude** of human population to respect water. That means an attitude

- i) To consider wastage of a single drop of water as **criminal or sin, (Foto B)**
- ii) To consider purification of water polluted by him as his **moral/ethical** responsibility, i.e. Adoption of **recycling and reuse** technology for water. This should result in **sustainable** water-cycle with self-healing and self-regulating attributes.
- iii) To train people in **optimizing the consumption** of water in his every operation. This would ensure proper balance and availability of potable water to every poor person at affordable price throughout the world.

4) Water Content of Human-body for Maintenance of its Life-line

i) In different Age-Groups:

The water-content of human body changes with its age. As a child grows, its water-content starts going down.

- (a) Highest content is in “egg”, shortly after insemination- up to 90%
- (b) An embryo contains up to 85%
- (c) In infants it is 75-80%
- (d) Up to 40 years of age, it is 60-70%
- (e) >40 years it reduces to 50-55%
- (f) In old age, skin of hands, neck loses elasticity and becomes creased.
- (g) If water content of the cells, which should be 70-80%, slips below 50%, the vital processes become **paralyzed**; toxic wastes can no longer be excreted.

ii) Important functions performed by water in body.

- (a) Regulating water level & osmotic pressure.
- (b) Helping to regulate the energy supply & demand.
- (c) Transporting energy (Water is highly sensitive reservoir for em-fields)
- (d) Carrying Information (Water puts all parts of human organism in continuous contact with one another) through neurons

iv) Towns:

Prince Philip, when paused a question, “Is it not the biggest misuse of water to remove ½ **pint** of dirt by flushing it with **2 gallons** of water?” he activated the awareness portfolio of sensible humanity! This awareness has to take deep roots throughout the world. Year 2007 was the year of awakening. A flurry of activities and mass media campaigns were undertaken. However for its sustainability and momentum, a proactive leadership at village level has to be identified and promoted.

These calamities in form of **floods and dry-spells**, have recently been

doubling every five years. Lakhs of people vanish and are rendered homeless. Property worth crores of rupees is destroyed due to floods or dry-spells. It is a well-known fact that **deforestation** and drying of ponds and lakes due to pollution have been enhancing the process of flooding. **Floods** are becoming **more devastating**, as experienced in Bihar and China. **Flood control** Departments have to become more effective and pro-active.

The whole system for the management of this precious but cheap commodity has to be scientifically evolved and implemented to match Indian conditions. Community driven **decentralized** management of water and its **forests** suits India better. Water is to be considered as a **joint property** of the society. Every drop of water is precious. It has to be utilized efficiently and **prevented** from going **waste**. The attitude towards, water has to undergo a sea change. Children have to imbibe the habits of respect and conservation towards water as is highlighted in our holy books like **Vaidas** etc.

- (i) **Availability** of water per capita per annum is less than 2000 cu. meter.
- (ii) If **population** in 2050 grows to 160 crore, the availability will decrease to **1000 cu. m/year/person**. The pattern of consumption would be as follows:

	Surface Water	Underground Water	Total
Agriculture	463	344	807
Household	65	46	111
Industry	57	24	81
Energy	56	14	70
Others	91	---	91
Total	732	428	1,160

need of the hour is to become sensitive and serious to assign **top-priority** to implement programs to arouse **awareness** about the disciplined handling and use of water at individual / **community level**.

- (v) Parameters of **GREED** of nations to be evolved and specified, so that they can distinguish their relative **needs** and take moral responsibility to remain “**environment-positive**”. National Governments should start acknowledging the global perspective and place economy second to environment. This will be a challenging task for the present world community.
- (vi) Develop environmentally sustainable **life-style** with optimum consumption inputs as per local area needs. It should be implemented with a spirit of continuously seeking better and efficient solutions, called “**KEIZEN**”.

8) The guiding principles should be:-

- (a) Knowing the reality is one thing, but living the reality is every thing. This requires **introspection** and involvement, on the part of every citizen of a nation, to **co-exist** with the laws of nature.
- (b) **Refrain** from conspicuous consumption. Use the **capital resources** carefully with an attitude to **save** it for others. **Renewable** resources or income-resources should be used in such a manner that does not contribute to any **crisis** for development of **others**.
- (c) Parameters of human **needs** to be evolved with a broader global consensus, so that human race does not fall into the easy trap of Greed.

Pre-requisite for this progressive outlook of equanimity & self-discipline entails:-

- (i) **Creating environmental awareness,**
- (ii) **Non-violent approach to life (Ref 1)**
- (iii) **Conscious concern for all life, respect for all fellow-beings and matter.**
- (iv) **Practical and eco-friendly culture of mutual co-existence (mutualism)**

- (v) Distinguishing between human **needs and greeds**.
- (vi) Understanding **3 vratas** - Ahimsā, Aparigraha and Anekant and practicing them at individual level to avoid universal environmental crisis (Ref2)

Unless each and every one fully understands the importance of **intelligent use** of water, we cannot **implement** appropriate **methods and techniques** for storage, recycling, conservation and efficient utilization.

Reference:-

1. **Abimsā'** Surendra Bothara, Prakrit Bharati Academy, Jaipur, 2004, (p122-162)
2. **Environmental Awareness in Jainism**, Dr. Geetha Ramanujam, Dept. Of Jainology, University of Madras, Chennai, 2006



Properties of Water (Physical, Chemical & Subtle)

CONTENTS:-

- 1) **Water Molecule**
- 2) **Effect of Heat on Water**
- 3) **Boiling of Water**
- 4) **Evaporation of Water**
- 5) **Freezing of Water**
- 6) **At Human body Temperature**
- 7) **Air in Water**
- 8) **Mineral Contents (Prithvikaay)**
- 9) **Mobile living-beings in Water (Plant-Life)**
- 10) **Effect of Vibrations**
- 11) **Transparency of Water**
- 12) **Surface tension**
- 13) **Potential Energy**
- 14) **Ocean currents**
- 15) **Grander water**
- 16) **Magnetic Treatment**
- 17) **Rock cutting by water**
- 18) **Clouds and Lightening**
- 19) **Snow fall and Rain**
- 20) **Varieties of Water**
- 21) **Energy of living water-cells**
- 22) **Bio-Photons**

Seemingly simple looking water has very special properties. It has interesting physical, chemical and molecular characteristics. In order to develop and devise appropriate methods for its intelligent use, one has to understand these properties in detail.

consists of only 2 molecules of water at the most. When water is heated, the **Brownian motion** of molecules also increases. This enhanced motion causes the **hydrogen bond** of normal water to **tear apart**.

3) Boiling of water

Water boils at 100°C and changes to steam by absorbing latent heat of 100 calories per gm. The freezing latent heat is 32 cal. On evaporation, water expands 530 times. It means volume of 1cc of water would become 530cc of vapor.

Vapor at higher temperature and pressure is called steam. It can store heat energy. At its critical temperature and pressure, water gets directly converted into superheated steam. Here it loses its “**inter-phase**” state and as such does not require any latent heat for converting it into steam phase. Heat energy stored in steam can be utilized to **drive** steam engines **or turbines**.

4) Evaporation of water

In open water-storages, water evaporates from its surface in form of vapor. Rate of evaporation depends on surface area, temp.-difference, and wind velocity etc. Water, it is known, is made up of tiny water molecules. A table spoon of water contains about a trillion of them. Addition of heat makes the molecules move faster. They bump into each other with greater force. When **sun heats** up the oceans surface, fast moving molecules hit each other hard enough to fly into the air. This is called **water vapor**. The size of water molecule is very small. About 10 millions of them can be lined up in one mm length.

Water molecules on or near the surface should have sufficient Kinetic Energy to overcome liquid phase intermolecular forces. The K.E. is proportional to the temperature of the water.

When the faster moving molecules escape, the remaining mols will have lower average K.E., and the temperature of water would thus decrease. This phenomenon of evaporative sweat cooling is responsible for cooling of water in earthen pots or cool feeling after sweating. Three key parts in evaporation are Heat, Humidity and Air movement.

Stronger the inter-molecular forces keeping the mols together's are

in the liquid state, the more energy that must be put-in order to evaporate them.

When the water vapor condenses to liquid or solid phase, it releases its latent heat as sensible heat on to the surface. This is the reason why steam is far more effective in heating than boiling water. Latent heat is also called enthalpy of transformation.

Latent heat of fusion = 334 J/g, and Latend heat of vapour = 2262J/g at 100^o C

Molar heat of vaporization for water is 40.7kJ/mol.

As the air rises, it gets colder. These molecules move more slowly and pull closer together. This condenses and forms clouds. When the droplets of water are too heavy to stay in the cloud, they fall **down as rain** or snow.

5) Freezing of water

Water has a density of 1 gm per cc at 20° C. It varies with temperature. It starts freezing at 4° C but exhibits a peculiar behavior between 4° C and 0° C due to change in lattice structure of its molecules. It expands and becomes lighter on freezing at 0° C. That is why, ice floats on water.

(Iceberg remains $9/10^{\text{th}}$ submerged below the water surface). As the water mass cools, it contracts. Its highest density is reached at 3.98°C . Then it starts **expanding** in volume. Its surface becomes cooler. But due to expansion, it remains lighter and does not move towards bottom. The bottom water remains heavier and hotter than the surface water. As such, water starts **freezing at the top**. This is a **wonderful quality** bestowed by the nature, because below the frozen surface, liquid water continues to support aqua-life in the oceans. Had it behaved like other liquids, all the sea creatures would have been frozen and perished in the cold regions. But due to this special property of water, **life survives** in the Arctic and Antarctic regions also, beneath the frozen ocean surfaces.

6) At Human body Temperature (37.5° C)

I) Specific Heat:

Water has very high specific heat. However, at 37.5°C , water has **minimum** specific heat. At this temperature the specific structure of

water is such that it can acquire optimum information. But as the temperature is raised, it starts losing information. Distillation of water brings about total destruction of its net like structure and **erasure** of stored information. The highly diluted solutions at normal temperatures, as in homeopathy, have **greater uniformity** in its structure.

ii). Conductivity:

Water is a poor conductor of heat compared to most other materials. This poor conductivity protects the main portion of the water bodies from being frozen or over heated by the sun and from killing its living organisms.

iii). Capillary Force:

Water has the ability to pass through cell membranes and climb great heights in plants and trees through Osmosis and Capillary force. The mystery of osmosis enables plants to take and absorb appropriate minerals through roots and push them up by capillary force. Similarly, osmosis helps marine creatures absorb fresh water in an essentially salt-water environment.

iv). Dipole moment of water (1.87×10^{-18} e.s.u)

The angle between two hydrogen atoms in a water molecule is 105° . If this were different, there would have been no complex life-giving molecules and no life on earth.

v). Dielectric constant

Water has extremely high dielectric constant of 81 as compared to 25 of ethyl alcohol. This peculiarity of high dielectric constant makes water almost a universal solvent. This high solubility permits water to transport minerals and waste products to the necessary parts of the bodies of all living-beings.

vi). **Human Brain:**

The brain is nearly 85% water. The brain is floating in a pool of water. And this position of brain is precisely responsible for the thinking capacity of the brain.

7) Air in Water

Water is a dipolar molecule. It can absorb air when exposed to it. The

8) Effect of Vibrations:

9) Transparency of Water:

Light energy is made up of electro-magnetic radiations. These are emitted as packets of **photons**, which act like waves. The energy of photon is related to its wavelength. Every material consists of minute particles like molecules, atoms and electrons. The **electrons** in a material exist at a certain energy level. It can be **excited by 'photons'** to a higher energy state. This can happen only if the energy of the photon is exactly the same as the energy required to raise the electron from one energy state to another. If this occurs, photons of this wavelength are absorbed. Due to absorption or reflection of photons the material becomes **opaque to light**.

However, molecules in water are arranged in an irregular or **amorphous** pattern, which make it glassy. Incident photons on it are

either transmitted in their original direction or are **deflected** by some change in its direction (**refraction**). Thus light passing through water retains the original photon-energy. Hence it is **transparent**.

10) Surface tension:-

Water surface, in contact with air exhibits tension, called surface tension. Under its influence, the surface of water tends to contract, until it occupies the **minimum area**, consistent with its fixed boundaries. It takes the shape of a sphere, because sphere represents the smallest area for a given volume of liquid. Due to the influence of surface tension, drops of water always tend to take the shape of a **sphere**.

Surface tension exists at the interface of water and air, as well as also at the interface of water and its container wall. The value of surface tension of water adjoining ambient air is **7.28 dyn/cm at 20° C**. It **decreases with the increase of temperature**. Water bubbles have double walled layers of surfaces with liquid water filled into it.

11) Potential Energy

We know that water flows from a **higher altitude** to a lower level. This property is responsible for the flow of rivers from water-sources at an altitude to the oceans or seas. These rivers may be flowing on the earth surface or may be flowing under the ground. The potential energy of water at an altitude is **converted into kinetic energy** of its flow.

This conversion is either wasted in flow energy or can be used in **moving turbines** to generate power.

12) Ocean currents:

Another important property of water is that it **expands**, and becomes lighter on **heating**. This property is responsible for creating Ocean Rivers, called ocean-currents. In a sense they are similar to surface rivers. There are two types of currents - hot water and cold water currents. They are generated by differential heating of ocean water at different locations by the sun. As the surface **near equator** becomes **warmer** due to the sun, it starts moving northward or southward, causing convection currents in the water mass, just like the water being heated in a pot on a burner. This induces oceanic currents. If near a continent, it is **moving northward** in northern hemisphere, a southward **counter current** will follow on the opposite side of the land

mass. Here the **potential energy** is generated due to **differential** absorption of **sun heat**. Similar logic also holds good for the perpetual oceanic water currents in southern hemisphere. **Cold Gulf Stream** flows southward from New York to Mexico up to equator and then up to African coast. From here it takes Northward turn as **warm current**. It flows along the coastlines of England as warm current. Similarly, there are other currents along the coast lines of other continents.

13) Grander water:

It is a plain drinking water, probably **treated with high frequency vibrations** and energy of previously prepared **hf Grander Water**. There are Grander devices (by Johann Grander) available in the market to treat the normal running tap water. It is claimed that when flowing water in a Grander device is Subjected to high frequency vibrations (say 1 lakh Hz), under a magnetic field, it receives certain information in its **“body-structure”** (Ref 2). This device contains chambers, which are filled with high frequency grander-water. Information is transferred from the grander water of the device to the tap water flowing through it. Possibly, the tap water is put through a **spiraling motion** in form of involutic turbulence (Foto 1a) under the em. - field in the device. This makes it possible for the tap water to **absorb** the high frequency oscillations of pre-energized Grander Water. The stale tap water is thus **revitalized**.

The original information of the flowing water is erased from its body and **new information** is **marked** on it by the Grander water. This treatment changes the **micro-biology** of the water. The **quantum vacancy** in the net-like structure is squeezed out. It is also claimed that **Grander water** thus prepared is

- (i) Not a **medicine**
- (ii) Absolutely **safe** to consume

The Grander water devices or the revitalization devices are claimed to use **clean** technology and are environmental friendly (Foto 1b).

Natural water has an **inner surface**, which is formed by the outer surfaces of the spaces filled with air/gases distributed in water. As water absorbs air or gas in its finely distributed spaces, it increases thereby

its inner surface. **It looks possible that each of the water nano-tubes is separated by inter cell air particles.** It increases its capability like metabolism etc. Energy-enriched water is called “**levitated**” water. This water is produced & marketed since 1987. It detoxifies the tissues and bodies.

Grander water is considered as **Enlivened water**. It is claimed that its properties embrace spiritual/mental aspects, **beyond the regime of matter in time and space**. (see Emoto's experiments).

Water kept in blue glass bottles, when exposed to sun light for longer periods, is reported to have acquired the properties of vitalized water. It may not change its character with respect to Life.

14) Magnetic Treatment:-

Prolonged application of strong magnetic field on water-pipelines or blood-veins can also have an **Activating effect**. Experiments have proved that if **magnetic bands** are **strapped** on to the water pipelines at suitable locations, **it prevents scale formation** as well as removes existing hard crusts and Scales on inside of pipe lines up to a given distance. This is generally more useful in process industries. Similarly wrist-bands with tiny **mono-magnets** can be **useful in removing congestions/blockage** in blood veins (Ref 3).

15) Mineral Contents

Quality and properties of natural water depend on its contents. There are many types of minerals, metals, mica, organic or inorganic materials which are found in various proportions as dissolved contents in water. Some of these **minerals** make water **good** for health, but others may render the water **unfit** for consumption. Water from sources like waterfalls, rivers, wells or geysers, underground tube wells etc., displays different types of properties due to these solvents. Some work as **medicines** and some make it **poisonous**. Hence water from each source has to be **tested** before it is consumed. Or people around these sources might have **experienced**, over a long period, the properties and its effect on the human body, mind and **digestive** system. (Ref. 4)

16) Mobile living-beings in Water:

As water supports life, there are a variety of mobile creatures residing in water, ranging from giant **whales** to microscopic **algae** or water borne

$a_1, a_2, \dots, a_n (a_{540}),$

a_{n+1}, \dots, a_{n+n}

b_1

b_2

(a_1 =Water molecule no. 1, and b_1 = cluster no. 1, which may further contain $540/18=30$ net-like Yonis in form of nano tubes)

540 molecules of vapor join together to form a giant-liquid molecule (b_1, b_2), called clusters of 540 molecules, mostly in linear horizontal plane. (due to Hydrogen bonding)

$$b_1 = (a_1 + a_2 + \dots + a_{540}), \quad b_2 = (a_{541} + a_{542} + \dots + a_{1080})$$

(iii) Latent heat of cooling :

In super cooled state (in ice form), its latent heat is also removed

- (i) If it is not super cooled, then b_1, b_2 etc. just join together and form a droplet of liquid water under the influence of its surface tension.
- (ii) If they are super cooled, these clusters are attracted towards each other due to its surface energy field and the growth of its unit structure takes place in form of **hexa** or **penta** structures of **snow flakes**. (Fig 1, page 197).

20) Varieties of Water

There are many varieties of natural water e.g., dew, snow etc. just like many types of earth having geological elements like sand, iron, coal, copper, mica etc.

Modern science specifies pure water, **heavy water**, saline water, hard water, **levitated** water and sulphur water etc. **Pure water** means water free from any external contaminants.

21) Energy of living water-cells:-

Energy of water consists of at least 4 components:-

(i) Kinetic Energy:-

This is the energy of molecules of water moving from one place to another. This is transitional energy. This helps in triggering chemical reaction. This is altered simply by collision between molecules. It is very low energy.

(ii) Rotational Energy:-

This is the energy of spinning/rotation of molecules. This is also a

(iii) Vibratory Energy:-

(iv) Electron Energy:-

22) Bio-Photons

The living cells emit feeble light, called **Bio-photons**. They indicate the existence of **electro-magnetic** field in the **cells**, which can absorb and

Our cells are capable of utilizing the solar energy very efficiently. This happens only because the energy field of cells has a property of coherence. Due to this property the efficiency of cells, i.e., to receive, transmit and exchange energy becomes even 100%. The bio-photons have been found to be **coherent**, which make the bio-cells super conductors. Bio-photons and coherent em-signals are emitted by the coherent **electro-magnetic**-field of bio-cells. Emission of bio-photons by living beings has a quantitative range from a few no. of photons/cell/day to a few hundreds /cell/sec.

(i) **Bio-electric energy** is due to bio-photons. This is an em field, which flows at the speed of light.

In conclusion it may be said that

The electrons present in an atom also receive and emit photons.

Bio-light is of different nature than the solar light. Because of coherence property, bio-light behaves like laser rays. That makes the

Ravindra Nagar, Udaipur - 313003

- 5b) Karma Sidhanta, Ed. Dr. N.L. Kachhara, Sukshma Sharira ki Vyavastha, p.20-37
- 6) Photographs published in “Naya Gyanodaya”, Bhartiya Gnanpith, DELHI, Mar. 2004 by Prabhunarayan Mishra.
- 7) Fluid Thoughts- Water, Dr. Vinod Shah, Chembond, Centre Mumbai, Dec.2010

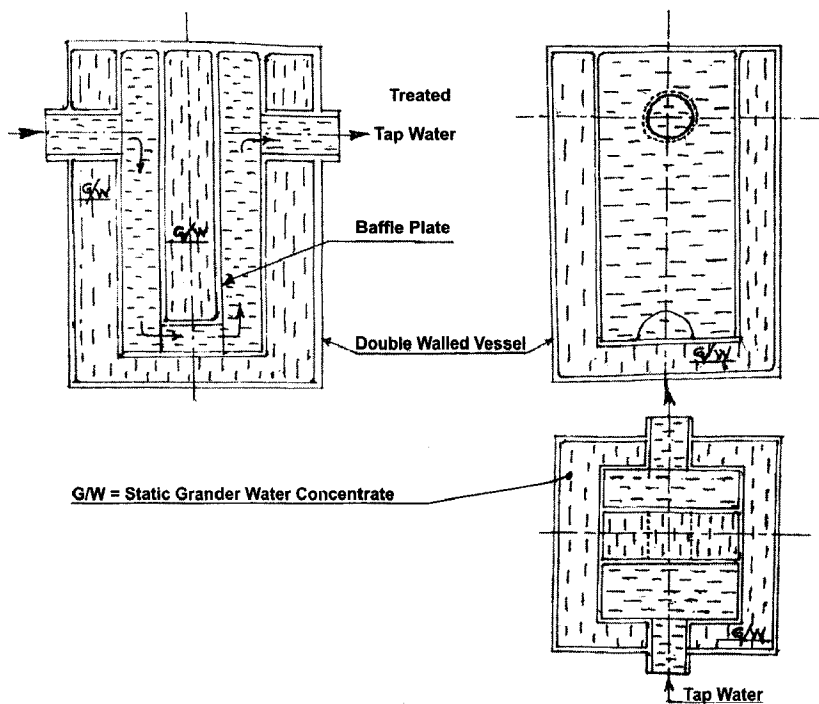


Fig 1a : Schematic Device for Water-Revitalization

ENERGIZED TAP WATER

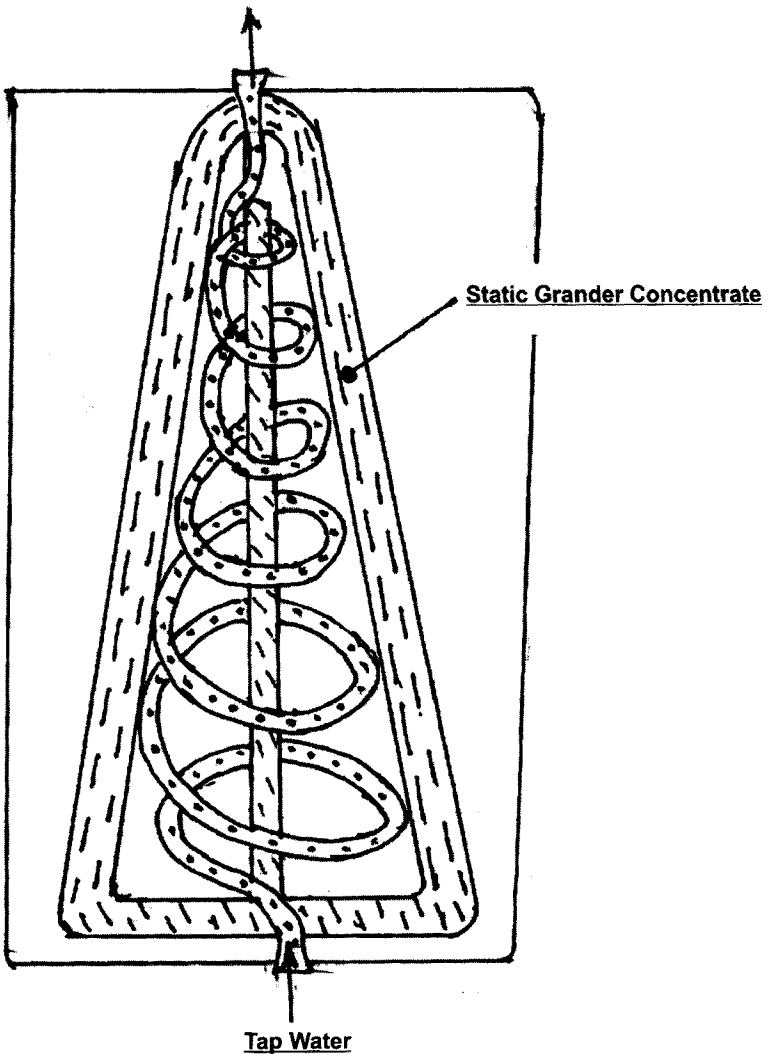
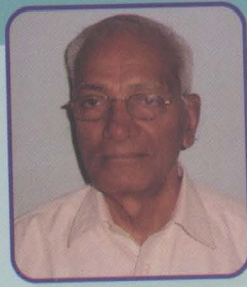


Fig 1b Inductive Method to Generate Involutes
Turbulence for Water Revitalization



About the Author

Dr. Jeoraj Jain, born in 1938, is a Gold-Medalist of Rajasthan University. He post-graduated from Germany and obtained the degree of *Doctor of Engineering* ("Dr. - Ing.") from there in 1968 for his research work in Welding Engineering.

After working with Tata Motors Ltd. for 21 years, he worked as Technical and Investment Consultant for 12 years. Thereafter he plunged into the Research work in Jaina Physical Sciences (Dravyanuyog), encompassing multi-disciplinary modern sciences in 2002 as his sole mission.

His initial studies pertained to one-sensed *Tejaskayik* (Fiery-bodied) living-beings. Thereafter he took up theoretical as well as experimental research work on single-sensed *Apkayik* (water-Bodied) living-beings and propounded a "Theory of Life without DNA and RNA". A number of Research papers/ Articles have since been published.



प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
Samyaggyan Pracharak Mandal